स्वच्छ भारत

स्वच्छ भारत की ओर बढ़ते कदम

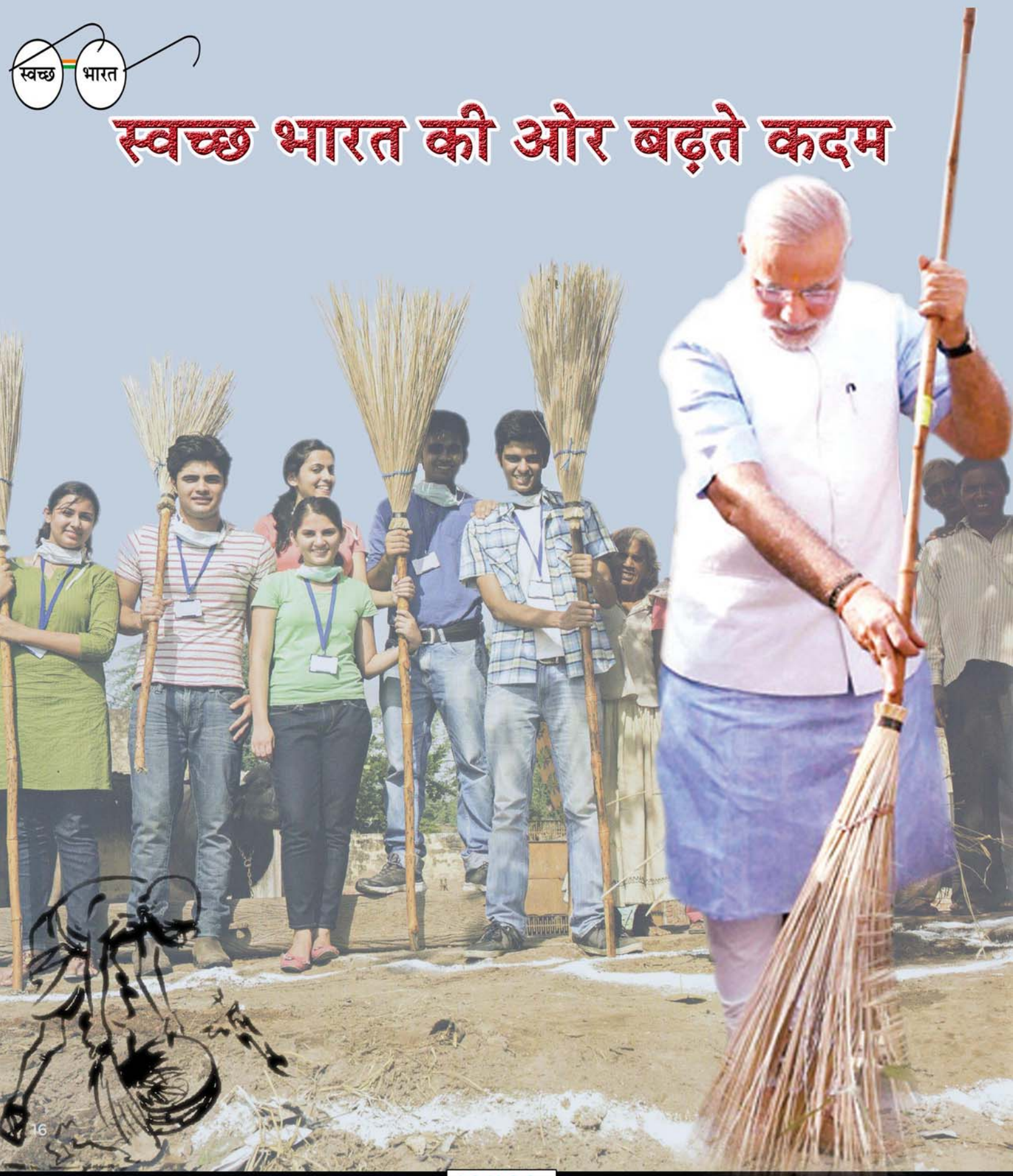

SPMRF

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

स्वच्छ भारत की ओर बढ़ते कदम

संकलनकर्ता

शिवानन्द द्विवेदी

सहयोग

शैलेन्द्र शुक्ल

Cover Design & Layout

Vikas Saini

डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी

रिसर्च फाउंडेशन

अनुक्रमणिका

क्र.सं	लेख	पेज न.
01	प्राक्कथन	5
02	गांधीजी और स्वच्छता **– सुदर्शन अयंगर**	7
03	स्वच्छता अभियान के प्रारंभ पर राजपथ से प्रधानमंत्री का भाषण	12
04	स्वामी विवेकानंदः– प्राच्य और पाश्चात्य	19
05	ग्रामीणों ने गढ़ी सामाजिक सफलता की मिसाल	21
06	जानिये क्या है स्वच्छ भारत का मोदी मिशन?	23
07	पहला चैलेन्ज खुद माननीय प्रधानमंत्री ने लिया	26
08	प्रधानमंत्री ने पेश किया उदाहरण	27
09	स्वच्छता अभियान से स्वच्छता आन्दोलन तक	28
10	मन की बात को मिला जनता का साथ	29
11	स्वच्छ भारत से शौचालय बनाने के संकल्प तक.....	34
12	इन गांवों में पूरा हुआ गाँधी के सपनों का संकल्प	38
13	स्वच्छता को लेकर लोगों में आई है जागरूकता **– आदर्श तिवारी**	41
14	कचरा सिर्फ सड़क पर नहीं होता **– न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी**	43
15	स्वच्छ भारत अभियान **– शैलेन्द्र शुक्ल**	46
16	स्वच्छता की ओर एक कदम : समृद्धि की ओर बढ़ते कदम **– शिशिर सिन्हा**	48
17	सशक्त अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी स्वच्छता **– ऋषभ कृष्ण सक्सेना**	54
18	महात्मा का सपना, मोदी का मिशन – आइए, हम सभी स्वच्छ भारत बनाएं **– अरुण तिवारी**	59

19	स्वच्छ भारत अभियान की प्रासंगिकता **– सुशील कुमार सिंह**	63
20	स्वच्छ भारत अभियान की चुनौती **– डॉ. उदित राज**	66
21	Famous Speeches and articles Of Gandhiji on cleanness	68
22	Mere Sapno ka Bharat	69
23	Here are the highlights of Modi's speech: On Clean India	74
24	Annual Target Under Swachh Bharat mission	76
25	Swachchha Bharat Mission: Public Service Level Status Report	77
26	State-wise Budget Allotment	78
27	State-wise status implementation of various component under Swachh Bharat Mission upto Feb-2016	79
28	I Did Not Think a Swachh Bharat Was Possible. Some Tweets Changed My Mind **– Jayant Niranjan Mundhra**	80
29	Shri Narendra Modi On Twitter	82

प्राक्कथन

गांधी का एक सपना था कि अपना भारत स्वच्छ हो। गांधी इस सपने को एक आन्दोलन के नजरिये से देखते थे। उनका मानना था कि सफाई का कार्य जनांदोलन की तरह चलना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य कहेंगे कि गांधी के सपनों समझने में देश ने सत्तर साल लगा दिए। सत्तर साल की बात कहने का आशय यह है कि हमने सफाई को कभी जनांदोलन के नजरिये से देखा ही नही और इसे एक बेहद तुच्छ और छोटे काम के रूप में देखा। सफाई हमारे समाज की मानसिकता में छोटे लोगों का काम बनकर रही गयी। धीरे-धीरे यह मानसिकता बढती गयी और गांधी का सपना दम तोड़ता गया। वैसे तो गांधी सबके हैं और सबके लिए हैं, लेकिन यह भी दुर्भाग्य है कि कुछ लोग, जिनमे राजनीतिक दल भी आते हैं, गांधी को अपनी या किसी खास की जागीर बनाने की भरसक कोशिश किये। वे गांधी के सपनों को तो हासिये पर डालते गये लेकिन गांधी पर अपना अधिकार जरुर जताते रहे। जो गांधी अपना बताते हैं वे गांधी के सपनों को कभी अपना नही बना पाए। गांधी के स्वच्छता अभियान को सत्तर साल बाद अगर एक जनान्दोलन के रूप में देश को बताने के लिए २०१४ तक इन्तजार करना पड़ा। १५ अगस्त-२०१४ को लालकिले की प्राचीर से जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने श्स्वच्छता अभियानश पर अपना भाषण दिया तो उस भाषण में उन लोगों की आवाज थी, जो हासिये पर थे। मोदी गांधी के उन लोगों की आवाज बनकर बोल रहे थे जिन्हें सफाई जैसे अहम् कार्य करने के बावजूद तुच्छ समझा जाता था। देश को पहली बार ऐसा महसूस हुआ कि सफाई का काम करना कोई तुच्छ काम नही है बल्कि यह देश सेवा के लिए एक समर्पण है। लालकिले के प्राचीर से प्रधानमंत्री वो बोल रहे थे जिसको सुनने की आदत इस देश के तथाकथित बड़े और बुद्धिजीवी कहे जाने वालों को कभी न थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि प्रधानमंत्री बड़े लोगों के लिए नही बल्कि देश की उस जनता की बात बोल रहे थे जो हासिये की जनता थी। कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इसका मजाक भी बनाया लेकिन अपने समर्पण के प्रति अडिग प्रधानमंत्री मोदी ने उसकी परवाह किये बगैर इस अभियान को जारी रखा। गाँधी के सपनों को धरातल तक पहुंचाने का जो संकल्प प्रधानमंत्री मोदी ने लिया वो ऐतिहासिक है।

प्रधानमंत्री के संबोधन में देश के बेटियों की चिंता थी, लिहाजा उन्होंने शौचालय की बात की। उन्होंने कहा कि हर विद्यालय में शौचालय बनाया जाय। प्रधानमंत्री ने यह संकल्प लिया कि २०१९ में जब देश गांधी की १५०वी जयंती मना रहा होगा तो हम देश के हर विद्यालय को शौचालय दे पाने का लक्ष्य हासिल कर चुके होंगे और यही गांधी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आज यह काम अप्रत्याशित रूप से आगे बढ़ चुका है और लक्ष्य के करीब पहुँच रहा है। इसके लिए भारत सरकार ने राजनीतिक दलों, गैर सरकारी संगठनों, निगमों और सक्रिय लोगों की भागीदारी से स्वच्छ भारत अभियान को सन् २०१९ तक पूरा करने का लक्ष्य रखा है। स्वच्छ भारत अभियान को सही तरीके से लागू करने के लिए सरकार ने १९ सदस्यीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। समिति विभिन्न राज्यों में स्वच्छता और पानी की सुविधा देने के सबसे श्रेष्ठ और आधुनिक तरीकों पर सुझाव देगी। यह सुझाव सस्ते, टिकाउ और उपयोगी होंगे। २ अक्टूबर २०१४ को जब पीएम ने यह अभियान शुरु किया तब उन्हें उनके कैबिनेट मंत्रियों का भी भरपूर सहयोग मिला। इसे जनआंदोलन

बनाने के लिए उन्होंने नौ लोगों को सफाई की चुनौती लेने के लिए नामांकित किया, जिनमें प्रियंका चोपड़ा, शशि थरुर, सचिन तेंदुलकर और अनिल अंबानी सहित तमाम नामचीन शामिल हैं। अपनी नवोन्मेषी प्रवृति के लिए विश्व ख्यातिलब्ध प्रधानमंत्री ने जिन लोगों को इस मुहीम में जोड़ा उन लोगों ने न सिर्फ नए लोगों को जोड़ा बल्कि स्वयं झाड़ू लेकर सफाई के लिए उतर गये। देश के इतिहास में पहली बार हुआ कि सफाई किसी खास वर्ग का काम न होकर सबकी जिम्मेदारी जैसी दिखने लगी। खुद प्रधानमंत्री मोदी झाड़ू लेकर एकबार नही बल्कि अनेक बार सड़कों पर उतरे और सफाई को जनांदोलन बनाने में अहम् भूमिका का निर्वहन किया। इस काम के लिए यथोचित बजट भी तय किया गया जो कि राज्य-केंद्र के परस्पर संबधों एवं समझ के आधार पर आवंटित हुआ।

इस पूरे मुहीम में एकबात साफ पता चली कि गांधी को गाया तो बहुतों ने है लेकिन अपने नीतियों में अपनाया वर्तमान सरकार ने ही। गांधी के सपनों का भारत बनाने की दिशा में स्वच्छ भारत अभियान एक ऐतिहासिक अभियान बनकर उभरा है, जिसकी तारीफ भारत ही नही वरन दुनिया के देश भी कर रहे हैं। निश्चित तौर पर देश के सामने यह संदेश मजबूती से पहुंचा है कि गांधी का सपना ही मोदी का संकल्प है और वे इस संकल्प को पूरा अवश्य करेंगे।

स्वच्छ भारत की ओर बढ़ते कदम नाम से इस ई-बुकलेट को तैयार करने का उद्देश्य इस अभियान से जुड़ी तमाम जानकारियों को लोगों के बीच ले जाना है। इस ई-बुकलेट में कई वेबसाइट्स, अखबार, पत्रिका आदि से साभार जानकारी एवं लेख आदि लिए गये हैं। डॉ श्यामा प्रसाद मुकर्जी रिसर्च फाउंडेशन उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता है। उम्मीद है कि यह संकलन सामग्री आपको पसंद आये। धन्यवाद

शिवानन्द द्विवेदी

रिसर्च फेलो,

डॉ श्यामा प्रसाद मुकर्जी रिसर्च फाउंडेशन

गांधीजी और स्वच्छता

● सुदर्शन अयंगर

हमारी स्वयं से की गई प्रतिबद्धता की वजह से ही शौचालय के निर्माण को संधि रूप से प्रोत्साहित करने के लिए विद्यापीठ शामिल है। यह संकल्प श्री नारायण देसाई की १०८वीं गांधी कथा भारतीय परंपरा के अनुसार पौराणिक कथाएं सार्वजनिक तौर पर सुनाई जाती हैं। गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति नारायण देसाई गांधी जी की कहानियों को उसी तरह सुनाया करते थे। हालांकि प्रारंभ में बताई गई दिक्कतों के साथ भी हमने सदरा के आसपास के गांवों में जो विद्यापीठ का परिसर है उस ग्रामीण इलाके में पिछले दो वर्षों में १३०० से ज्यादा शौचालयों का निर्माण कराने में मदद की है। विद्यापीठ गुजरात की राजधानी से २० किलोमीटर की दूरी पर है और यहां लोग आसानी से नहीं पहुंच पाते। ऐसे में भ्रष्ट अधिकारियों और सरकार की उदासीनता से मुश्किलें और भी बढ़ जाती हैं।

ज्यादातर भारतीयों के पास मोबाइल फोन तो हैं लेकिन घर में शौचालय नहीं है। यह लोगों की स्वच्छता के प्रति जागरूकता समाज और प्राचलिकता को दर्शाता है।

गांधीजी ने अपने बचपन में ही भारतीयों में स्वच्छता के प्रति उदासीनता की कमी को महसूस कर लिया था उन्होंने किसी भी सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदंड की आवश्यकता को समझा। उनमें यह समझ पश्चिमी समाज में उनके पारंपरिक मेलजोल और अनुभव से विकसित हुई। अपने दक्षिण अफ्रीका के दिनों से लेकर भारत तक वह अपने पूरे जीवन काल में निरंतर बिना थके स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहे। गांधीजी के लिए स्वच्छता एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। १८९५ में जब ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और एशियाई व्यापारियों से उनके स्थानों को गंदा रखने के आधार पर भेदभाव किया था, तब से लेकर अपनी हत्या के एक दिन पहले २० जनवरी १९४८ तक गांधीजी लगातार सफाई रखने पर जोर देते रहे।

लोक सेवक संघ के संविधान मसौदे में उन्होंने कार्यकर्ताओं के संबंध में जो लिखा था वह इस प्रकार है। ''कार्यकर्ता को गांव की स्वच्छता और सफाई के बारे में जागरूक करना चाहिए और गांव में फैलने वाली बिमारियों को रोकने के लिए सभी जरूरी कदम उठाने चाहि'' गांधी वाङ्मय भाग ९०, पृष्ठ ५२८।

इस लेख में स्वच्छता पर गांधीजी के विचारों को संक्षेप में देने और वर्तमान स्थिति में इसकी समीक्षा की कोशिश की गई है।

सार्वजनिक मंच पर स्वच्छताः दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी

यह दिलचस्प है कि पहली बार गांधीजी ने स्वच्छता के मसले को दक्षिण अफ्रीका में भारतीय व्यापारियों को अपने-अपने व्यापार के स्थानों को साफ रखने के संबंध में उठाया था। भारतीय और एशियाई समुदाय की ओर से एक याचिकाकर्ता के रूप में दक्षिण अफ्रीका में दी

गई एक याचिका में गांधीजी ने भारतीय व्यापारियों की स्वच्छता के प्रति उनके रवैये और व्यवहार का बचाव किया और उन्होंने सभी समुदायों से सफाई रखने के लिए लगातार अपील भी की थी। लार्ड रिपन स्वच्छता मामले में एक मुद्दे को एक याचिका में इस प्रकार उठाया गया था। १८८१ के सम्मेलन का १४वां खंड जो मूल निवासियों के साथ-साथ सभी व्यक्तियों के हितों की समान रक्षा करता है। उसमें कहा गया था कि ट्रांसवाल में भारतीय स्वच्छता का पालन नहीं करते हैं और यह कुछ लोगों द्वारा गलत धारणा के आधार पर बनाया था।

गांधीजी यह स्थापित करना चाहते थे कि भारतीयों को व्यापार का लाइसेंस इस लिए नहीं दिया जा रहा था क्योंकि वह अंग्रेज व्यापारियों को कड़ी टक्कर दे रहे थे। दूसरे उन्होंने यह तर्क भी दिया कि भारतीय व्यापारी और अन्य लोग सफाई रखने के आदी होते हैं। उन्होंने म्यूनिसिपल डॉक्टर वियेले का उदाहरण दिया जिन्होंने भारतीयों को सफाई के प्रति सचेत और जागरूक बताया था। डॉक्टर वियेले ने भारतीयों को धूल और लापरवाही से होने वाली बीमारियों से मुक्त बताया था। (गांधी वाङ्मय) भाग-१ १९६९ संस्करण पृष्ठ २१५)।

भारत में स्वच्छता परिदृश्य अभी भी निराशाजनक है। हमने गांधी को एक बार फिर विफल कर दिया है। गांधीजी ने समाज शास्त्र को समझा और स्वच्छता के महत्व को समझा। पारंपरिक तौर पर सदियों से सफाई के काम में लगे लोगों को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। आजादी के बाद से हमने उनके अभियान को योजनाओं में बदल दिया। योजना को लक्ष्यों, ढांचों और संख्याओं तक सीमित कर दिया गया। हमने मौलिक ढांचे और प्रणाली से तंत्र पर तो ध्यान दिया और उसे मजबूत भी किया लेकिन हम तत्व को भूल गए जो व्यक्ति में मूल्य स्थापित करता है। गांधीजी भारतीय लोगों की साफ-सफाई कम रखने की आदतों से भी परिचित थे। इसलिए उन्होंने १९१४ तक अपने २० वर्षों के प्रवास के दौरान साफ-सफाई रखने पर विशेष बल दिया। गांधीजी इस बात को समझते थे कि किसी भी इलाके में बहुत अधिक भीड़भाड़ गंदगी की एक मुख्य वजह होती है। दक्षिण अफ्रीका के कुछ शहरों में विशेष इलाकों में भारतीय समुदाय के लोगों को पर्याप्त जगह और ढांचागत सुविधाएं नहीं मुहैया कराई गई थी। गांधीजी मानते थे कि उचित स्थान, मूलभूत और ढांचागत सुविधाएं और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी नगरपालिका की है। गांधीजी ने इस संबंध में जोहांसबर्ग के चिकित्सा अधिकारी को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने पत्र में लिखा था। मैं आपको भारतीयों के रहने वाले इलाकों की स्तब्ध कर देने वाली स्थिति के बारे में लिख रहा हूं। एक कमरे में कई लोग एक साथ इस तरह ठूंस कर रहते हैं कि उनके बारे में बताना भी मुश्किल है। इन इलाकों में सफाई सेवाएं अनियमित हैं और सफाई न रखने के संबंध में बहुत से निवासियों ने मेरे कार्यालय में शिकायत करके बताया है कि अब स्थिति पहले से भी बदतर हो गई है। (गांधी वाङ्मय भाग-४, पृष्ठ १२९)।

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा था नगरपालिका की आपराधिक लापारवाही और सफाई के प्रति भारतीय निवासियों की अज्ञानता की वजह से कई इलाकों को पूरी तरह गंदा रखने की साजिश रची गई थी। (एक आत्मकथा, पृष्ठ २६५)।

एक बार दक्षिण अफ्रीका में काले प्लेग का प्रकोप फैला। सौभाग्य से उसके लिए भारतीय जिम्मेदार नहीं थे। यह जोहांसबर्ग के आस-पास के क्षेत्र में सोने की खादानों वाले इलाके में फैला था। गांधीजी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ, स्वेच्छा से और स्वयं के जीवन को खतरे में डालकर रोगियों की सेवा की। नगर चिकित्सक और अधिकारियों ने गांधीजी की सेवाओं की बहुत तारीफ की। गांधी जी चाहते थे कि लोग उस घटना से सबक लें। उन्होंने एक जगह लिखा था इस तरह के कठोर नियमों पर निस्संदेह हमें गुस्सा आता है। परंतु हमें इन नियमों को मानना चाहिए क्योंकि इससे हम गलती दोहराएगें नहीं। हमें स्वच्छता और सफाई का मूल्य पता होना चाहिए। गंदगी को हमें अपने बीच से हटाना होगा क्या स्वच्छता स्वयं ईनाम नहीं है। हाल ही में जो घटना हुई है यह हमारे देशवासियों के लिए एक सबक है। गांधी वाङ्मय भाग-४ पृष्ठ १४६।

हालांकि स्वच्छता के बारे में दक्षिण अफ्रीका और भारत दोनों ही जगह दी गई उनकी सलाह के १०० साल बाद भी हमने एक समुदाय के रूप में प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है। देश की राजधानी सहित कई भारतीय शहरों में मलेरिया, चिकुनगुनिया, डेगूं और अन्य खतरनाक बीमारियां गंदगी की वजह से ही फैलती हैं। डेगूं की वजह से अहमदाबाद के सिविल अस्पताल में हुई मौतों और डॉक्टरों और नर्सों में फैली बीमारियों की जांच के लिए लेखक को गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा गठित की गई जांच समिति का सदस्य नियुक्त किया गया था। समिति ने दो वर्ष पहले स्वच्छता के बारे में सुझावों के साथ अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी थी, लेकिन अहमदाबाद के सिविल अस्पताल और स्थानीय प्रशासन द्वारा संचालित अन्य अस्पतालों में इन सुझावों को प्रभावी तरीके से कार्यन्वित करना संभव नहीं हो सका। जिससे वहां होने वाली मौतें और बीमारियां बदस्तूर जारी हैं।

भारत में स्वच्छता : गांधीजी के प्रयास

भारत में गांधीजी ने गांव की स्वच्छता के संदर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण १४ फरवरी १९१६ में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने वहां कहा था ''देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की सभी शाखाओं में जो निर्देश दिए गए हैं, मैं स्पष्ट कहूंगा कि उन्हें आश्चर्यजनक रूप से समूह कहा जा सकता है, गांव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर लिया जाना चाहिए था।'' (गांधी वाङ्मय, भाग-१३, पृष्ठ २२२)।

गांधीजी ने स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्वच्छता को तुरंत शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। २० मार्च १९१६ को गुरुकुल कांगड़ी में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा था ''गुरुकुल के बच्चों के लिए स्वच्छता और सफाई के नियमों के ज्ञान के साथ ही उनका पालन करना भी प्रशिक्षण का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए, इन अदम्य स्वच्छता निरीक्षकों ने हमें लगातार चेतावनी दी कि स्वच्छता के संबंध में सब कुछ ठीक नहीं है। मुझे लग रहा है कि स्वच्छता पर आगन्तुकों के लिए वार्षिक व्यावहारिक सबक देने के सुनहरे मौके को हमने खो दिया।'' (गांधी वाङ्मय, भाग-१३, पृष्ठ २६४)।

गांधीजी ने नील के खेती करने वाले किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए चंपारण

गए थे। जांच दल के रूप में तैनात एक गोपनीय पत्र में उन्होंने उस स्थिति में स्वच्छता की महत्ता को बताया। गांधीजी चाहते थे कि अंग्रेज प्रशासन उनके कार्यकर्ताओं को स्वीकारें ताकि वे समाज में शिक्षा और सफाई के कार्यों को भी शुरू कर सकें। गांधीजी नील की खेती करने वाले किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए चंपारण गए थे। जांच दल के रूप में तैनात एक गोपनीय पत्र में उन्होंने उस स्थिति में स्वच्छता की महत्ता को बताया। गांधीजी चाहते थे कि अंग्रेज प्रशासन उनके कार्यकताओं को स्वीकारें ताकि वे समाज में शिक्षा और सफाई के कार्यों को भी शुरू कर सकें। इस बारे में उन्होंने कहा, ''क्योंकि वे गांवों में ही रहते हैं, इसलिए वे गांव के लड़के और लड़कियों को सिखा सकते हैं और वे स्वच्छता के बारे उन्हें जानकारी भी दे सकते हैं'' (गांधी वाङ्मय, भाग-१३ पृष्ठ ३९३)।

१९२० में गांधीजी ने गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की। यह विद्यापीठ आश्रम की जीवन पद्धति पर आधारित था, इसलिए वहां शिक्षकों, छात्रों और अन्य स्वयं सेवकों और कार्यकर्ताओं को प्रारंभ से ही स्वच्छता के कार्य में लगाया जाता था। यहां के रिहायशी क्वार्टरों, गलियों, कार्यालयों, कार्यस्थलों और परिसरों की सफाई दिनचर्या का हिस्सा था। गांधीजी यहां आने वाले हर नये व्यक्ति को इस संबंध में विशेष पढ़ाते थे। यह प्रथा आज भी कायम है।

लोग गांधीजी के साथ रहने की इच्छा जाहिर करते तो इस बारे में उनकी पहली शर्त होती थी कि आश्रम में रहने वालों को आश्रम की सफाई का काम करना होगा जिसमें शौच का वैज्ञानिक निस्तारण करना भी शामिल है। गांधीजी ने रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे में बैठकर देशभर में व्यापक दौरे किए थे। वह भारतीय रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे की गंदगी से स्तब्ध और भयभीत थे। उन्होंने समाचार पत्रों को लिखे पत्र के माध्यम से इस ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया था। २५ सितंबर १९१७ को लिखे अपने पत्र में उन्होंने लिखा, ''इस तरह की संकट की स्थिति में तो यात्री परिवहन को बंद कर देना चाहिए लेकिन जिस तरह की गंदगी और स्थिति इन डिब्बों में है उसे जारी नहीं रहने दिया जा सकता क्योंकि वह हमारे स्वास्थ्य और नैतिकता को प्रभावित करती है। निश्चित तौर पर तीसरी श्रेणी के यात्री को जीवन की बुनियादी जरूरतें हासिल करने का अधिकार तो है ही। तीसरे दर्जे के यात्री की उपेक्षा कर हम लाखों लोगों को व्यवस्था, स्वच्छता, शालीन जीवन की शिक्षा देने, सादगी और स्वच्छता की आदतें विकसित करने का बेहतरीन मौका गवां रहे हैं।'' (गांधी वाङ्मय, भाग-१३, पृष्ठ २६४ पृष्ठ ५५०)।

गांधीजी ने धार्मिक स्थलों में फैली गंदगी की ओर भी ध्यान दिलाया था। ३ नवंबर १९१७ को गुजरात राजनैतिक सम्मेलन में उन्होंने कहा था, ''पवित्र तीर्थ स्थान डाकोर यहां से बहुत दूर नहीं है। मैं वहां गया था। वहां की पवित्रता की कोई सीमा नहीं है। मैं स्वयं को वैष्णव भक्त मानता हूं, इसलिए मैं डाकोर जी की स्थिति की विशेष रूप से आलोचना कर सकता हूं। उस स्थान पर गंदगी की ऐसी स्थिति है कि स्वच्छ वातावरण में रहने वाला कोई व्यक्ति वहां २४ घंटे तक भी नहीं ठहर सकता। तीर्थ यात्रियों ने वहां के टैंकरों और गलियों को प्रदूषित कर दिया है।'' (गांधी वाङ्मय, भाग-१४, पृष्ठ ५७)। इसी तरह यंग इंडिया में ३ फरवरी १९२७

को उन्होंने बिहार के पवित्र शहर गया की गंदगी के बारे में भी लिखा और यह इंगित किया कि उनकी हिन्दू आत्मा गया के गंदे नालों में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावत करती है।

भारतीय रेलवे में आज भी गंदगी का वही आलम है। रेलवे के डिब्बों को और शौचालय साफ रखने के लिए श्रमिकों और कर्मचारियों को तो रखा जाता है जहां तक स्वच्छता और सफाई से संबंधित प्रश्न है हम भारतीय यात्रियों को इस बारे में कोई शर्म महसूस नहीं होती। शौचालयों का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया जाता। यहां तक कि वातानुकूलित डिब्बों में यात्रा करने वाले पढ़े लिखे लोग भी अपने बच्चों को शौचालय सीट का इस्तेमाल नहीं करवा कर उन्हें बाहर ही शौच करवाते हैं। डिब्बों में कूड़ा फैलना तो आम बात है।

अक्टूबर २०१४

लेख का संपादित अंश

ऐसे हों हमारे घर

सृनृतावन्तः सुभंगा इरावन्तो हसामुदाः।
अतृष्या अक्षुध्यास्त गृहा मास्मद् विभीतन।।

(अथर्व.७।६०।६)

भावार्थ– मन्त्र में एक आदर्श गृहस्थ का चित्रण किया गया है। हमारे घर ऐसे होने चाहिए जहां–

१. घर के सभी सदस्य सत्यवादी, मधुरभाषी और सुव्यवस्थाप्रिय हों।

२. सभी पारिवारिक जन सौभाग्यश्याली हों।

३. घर में अन्न और धन-धान्य की न्यूनता न हो।

४. परिवार के सभी सदस्य सदा हंसते और मुस्कराते रहें।

५. सभी निर्लोभी और सन्तोषी हों।

६. घर में कोई भी व्यक्ति अभावग्रस्त न हो, सभी तृप्त हों, सभी की आवश्यक इच्छाओं की पूर्ति होती रहे।

७. घर के सदस्य एक-दूसरे से भयभीत न हों।

प्रभु हमें बल और शक्ति दें कि हम अपने घरों और परिवारों को ऐसा ही आदर्श वैदिक-परिवार बनाने में समर्थ हो सकें।

स्वच्छता अभियान के प्रारंभ पर राजपथ से प्रधानमंत्री का भाषण

पूज्य बापू ने हमें संदेश दिया था Quit India&Clean India! देशवासियों ने आजादी का आंदोलन चलाकर के देश को पूज्य बापू के नेतृत्व में गुलामी से मुक्त कराया लेकिन पूज्य बापू का Clean India का सपना अभी अधूरा है। यहां पर एक Crowd Sourcing के माध्यम से देश के लोगों का आह्वान किया था कि इसका Logo बनाकर के हमें Idea दीजिए। लोगों को कहा था कि आप इसका घोष वाक्य हमें दीजिए। महाराष्ट्र के भाई अनंत ने इसमें विजय प्राप्त की। गुजरात राजकोट की एक बहन भाग्यश्री ने इसका इनाम प्राप्त किया।

जब हजारों की तादाद में लोग आए थे और जब मैंने इस Logo को देखा! एक दम से मुझे बड़ा सटीक लगा। मैं देख रहा हूं, इन चश्मों से महात्मा गांधी देख रहे हैं कि बेटे, भारत को स्वच्छ किया कि नहीं किया! ये Logo सिर्फ Logo नहीं है। इस चश्में से गांधी देख रहे हैं। क्या किया? क्या कर रहे हो, कैसे कर रहे हो, कब तक करोगे, इसलिए जब गांधी के चश्में का Logo हम देखते हैं, जो चश्में खुद हमें कहते हैं, स्वच्छ भारत का संदेश देते हैं। मैं इस कल्पना के लिए, इस कृति की रचना करने वाले अनंत को अभनिनंदन देता हूं। एक उन्होंने घोष वाक्य दिया भाग्यश्री ने एक कदम स्वच्छता की ओर'' बहुत बड़ी बात नहीं है। एक कदम। इसके लिए मैं भाग्यश्री भी बधाई देता हूं।

मैं केवल कर्म में विश्वास करता हूं:-

मेरे प्यारे देशवासियों! मैं आज इस मंच पर से बड़ी प्रमाणिकता से, पवित्र मन से, मेरे सामने India Gate है, वहां पर देश के लिए मरने-मिटने वालों की ज्योति जल रही रही है, उसकी साक्षी से मैं कहता हूं, राजनीतिक बयान नहीं कर रहा हूं। इस देश की सभी सरकारों ने, इस कल को करने के लिए कोई न कोई प्रयास किया है। इस देश के अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक नेताओं ने इस काम को करने के लिए प्रयास किया है। जिन-जिन लोगों ने, अलग-अलग नाम रहे होंगे, कार्यक्रम की रचना अलग रही होगी, रूप-रंग अलग रहे होंगे लेकिन जिन-जिन लोगों ने काम किया है। मैं सबसे पहले उन सबको वंदन करता हूं। मैं उनका अभिनंदन करता हूं।

उसी कड़ी को मुझे आगे ले जाना है। मैं कोई दावा नहीं करता हूं कि अभी-अभी जो चुनकर के आई है, सरकार वो ही सब कर रही है। ना, मैंने लालकिले से भी पुरानी सभी सरकारों को बधाई दी थी, अभिनंदन किया था। आज मैं इस पवित्र मंच से भी जिन-जिन सरकारों ने इस काम को किया है, चाहे केंद्र में हो, चाहे राज्य में हो, चाहे नगर-पालिका में हो, चाहे सामाजिक संगठनों ने किया हो, चाहे सर्वोदयी नेताओं ने किया हो, चाहे सेवा दल के कार्यकर्ताओं ने किया हो और संगठन के कार्यकर्ताओं ने किया है, सब के सब अभिनंदन के

अधिकारी हैं और आज इस पवित्र अभियान का आरंभ हो रहा है, तब मैं उन सबको नमन करते हुए, उन सबके आशीर्वाद के साथ, इस कार्यक्रम को आरंभ करने के लिए, मै पूरे देशवासियों से प्रार्थना करता हूं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि क्या सफाई, इस देश को गंदगी से मुक्त करना, क्या सिर्फ सफाई कर्मचारियों का काम है क्या? क्या ये उन्हीं का जिम्मा है क्या? क्या सवा सौ करोड़ देशवासियों का कोई दायित्व नहीं है? हम हर बात उन्हीं पर थोपते रहेंगे क्या? अगर कुछ अच्छा हुआ, बुरा हुआ तो उन्हीं को कोसते रहेंगे क्या? ये स्थिति बदलनी है।

सवा सौ करोड़ देशवासी, जैसे भारत माता के संतान हैं, प्रधानमंत्री भी पहले भारत माता की संतान है, बाद में प्रधानमंत्री है। इसलिए इस मां की संतान के रूप में, हम सबका दायित्व बनता है। हम हमारे देश को ऐसा न रखें। गांव हो, गली हो, मोहल्ला हो, घर हो, परिवार, स्कूल हो, कॉलेज हो, मंदिर हो, मस्जिद हो, गुरुद्वारा हो, कोई भी स्थान हो। ये गंदा कैसे हो सकता है और कहीं गंदगी देखें.. कोई कागज फेंकता है, तो हमें उठाने का मन क्यों नहीं करता?

देश को बदलने से पहले खुद को बदलें:-

मैं जानता हूं, ये प्रचार अभियान से होने वाला काम नहीं है। पुरानी आदतों को बदलने के लिए समय लगता है। कठिन काम है, मैं जानता हूं लेकिन हमारे पास २०१९ तक महात्मा गांधी के १५० वर्ष मनाएंगे, तब तक का समय है। मैं मीडिया के मित्रों का भी आभारी हूं कि पिछले कुछ दिनों से वो इस बात को फैला रहे हैं, पहुंचा रहे हैं। अगर हम सब मिलकर के इसको एक जन आंदोलन बनाएंगे, तो मैं नहीं मानता हूं कि दुनिया के साफ-सुथरे शहरों में, देशों में, हमारा नाम नहीं होगा। हम भी उस जगह को बना सकते हैं। भारत ये कर सकता है, भारतवासी कर सकते हैं। अगर भारतवासी कम से कम खर्चे में डंते पहुंच सकते हैं, तो क्या भारतवासी अपना गली-मौहल्ला साफ नहीं कर सकते हैं? डंते तक पहुंचाने के लिए कोई प्रधानमंभी नहीं गया, कोई मंत्री नहीं गया, वैज्ञानिकों ने किया, भारत माता के संतानों ने किया था। सफाई भी हम सब मिलकर के करेंगे।

मैं जानता हूं, कुछ ही दिनों में आलोचना शुरू होने वाली है, कि देखो क्या हुआ? देखो क्या हुआ? मेरी ढेर सारी आलोचना होने वाली है, मैं जानता हूं लेकिन मैं मां भारती की गंदगी की सफाई के लिए अगर मुझे आलोचना सहना पड़े, तो उसी मैं तैयारी के साथ आज मैदान में आया हूं। मैं इस तैयारी के साथ आया हूं कि मेरे सवा सौ करोड़ देशवासी, भारत मां की संतान, हमारी इस भारत मां को अब गंदा नहीं रहने देंगे। पूज्य बापू के सपनों को पूरा करने में, हम कोताही नहीं बरतेंगे और ये जिम्मेवारी हम सबकी है।

मैंने Social Media में भी एक आंदोलन खड़ा करने करने का तय किया है। mygov.in, इस वेबसाइट पर भी है। Clean India के लिए एक अलग वेबसाइट बनाई है। Facebook, Twitter पर भी इस काम को आरंभ किया है। # MyCleanIndia, ये भी आज प्रारंभ किया है। मैं देशवासियों से प्रार्थना करता हूं, कि आप एक काम किजिए। कहीं कूड़ा कचरा है, उसकी

फोटो आप अपलोड कीजिए। फिर उसकी सफाई आप कीजिए। उसकी वीडियो अपलोड कीजिए। फिर स्वच्छ, उस जगह की फोटो आप अपलोड कीजिए।

स्वच्छ भारत के निर्माण में मीडिया भी दे योगदानः-

भाइयों, बहनों, मैं मीडिया से भी प्रार्थना करता हूं। ये सब, आज भी मैं कहता हूं, हिन्दुस्तान में कई नौजवान ऐसे हैं, कई संगठन ऐसे हैं, और हिन्दुस्तान के हर कोने में हैं, हजारों की तादाद में हैं। वे सफाई का काम, मैं प्रधानमंत्री बना, उससे पहले से कर रहे है। जरा उनको हम हिन्दुस्तान की जनता के सामने मीडिया के माध्यम से लाएं। छोटे छोटे लोग जो सफाई का काम करते हैं, वो देश के सामने लाएं। हम सब मिलके एक एक प्रेरणा का वातावरण बनाएं। किसने किया, किसने नहीं किया, कैन जिम्मेवार है, कौन नहीं है, कौन गुनाहगार, इसमें इस बात को हम न घसीटें।

राजनीति से परे है यह अभियानः-

मैंने पहले ही कहा, यह राजनीति से परे है। यह सिर्फ राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा से किया हुआ काम है। हमने, सिर्फ-सिर्फ-सिर्फ राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा से ही करना है, राजनीति से प्ररित हो कर के नहीं करना है। यह सफाई तब होगी। इसलिए मैं कहता हूं, अनेक संगठन हैं, अनेक सामाजिक संगठन हैं, अनेक सांस्कृतिक संगठन हैं, वह अपने-अपने तरीके से काम कर रहे हैं।

मैंने ऐसे कई गांव देखें हैं, उस गांव का सरपंच इतना जागरूक हैं, गांव के सब लोग, गांव को इतना साफ-सुथरा रखते हैं, देखते ही बनता है। कई लोग हैं, इस काम को करते हैं। कई स्कूल में जाते हैं, एक-आध शिक्षक इतना रूचि लेता है, पूरा शिक्षण क्षेत्र का परिसर कितना साफ-सुथरा, पवित्रता के माहौल की अनुभूति होती है।

राजपथ की तरह ही हो भारत का हर कोनाः-

जब हम इंडिया गेट पर आते हैं, राष्ट्रपति भवन की ओर जाते हैं, यह सफाई देखते हैं, तो मन कितना अच्छा लगता हैं। क्या मेरा हिन्दुस्तान का हर कोना इतना ही साफ होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए। हर गली-मोहल्ला इतना ही साफ होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए। यह सामाजिक दायित्व है कि नहीं है और इसलिए कृपा करके, अगर इसको राजनीतिक रंग से रंग दिया गया, अगर इसको इसी बात से तौल दिया, कि देखों एक दिन आए, फोटो निकाल के चले गए, तब तो हम भारत मां की फिर से एक बार कु-सेवा करेंगे। महात्मा गाधी हिन्दुस्तान के हर गली मौहल्ले में सफाई करने नहीं गए थे। लेकिन सफाई की इनकी प्रतिबद्धता ने पूरे हिन्दुस्तान में सफाई के प्रति एक जागरूकता पैदा की। हमको, सबको मिल करके इस काम को करना है।हम जहां हों, जैसे हों, इस काम को करेंगे। मुझे विश्वास है, मैं अपनी भारत माता को गंदगी से मुक्त करा पाएंगे। ये सवा करोड़ देशवासियों का काम है।

सवा सौ करोड़ में एक मोदी नाम का इंसान भी है। अकेला मोदी है, ऐसा नहीं है। इसलिए काम सवा सौ करोड़ देशवासियों का है, ये मैं सवा सौ करोड़ बार बोल रहा हूं। काम सरकार का सिर्फ नहीं है। यह काम सिर्फ मंत्रियों का नहीं है। यह काम सिर्फ सामाजिक संगठन,

समर्पित समाज सेवकों का नहीं है। यह जन-सामान्य का काम है। जितना ज्यादा हम जन सामान्य को जोड़ेंगे, लाभ होगा।

मैंने आज एक और भी काम, आज नवरात्रि की भी पूर्णहुति हो रही है। कल विजयादशमी का पर्व हम मनाने वाले हैं। कल के विजया-दशमी के पर्व के लिए भी राष्ट्रवासियों को शुभकामना देता हूं।

स्वच्छता के लिए अपने साथ लोगों को जोड़ेः-

आज मैंने सोशल मीडिया के एक आंदोलन चलाने के कार्यक्रम शुरू किया है। मैंने आज नौ लोगों को निमंत्रित किया है कि आप भी पब्लिक प्लेस पर आके, अपने आदमियों को ले के स्वच्छता के अभियान पर काम करेंगे। मैं विश्वास करता हूं, जिन नौ लोगों को मैं आज निमंत्रित किया है, वे जरूर इस काम को करेंगे। इतना ही नहीं उनसे भी मेरा आग्रह है, कि वे भी और नौ लोगों का नाम तय करके उनको भी निमंत्रित करे, वो और नौ लोगों को करे, वो और नौ लोगों को कहे। आपको भी मैं कहता हूं, आप भी इस प्रकार का सफाई का काम करके उसका वीडियो upload करके और नौ लोगों को आप निमंत्रित कीजिए। अरे, नौ-नौ की चैन चलती ही रहे, चलती ही रहे।

स्वच्छता अभियान को गतिमान करने के लिए नामित नवरत्नः-

आज मैंने गोवा के गवर्नर माननीय मृदुला सिन्हा जी को निमंत्रित किया है। मैंने भारत रत्न सचिन तेंदुलकर जी को निमंत्रित किया है। मैंने योग गुरू बाबा रामदेव जी को निमंत्रित किया है। मैंने कांग्रेस के नेता श्रीमान शशि थरूर जी को निमंत्रित किया है। मैंने श्रीमान कमल हसन जी को निमंत्रित किया है। मैने श्रीमान सलमान खान जी को निमंत्रित किया है, मैंने बहन प्रियंका चोपड़ा जी को निमंत्रित किया है। इतना ही नहीं, तारक मेहता का उल्टा चश्मा, उस पूरी टीम को मैंने कहा है, मैं इस काम में आपको निमंत्रण देता हूं, आप भी करिए और अपने सीरियल के माध्यम से, और भी सीरियल के माध्यम से इस काम को आगे बढ़ाइए।

स्वच्छ भारत निर्माण में फिल्मों का भी योगदानः-

हमारी फिल्म इंडस्ट्री देखेगी, पिछले ५० सालों में कई ऐसी फिल्में आई हैं, बहुत सी फिल्में ऐसी हैं, जिनमें कोई न कोई एपिसोड ऐसा है, जिसमें सफाई के विषय में कोई न कोई लोकशिक्षा का काम किया गया है। इस बात को हमें बढ़ाना। हमें इस बात की जिम्मेवारी निभानी है।

भाईयों और बहनों, डब्ल्यूएचओ का एक बहुत बड़ा चौंकाने वाला मूल्यांकन है- उनका कहना है कि भारत में गंदगी के कारण जो बीमारी आती है, बीमारी के कारण जो रोजी-रोटी छूट जाती है, नौकरी नहीं हो पाती है, परिवार को तकलीफ होती है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि गंदगी के कारण हर वर्ष भारत के प्रत्येक नागरिक को करीब ६५०० रूपयों का अतिरिक्त नुकसान झेलना पड़ता। बीमारी के कारण, बीमारी के कारण ऑटों रिक्शा नहीं चला पाता है। बीमारी के कारण टैक्सी नहीं चला पाता है। बीमारी के कारण अखबार बांटने के लिए

नहीं जा पाता है। बीमारी के कारण दूध बेचने के लिए नहीं जा पाता है। यह भारत की कुल संख्या का average निकाला है, लेकिन सुखी घर के लोगों को ये नहीं भुगतना पड़ता है। अगर उनको निकाल दिया जाए तो average ६५०० से बढ़कर के गरीब आदमी के सर पर बोझ की average १२-१५ हजार रूपये हो सकती है।

स्वच्छता से कम होगी गरीबीः-

हम सिर्फ गंदगी साफ करें तो हमारे देश के गरीबों के जेब से कम से कम ६५०० रूपये बचने वाले है। वह बीमारी से बचने वाला है। वह नौकरी पर नहीं जा पा रहा है, बेरोजगारी से बचने वाला है। ये गंदगी से मुक्ति गरीबों के स्वास्थ्य के लिए बड़ा महत्वपूर्ण काम है। इसलिए ये भारत माता की सेवा, गरीबों की सेवा है।

आइये हम सब मिलकर करके देखें, Mygov.in वेबसाइट पर, मेरे फेसबुक पर, ट्विटर पर, सामान्य जनता का जो मिजाज देख रहा हूं, जो उमंग देख रहा हूं। मुझे विश्वास है कि सरकार से भी जनता १०० कदम आगे चलने को तैयार है और अगर जनता चलती है तो फिर इसे रोकने का कोई कारण नहीं है।

गांधी जी के प्रति हमारी भी जिम्मेदारीः-

भाईयो-बहनों, महात्मा गांधी को हमें कुछ तो देना चाहिए। २०१९ में गांधी के जब १५० वर्ष होते हैं, तब हमें 'स्वच्छ भारत' और ये सामूहिक दायित्वों से बना हुआ भारत। Quit India की सफलता इसलिए थी कि सारा देश आजादी के आंदोलन में जुड़ा हुआ था। Clean India की सफलता इसमें है कि सवा सौ करोड़ देशवासी इसमें जुड़ें। जय जवान-जय किसान के मंत्र की सफलता इसलिए थी, क्योंकि लाल बहादुर शास्त्री ने जय किसान का नारा दिया, अन्न उत्पादन के लिए आहवान किया, लेकिन लाल बहादुर शास्त्री को किसी ने ये पूछा कि नहीं था कि तुम खेत में जाकर के हल चला रहे हो, तुमने खेती की या नहीं की, तुमने अनाज पैदा किया कि नहीं किया, ये किसी ने नहीं पूछा था लेकिन लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा था जय किसान! और हिंदुस्तान के किसान खड़े हो गए थे। अन्न के भंडार भर दिए थे और भारत के हर गरीब व्यक्ति का पेट भरने का काम, उस एक महापुरुष के शब्दों पर हुआ था। महात्मा गांधी के शब्दों को पूरा करने का ये वक्त है।

भारत छोड़ो से स्वच्छ भारत की तुलनाः-

उस महापुरुष के शब्दों की पवित्रता देखिए, उस महापुरुष के शब्दों की ताकत को देखिए, उस महापुरुष के शब्दों के समर्पण को देखिए, क्या हमें वो प्रेरणा नहीं दे सकते हैं। चाहे मैं हूं या आप हों, हम सबके लिए महात्मा गांधी का Quit India नारा, ये सफलता जैसा हमें आनंद देती है, Clean India भी हमें उतना ही आनंद देगी, उतना ही सुख देगी, उतना ही समृद्धि का रास्ता प्रशस्त करेगी, इस विश्वास के साथ इन महापुरुषों के शब्दों पर भरोसा करके हम चल पड़े हैं।

मेरे पर भरोसा मत कीजिए, मेरी सरकार पर भरोसा मत कीजिए, भरोसा हम करें महात्मा

गांधी पर! भरोसा करें, महात्मा गांधी के त्याग, तपश्चर्या और समर्पण पर! भरोसा करें, हम महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपनों पर। आज हमारी जिम्मेदारी बनती है, अगर हम मां भारती के संतान हैं, तो ये हमारा दायित्व बनता है, न मैं गंदगी करूंगा और न मैं गंदगी करने दूंगा। यह हमारा दायित्व होना चाहिए। दुनिया के समृद्ध देश

देश की सफाई की जिम्मेदारी वहां की नागरिकों की:-

कभी हम विदेशों में जाते हैं और आकर के कहते हैं वाह! इतना साफ-सुथरा! कहीं गंदगी नहीं थी। तो मैं लोगों को पूछता हूं साफ देखा, स्वच्छ देखा, आपको अच्छा लगा न? मैंने कहा कि आपने किसी को गंदगी करते हुए देखा था, कूड़ा-कचरा फेंकते हुए देखा था, पान की पिचकारी लगाते हुए देखा था तो उन्होंने कहा कि नहीं देखा था, तो मैंने कहा कि सफाई का रहस्य वहां के नागरिकों का discipline है। ये अगर हम लाते हैं तो मुझे विश्वास है, हम बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

एक काम और है, वह है टॉयलेट बनाना। हमारे देश के गांवों में ६० प्रतिशत से भी ज्यदा लोग आज खुले में शौचालय के लिए जा रहे हैं। मुझे सबसे बड़ी पीड़ा होता है, मां-बहनों को जब खुले में जाना पड़ता है, ये कलंक मिटाना है, हम सबने मिलकर के मिटाना है। मैंने Corporate Social Responsibility वालों से भी कहा है कि इस काम को प्राथमिकता दीजिए। मां-बहनों के सम्मान के लिए हम इतना तो करें।

स्कूलों को स्वच्छ बनाने के लिए जरूरी है टॉयलेट:-

आज भी कई स्कूल ऐसे हैं, कि जहां बालिकाओं के लिए अलग टॉयलेट नहीं है ये स्थिति बदलनी है। किसी का इसमें दोष नहीं है, कोई जिम्मेवार नहीं है, बस हमने सकारात्मक रूप से भविष्य की ओर देख कर के चल पड़ना हैं। कोई राजनीतिक टीका-टिप्पणी, इस आंदोलन से जुड़ा हुआ कोई आदमी न करे क्योंकि सबने काम किया है। हमारे पहले सबने काम किया है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी इसकी सिरमौर रही है।

मैं इस काम को वंदन करता हूं और इसलिए मैं हाथ जोड़ करके, विशेष करके मीडिया को और देशवासियों को कहता हूं, कि सारे आंदोलन को सिर्फ मां भारती की भक्ति से जोड़िए, गरीब से गरीब के स्वास्थ्य से जोड़िए, कौन कर रहा है, कौन नहीं कर रहा, कौन सफल हुआ, और विफल हुआ, इसके पीछे पड़ करके हम स्थितियों को न बिगाड़ें, न बदलें, हम एक जिम्मेदारी से चलें। और हम सामूहिक जिम्मेवारी से चलेंगे तो सफलता मिलेगी।

मैं फिर एक बार आप सबको निमंत्रित करता हूं। हम यहां पर शपथ लेने वाले हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम बैठे-बैठे ही शपथ लेंगे, खड़े होने की जरूरत नहीं, जो खड़े हैं, वे खड़े रहें और दूसरी मेरी प्रार्थना है कि हम दोनों हाथ ऊपर करके महात्मा गांधी को स्मरण करें और महात्मा गांधी को स्मरण करके, हम जहां हैं वहां दोनों हाथ ऊपर करके महात्मा गांधी का स्मरण करना है। तो ये काम पूज्य बापू को उनके सपनों का भारत बनाने के लिए है। इसलिए दोनों हाथ ऊपर करके, पूज्य बापू स्मरण करके मेरे साथ ये शपथ समारोह में शरीक होंगे। और ये शपथ सिर्फ बोलना नहीं है, शपथ लेना है।

आप शपथ लेंगे? ये सफाई आंदोलन को आगे बढ़ाएंगे? कोई कोताही नहीं बरतेंगे?

मेरे साथ बोलिए ''महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना की थी। महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर मां भारती को आजाद कराया। अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।"

''मैं शपथ लेता हूं कि मैं स्वयं स्व्च्छता के प्रति सजग रहूंगा और उसके लिए समय दूंगा। हर वर्ष १०० घंटे यानी हर सप्ताह दो घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा। मैं न गंदगी करूंगा और न किसी और को करने दूंगा। सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से मेरे मोहल्ले से, मेरे गांव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूंगा। मैं यह मानता हूं कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं, उसका कारण यह है कि वहां के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं। इस विचार के साथ मैं गांव-गांव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूंगा। मैं आज जो शपथ ले रहा हूं वह अन्य १०० व्यक्तियों से भी करवाउंगा। वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए १०० घंटे दें, इसके लिए प्रयास करूंगा। मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।''

भारत माता की जय।

स्रोतः- पीएमओ

संपादित अंश

स्वामी विवेकानंदः- प्राच्य और पाश्चात्य

"प्राच्य एचं पाश्चात्य" नामक पुस्तक में स्वामी विवेकानंद जी ने तत्कालीन भारत की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए भारतीय जीवन शैली और पश्चिम की जीवनशैली से तुलना की है। प्रस्तुत है कुछ खास अंश।

शारीरिक स्वच्छता एवं प्राच्य और पाश्चात्य

पहले शरीर की ही बात लो। बाह्य और आभ्यन्तरिक शुद्धि ही पवित्रता है। मिट्टी, जल आदि के द्वारा शरीर शुद्ध होता है; अच्छी बात है। दुनिया की ऐसी कोई जाति नहीं है जिसका शरीर हिन्दुओं के सदृश साफ हो। हिन्दुओं के अतिरिक्त और किसी भी जाति के लोग जलशौचादि नहीं करते। चीनियों ने पाश्चात्यों को कागज-व्यवहार करना सिखाया है-कुछ तो बचाव हुआ। स्नान पूछिये तो नहीं के बराबर है। अब भारत में आने के कारण अंग्रेजों ने अपने देश में स्नान करने की प्रथा चलायी है। जो विद्यार्थी विलायत से पढ़कर लौटे हैं, उनसे पूछिए कि वहां स्नान करने में कितना कष्ट है। जो लोग स्नान करते है-अर्थात् सप्ताह में एक दिन वह भी-वे उसी दिन भीतर पहनने का कपड़ा (गंजी, अधबहियां आदि) बदलते हैं। अवश्य ही अब कुछ अमीर लोग नित्य स्नान करते हैं। अमेरिकी कुछ अधिक करते हैं। जर्मनी वाले कभी-कभार, फ्रांसीसी आदि तो कस्मिनकाले भी नहीं!!! स्पेन, इटली आदि गरम देश हैं, वे लोग तो और भी नहीं करते-ढेर सारा लहसुन खाकर दिन-रात पसीने से लथपथ रहते हैं, पर सात जन्म जलस्पर्श भी नहीं होता। उनके शरीर की दुर्गन्ध से भूतों के भी चौदह पुरखे भाग जाएंगे, भूत तो बच्चे हैं! उनके स्नान का क्या अर्थ है? मुंह, सिर, हाथ धोना-जो अंग बाहर दिखलायी पड़ते हैं, और क्या! पेरिस-पैरिस सभ्यता की राजधानी, रंग ढंग भोग-विलास का भूस्वर्ग पैरिस, विद्या-शिल्प का केन्द्र पेरिस, उसी पैरिस में एक बार मेरे एक बड़े धनी मित्र बुलाकर ले गये। एक प्रासाद के समान होटल में उन्होंने मुझे ठहराया। राजाओं जैसा खाना मिलता था, किन्तु स्नान का नाम भी नहीं था। दो दिन चुपचाप सहा, फिर नहीं सहा गया। तब मित्र से कहना पड़ा, "भाई! तुम्हारा यह राजभोग तुम्हें ही मुबारक हो! अब जान बचे तो लाखों पाऊं, यह भीषण गर्मी, और स्नान करने का कोई ठिकाना ही नहीं, पागल कुत्ते जैसी मेरी दशा हो रही है।" तब मेरे मित्र बहुत दुःखी होकर नाराजगी से बोले, "ऐसे होटल में नहीं रहेंगे, चलो अच्छी जगह खोज लें।"

बारह प्रधान होटल देखे गये, पर स्नान करने का प्रबन्ध कहीं नहीं था, अलग स्नान करने के स्थान थे, जहां एक बार चार-पांच रुपया देकर स्नान किया जा सकता था। हरि बोल हरि! उसी दिन शाम को मैंने एक अखबार में पढ़ा कि एक बुढ़िया स्नान करने के लिए हौज में बैठी और वहीं मर गयी!! अब देखो, जीवन में प्रथम बार ही बुढ़िया के अंग का जल से स्पर्श होते ही बुढ़िया पहाड़ खा गई!! इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। रूस वाले तो सर्वथा असल

म्लेच्छ हैं, तिब्बत से ही म्लेच्छता आरम्भ हो जाती है। अमेरिका के प्रत्येक-निवास गृह में अवश्य ही स्नानागार और नल रहता है।

किन्तु अन्तर देखिये, हम किसलिए स्नान करते हैं? अधर्म के भय से, पाश्चात्य लोग स्वच्छता के लिए हाथ-मुंह धोते हैं। सिर्फ ऊपर पानी उड़ेल लेने से ही हमारा काम चल जाता है फिर चाहे तेल ही चिप-चिप करे तथा मैल भी लगी रहे। और देखो, दक्षिणात्य भाई लोग स्नान करके इतना लम्बा चौड़ा तिलक लगाते हैं कि उसे झांवे से भी घिसकर साफर करना भी जरा टेढ़ी खीर है! हमारे स्नान करने की प्रथा बड़ी सरल है, कहीं भी डुबकी मार लेने से काम चल जाता है, किन्तु पाश्चात्य देशों में ऐसा नहीं है। उन्हें एक गांठ कपड़ा ही खोलना पड़ता है, फिर उनके (कपड़ों के) बन्धनों का तो कहना ही क्या? हमें शरीर दिखलाने में कोई लज्जा नहीं है, उनके लिए यह है, फिर भी, पुरुष-पुरुष में किंचित भी संकोच नहीं है, बाप बेटे के सामने निर्वत्र हो जाए तो कोई दोष नहीं, पर स्त्रियों के सामने सिर से पैर तक कपड़ा पहनना ही होगा।

'बहिराचार' अर्थात् साफ-सुथरा रहना अन्यान्य आचारों की तरह कभी-कभी अत्याचार या अनाचार हो जाता है। यूरोपियन कहते हैं कि शरीर सम्बन्धी सब कार्य बहुत गुप्त रूप से करने चाहिए, बात बहुत ठीक है। शौच आदि की बात दूर रहे, लोगों के सामने थूकना भी बहुत अशिष्टता है। खाकर सब के सामने मुंह धोना बड़ी लज्जा की बात है क्योंकि तब कुल्ला भी करना पड़ता ही है। लोकलज्जा के भय से खा-पीकर चुपचाप मुंह पोंछकर बैठ जाइए, इसका परिणाम दांतों का सर्वनाश है। यह है सभ्यता के भय से अनाचार। दूसरी ओर हम लोग रास्ते में बैठकर दुनिया के लोगों के सामने मुंह धोते हैं, दांत साफ करते हैं, कुल्ला करते हैं, वह अत्याचार है। अवश्य ही ये सब काम आड़ में करने चाहिए, किन्तु न करना भी अनुचित है।

फिर, देश-भेद के कारण जो कार्य अनिवार्य है, उन्हें समाज सह लेता है। हमारे जैसे गरम देश में भोजन करने के समय हम आधा घड़ा पानी पी डालते हैं, फिर हम न डकारें तो क्या करें ? किन्तु पाश्चात्य देशों में डकारना बहुत असभ्य काम है। पर खाते-खाते जेब से. रूमाल निकालकर यदि नाक साफ की जाएं तो कोई हर्ज नहीं! किन्तु हमारे देश में यह बड़ी घृणित बात है। ठण्डे देशों में बीच-बीच में नाक साफ किये बिना बैठा ही नहीं जा सकता।

हम लोग मैले से अत्यन्त घृणा करते हुए भी बहुधा मैले रहते हैं। हमको मैले से इतनी घृणा है कि जिसने मैला छुआ उसे स्नान करना पड़ेगा। इसी भय से दरवाजे पर मैले स्तूपाकृति को हम सड़ने देते हैं? सिर्फ ध्यान इस बात का रहता है कि हम उसे छूते तो नहीं! पर इधर जो नरक-कुण्ड का वास होता है उसका क्या? एक अनाचार के भय से दूसरा महा घोर अनाचार! एक पाप से बचने के लिए दूसरा गुरुत्तर पाप करते हैं! जो अपने घर में कूड़े का ढेर रखता है वह अवश्य ही पापी है, इसमें सन्देह ही क्या है। उसका दण्ड भोगने के लिए उसे न तो दूसरा जन्म ही लेने की आवश्यकता होगी और न बहुत देर तक ठहरना ही पड़ेगा।

○

(स्रोतः- प्राच्य एंव पाश्चात्य,पृष्ठ संख्या-२७)

ग्रामीणों ने गढ़ी सामाजिक सफलता की मिसाल

- **ओडिशा के आदिवासी बहुल कोरापुट गांव के लोगों को मिली खुले में शौच से राहत पहल**

कोरापुट कहने को वह देश के सबसे पिछड़े जिलों में से एक के वाशिंदे हैं, जिन्हें बाहरी दुनिया के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन उन्होंने सामाजिक सफलता की एक ऐसी मिसाल पेश की है, जो दूसरों के लिए अनुकरणीय है। ओडिशा के कोरापुट जिले में कोरापुट और सेमिलिगुदा ब्लॉकों के ११ गांव के ५२२ घरों में अब पक्के शौचालय बन चुके हैं और इन घरों में रहने वाले लोग खुले में शौच के अभिशाप से मुक्त हैं।

कोरापुट से ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित कोरापुट ब्लॉक के चंद्रमुंदर गांव की ६० वर्षीय कमला जैन ने बताया, 'हमारे गांव के सभी ९६ घरों में अब शौचालय है और खुले में शौच अब गुजरे जमाने की बात हो गई है। ग्रामीण (अधिकतर आदिवासी) अब शौचालय का प्रयोग करते हैं और यहां खुले में शौच पर सख्त मनाही है।'

कठिन थे रास्ते

कोरापुट ब्लॉक के चंद्रमुंदर सहित चकरलिगुदा, खापारापुट, गांधीपुट, स्टेशन सुकु, मालुगुडा और हल्दीपुट तथा सेमिलिगुदा ब्लॉक के बांदगुदा, डोरागुदा, जागमपुट और सादाम अब खुले में शौच मुक्त क्षेत्र बन गए हैं। गांवों में शौचालय संस्कृति को विकसित करना आसान नहीं था क्योंकि यहां रहने वाले सभी लोगों को खुले में शौच की आदत थी और वह इसके दुष्प्रभावों से भी वाकिफ नहीं थे। ग्रामीणों को खुले में शौच के बुरे प्रभाव से सचेत करने के लिए जिला प्रशासन को कई बार जागरुकता शिविरों का आयोजन करना पड़ा।

ऐसे किया लोगों को राजी

जिला जल और स्वच्छता अभियान (डीडब्ल्यूएसएम), कोरापुट के संयोजक देबाशीष पटनायक ने बताया, 'जब हमने ग्रामीणों से अपने घरों में व्यक्तिगत शौचालय निर्माण करने के लिए संपर्क किया तब उनकी प्रतिक्रिया नकारात्मक थी। ग्रामीण शौचालय निर्माण के बिल्कुल खिलाफ थे।' उन्होंने बताया, 'हम दृढसंकल्प थे और हमने कई नुक्कड़ नाटकों, पोस्टर और सचित्र प्रस्तुतियों के जरिए ग्रामीणों को खुले में शौच के बुरे प्रभाव से अवगत कराया।' पटनायक ने बताया कि ग्रामीणों को जब यह एहसास हो गया कि वे खुले में शौच की प्रवृत्ति के कारण ही डायरिया और मलेरिया जैसी विभिन्न तरह की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं तो उन्होंने हमारे सुझाव को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया।

स्वच्छ भारत अभियान से मिली मदद

शौचालयों का निर्माण 'निर्मल भारत अभियान' (दो अक्टूबर से नाम बदलकर 'स्वच्छ भारत अभियान') के तहत किया गया और प्रत्येक के निर्माण में १०,००० रुपये की लागत आई। इसमें ४,५०० रुपए मनरेगा के तहत ४,६०० रुपए डीडब्ल्यूएसएम के तहत प्रदान किए गए। इनमें लाभार्थियों का योगदान ९०० रुपये था।

एब्सल्यूट इंडिया, ३० अक्टूबर २०१४

http://hindi-indiawaterportal-org/node/48308

हमारे घर

इहैव ध्रुवा प्रतितिष्ठ शालेऽश्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छयस्व महते सौभगाय।।

(अथर्व.३।१२।२)

भावार्थः- हमारे घर कैसे हों? हमारे घर टूटे-फूटे न हों। हम झोपड़ियों में न रहें। वेद के अनुसार मनुष्यों को अपने आस-पास के इलाके को स्वच्छ और साफ-सुथरा रखनी चाहिए। इससे मनुष्य आरोग्य को प्राप्त करता है। साथ ही वेद मनुष्यों को विशाल-भवन निर्माण कर उनमें रहने का आदेश देता है। वेद कहता है कि हमारे घर ऐसे दृढ़ हों कि तूफान और वृष्टि, बिजली और भूचाल भी उनका कुछ बिगाड़ न सकें। साथ ही घर इतने विशाल होने चाहिए कि उनमें गाय और घोड़े बांधे जा सकें। उनमें अन्नागार हों, घी और दूध के कोठे हों। मन्त्र में एक आदर्श गृहस्थं का चित्रण खींचा गया है।

१. गृहस्थ के पास अपना भव्य एवं दृढ़ भवन होना चाहिए, जहां चारो और स्वच्छ और सुंदर वातावरण हो।
२. उन्नत किस्म के घोड़े हो सवारी के लिए।
३. दूध पीने के लिए गौ होनी चाहिए।
४. घर के सभी व्यक्ति सत्यवादी और मधुरभाषी हों, तन और चित्त से साफ और स्वच्छ हों।
५. घर अन्न से भरपूर हो; दूध, दही आदि किसी वस्तु का अभाव न हो। ऐसे होने चाहिए हमारे घर!

जानिये क्या है स्वच्छ भारत का मोदी मिशन?

महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने ''स्वच्छ भारत'' का सपना देखा था जिसके लिए वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने २ अक्टूब २०१४ को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की।

इस अभियान का उद्देश्य अगले पांच वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू की १५०वीं जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके। स्वच्छ भारत अभियान, सफाई करने की दिशा में प्रतिवर्ष १०० घंटे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा मृदुला सिन्हा, सचिन तेंदुलकर, बाबा रामदेव, शशि थरूर, अनिल अम्बानी, कमल हसन, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा और तारक मेहता का उल्टाल चश्मा की टीम जैसी नौ नामचीन हस्तियों को आमंत्रित किया गया कि वह भी स्वच्छ भारत अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें, इसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा करें और अन्य नौ लोगों को भी अपने साथ जोड़ें, ताकि यह एक श्रृंखला बन जाएं। आम जनता को भी सोशल मीडिया पर हैश टैग #MyCleanIndia लिखकर अपने सहयोग को साझा करने के लिए कहा गया।

मेरी सरकार (http://mygov.in/) ने एक ऐसा रचनात्मक और सहयोगात्मक मंच प्रदान किया है जो राष्ट्रव्यापी आंदोलन की सफलता सुनिश्चित करता है। यह मंच प्रौद्योगिकी के माध्यम से नागरिकों और संगठनों के अभियान संबंधी प्रयासों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। कोई भी व्यक्ति, सरकारी संस्था या निजी संगठन अभियान में भाग ले सकते हैं। इस अभियान का उद्देश्य लोगों को उनके दैनिक कार्यों में से कुछ घंटे निकालकर भारत में स्वच्छता संबंधी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

एक प्रचारक के रूप में शामिल होने की अपील

आप स्वच्छ भारत अभियान का एक प्रचारक के रूप में हिस्सा बनकर यहाँ पर दिए गए कार्यों को देख सकते हैं या फिर अपना खुद का अभियान शुरू कर सकते हैं।

- मेरी सरकार के सदस्य के रूप में अपना पंजीकरण कराएं।
- अभियान के लिए अपना समय देने की शपथ लें।
- आपके द्वारा किए गए स्वच्छता संबंधी कार्यों के पहले और बाद की तस्वीरें साझा करें।

- इसके लिए आपको पंजीकरण या लॉग इन करना होगा।
- स्वच्छता संबंधी कार्यों में भाग लेने के लिए अन्य लोगों को निमंत्रण भेजें और उन्हें प्रेरित करें।
- आप किसी और का निमंत्रण स्वीकार कर या फिर अपना खुद का अभियान शुरू कर इसका हिस्सा बन सकते हैं।

सरकारी संस्थानों से सहयोग की अपील

सरकारी संस्थान भी निम्न गतिविधियों में हिस्सा लेकर स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दे सकते हैं –

- सरकारी संस्थान स्वच्छता संबंधी पहले और बाद की तस्वीरें एवं वीडियो – बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडो में खुलती है साझा कर इस अभियान में अपना योगदान दे सकते हैं।
- सरकारी संस्थान, जिनके ईमेल में @nic.in या @gov.in आता है, सीधे लॉग इन कर सकते हैं।
- सरकारी संस्थानों द्वारा चलाए गए सफल अभियानों के बारे में जानकारी टाइमलाइन पर साझा की जाएगी। एक साथ मिलकर कार्य करें और सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बनें।
- आप सरकारी संस्थानों की गतिविधयों के बारे में जानकारी https://swachhbharat.mygov.in/ यहाँ से प्राप्त कर सकते हैं।

अन्य संगठनों से भी अभियान को सहयोग देने की अपील

अन्य संगठन से भी यह अपील की गयी कि निम्न गतिविधियों में हिस्सा लेकर स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दे सकते हैं –

- आपके संगठन द्वारा स्वच्छता के लिए किए जा रहे कार्यों और चलाए जा रहे अभियानों के बारे में जानकारी और उससे संबंधित पहले और बाद की तस्वीरें साझा करें।
- अगर आप एक निजी संगठन, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई, सामुदायिक या फिर समाज के एक सदस्य हैं तो आपसे अनुरोध है कि लॉग इन कर अपने संगठन का पंजीकरण कराएं।
- अपने स्वच्छता संबंधी अभियान के माध्यम से अन्य लोगों को इसका हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करें।

स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए एक साथ मिलकर काम करने की अपील

ऐसे लोगों की श्रृंखला बनाने हेतु जो दूसरों को उनके आसपास के स्थान स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित करें, मेरी सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान पोर्टल (https://swachhbharat.mygov.in/) के रूप में एक रचनात्मक और सहयोगात्मक मंच प्रदान किया

है जहाँ प्रतिभागी किसी विशेष स्थान को साफ करने के बाद उसकी पहले और बाद की तस्वीरें साझा कर सकते हैं। पंजीकृत प्रतिभागी को सबसे पहले प्रतिज्ञा लेनी होगी और उसके बाद नौ अन्य व्यक्तियों को उनके आसपास के स्थानों की सफाई करने के लिए आमंत्रित करना होगा। यह कार्य एक निश्चित अवधि में समाप्त हो जाना चाहिए जिसकी जानकारी उन्हें टाइमलाइन (https://swachhbharat.mygov.in/timeline) पर साझा करनी होगी। स्वच्छ भारत समुदाय अधिक-से-अधिक स्वयंसेवकों को इस अभियान से जोड़ेगा जो अपने आसपास के स्थानों में इस अभियान के सफल कार्यन्वयन को सुनिश्चित करेंगे। इन सभी गतिविधियों का उद्देश्य अधिक-से-अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़कर इसे एक जन-आंदोलन बनाना है जिससे २०१९ तक गांधीजी का स्वच्छ भारत का स्वप्न पूरा किया जा सके।

स्वच्छ और हरित भारत का सपना

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक-से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यह सही समय एवं अवसर है। यह अभियान न केवल नागरिकों को स्वच्छता संबंधी आदतें अपनाने बल्कि हमारे देश की छवि स्वच्छता के लिए तत्परता से काम कर रहे देश के रूप में बनाने में भी मदद करेगा। ❍

साभारः https://india.gov.in/hi/spotlight/ स्वच्छ- भारत- अभियान- एक- कदम- स्वच्छता- की- ओर

पहला चैलेन्ज खुद माननीय प्रधानमंत्री ने लिया

किसी भी शुरुआत को करने से पहले खुद अमल में लाना ज्यादा अनिवार्य होता है। महात्मा गांधी का दृढ विश्वास था कि जिस कार्य को करने की अपील हम दूसरों से कर रहे हैं, उस कार्य को हमें खुद पहले शुरू करना होता है। स्वच्छ भारत अभियान की प्रेरणा खुद महात्मा गांधी से लेते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सफाई की शुरुआत खुद की। भारत के इतिहास में २ अक्तूबर २६१४ का वह पल दर्ज हो गया जब भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी दिल्ली स्थित वाल्मीकि मन्दिर में खुद झाडू उठाकार सफाई अभियान की शुरुआत की। सत्तर साल पहले महात्मा गांधी भी इसी जगह से अभियान की शुरुआत किये थे। प्रधानमंत्री ने अपने अभियान की शुरुआत करते हुए नौ लोगों को स्वच्छ भारत अभियान का पहला चौलेन्ज दिया, जिससे इस अभियान को बड़ा बल मिला। जिन नौ लोगों को प्रधानमंत्री ने नामित किया था उनके नाम निम्न लिखित हैं:

१. श्रीमती मृदुला सिन्हा, २. श्री सचिन तेंदुलकर, ३. बाबा रामदेव, ४. डॉ. शशि थरूर, ५. श्री अनिल अम्बानी, ६. श्री कमल हसन, ७. सुश्री प्रियंका चोपड़ा, ८. श्री सलमान खान, ९. तारक मेहता का उल्टा चश्मा टीम

इनके अलावा भी कई स्तरों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा लोगों को नामित किया गया, जिसमे नेताओं एवं समाज के कई क्षेत्रों से जुड़े लोगों के थे। बाकायदे इसके लिए ट्वीटर पर #MycleanIndia हैशटैग भी चला जो कि बहुत असरकारक रहा था।

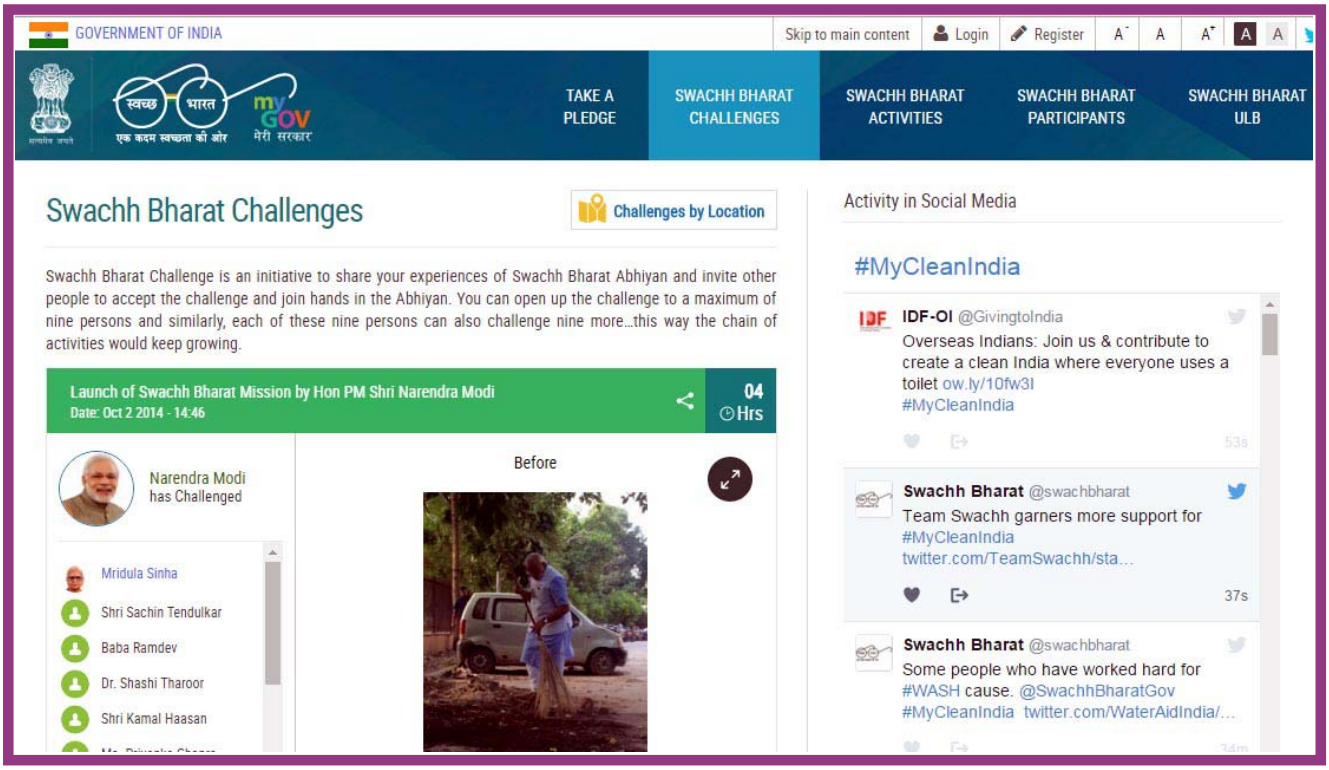

प्रधानमंत्री ने पेश किया उदाहरण

स्वच्छ भारत अभियान के तहत लोगों से सफाई के लिए आगे आने की अपील करते हुए खुद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी इस अभियान के लिए बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए नजर आये। वाल्मीकि मंदिर जाने से पहले वे बिना किसी तय कार्यक्रम के एक पुलिस थाने में पहुंचे और खुद झाड़ू उठाकर सफाई में लग गये। इस देश ने ऐसा दृश्य शायद पहले न देखा हो। अपनी अपील में प्रधानमंत्री ने कहा था कि आप जिस जगह की सफाई करें उसकी दो तस्वीरें, एक सफाई से पूर्व की और दूसरी सफाई के बाद की, टाइम लाईन (https://swachhbharat.mygov.in/timeline) पर साझा करें। इस मुहीम में बहुत सारे लोग आगे आये और सोशल मीडिया पर न जाने कितनी तस्वीरें साझा हुईं और आज भी हो रही हैं।

सफाई करते प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी। पहली तस्वीर सफाई से पूर्व और दूसरी सफाई के बाद की

स्वच्छता अभियान से स्वच्छता आन्दोलन तक

वैसे तो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से दिए अपने भाषण में जब इस अभियान की बात की तो उनका उद्देश्य इस अभियान को घर-घर तक पहुंचाना था। लेकिन अपने रचनात्मक कार्य-प्रणाली एवं अथक एवं सतत परिश्रम के लिये ख्यातिलब्ध श्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों ने इस जनान्दोलन बना दिया। स्वच्छता को भी अन्तराष्ट्रीय मुद्दा बनाया जा सकता है और गांधी के सबसे बड़े सपने को साकार करने का संकल्प किया जा सकता है, यह दृढ निश्चय प्रधानमंत्री से श्री नरेंद्र मोदी ने दिखाया। इसी का परिणाम है कि बड़ी संख्या में आम और खास तबका इस अभियान से जुड़ा और स्वच्छता को जन-सरोकार के मुद्दों में अहम् स्थान मिला। स्वच्छता को अन्तर्राष्ट्रीय विषय बनाने का श्रेय भाजपा-नीत सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को जाता है एवं उन सभी लोगों को भी जो बढ़-चढ़कर इसमें हिस्सा लिए।

मन की बात को मिला जनता का साथ

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर प्रसारित होने वाले अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में लगातार देश भर के विभिन्न व्यक्तियों एवं संगठनों के उन प्रयासों की सराहना की जिससे स्वच्छ भारत अभियान को व्यापक रूप से सफल बनाने में मदद मिली। प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश के हरदा जिले के सरकारी अधिकारियों की एक टीम की स्वच्छ भारत में उनकी भूमिका की सराहना की। प्रधानमंत्री ने बंगलौर के न्यू होराइजन पब्लिक स्कूल के उन पांच छात्राओं की भी प्रशंसा की जिन्होंने अपशिष्ट खरीदने और बेचने के लिए एक मोबाइल आधारित एप्लीकेशन बनाई।

आईसीआईसीआई बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, एक्सएलआरआई जमशेदपुर और आईआईएम-बंगलुरु जैसे संगठनों ने बड़े पैमाने पर साफ-सफाई अभियान शुरू किया और आम जनों को सफाई के लिए जागरूक किया।

श्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया के माध्यम से हमेशा ही लोगों की भागीदारी की खुलकर तारीफ की है। श्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में 'मिशन प्रभुघाट' पहल के लिए तेमसुतुला इमसोंग, दर्शिका शाह और स्वयंसेवकों के एक दल के प्रयासों की सराहना की।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत '#MyCleanIndia' का भी शुभारंभ किया गया ताकि देश भर में सफाई कार्य करने वाले लोग अपने कार्यों को सबके सामने रख सकें।

स्वच्छ भारत अभियान लोगों का जोरदार समर्थन पाकर 'जन आंदोलन' बन गया। आम नागरिक भी बड़ी संख्या में आगे आए और उन्होंने साफ-सुथरे भारत का प्रण लिया। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत के बाद सड़कों की सफाई के लिए हाथों में झाड़ू थामना, सफाई पर ध्यान केंद्रित करना और स्वच्छ माहौल बनाने की कोशिश लोगों की आदत बन गई। लोग इस अभियान में शामिल हो रहे हैं और इस संदेश को फैलाने में मदद कर रहे हैं कि 'ईश्वर की भक्ति के बाद स्वच्छता सबसे बड़ी भक्ति है'।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण, सामुदायिक शौचालय और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत स्तर पर पारस्परिक संवाद, कार्यान्वयन और वितरण तंत्र को मजबूती के साथ-साथ लोगों में व्यावहारिक बदलाव पर जोर दिया गया है और राज्यों को यह छूट दी गई है कि वे वितरण तंत्र को इस तरह से डिजाईन करें कि उसमें स्थानीय संस्कृतियों, प्रथाओं, उनके भावों एवं मांगों का ध्यान रखा गया हो। शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि में २,००० की वृद्धि करते हुए इसे १०,००० से १२,००० कर दिया गया है। ग्राम पंचायतों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए भी राशि आवंटित की गई है। ❍

রামশম্ভু

CELKON

साभार: एनडीटीवी डॉट कॉम

स्वच्छ भारत से शौचालय बनाने के संकल्प तक.....

यह कहते हुए बड़ा दुख होता है कि देश में लोगों का खुले में शौच करना एक बड़ी समस्या है। भारत में ७२ प्रतिशत से ज्यादा ग्रामीण लोग शौच के लिए झाड़ियों के पीछे, खेतों में या सड़क के किनारे जाते हैं। इससे अन्य कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जैसे बच्चों की असमय मौत, संक्रमण और बीमारियों का फैलना और सबसे अहम सुनसान स्थान पर शौच के लिए गई युवतियों का बलात्कार। भारत की आबादी १.२ बिलियन है और उसमें से करीब ६०० मिलियन लोग या ५५ प्रतिशत के पास शौचालय नहीं है। उन ग्रामीण इलाकों में जहां शौचालय है वहां भी पानी की उपलब्धता नहीं है। शहरों में झुग्गी में रहने वालों के पास ना तो पानी की आपूर्ति है ना शौचालय की सुविधा।

इस अभियान का लक्ष्य भारत में खुले में शौच की समस्या को रोकना, हर घर में शौचालयों का निर्माण करना, पानी की आपूर्ति करना और ठोस और तरल कचरे का उचित तरीके से खात्मा करना है। इस अभियान में सड़कों और फुटपाथों की सफाई, अनाधिकृत क्षेत्रों से अतिक्रमण हटाना शामिल हैं। इस सबके अलावा इस अभियान में लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक करना भी शामिल है।

यह कब पूरा होगा?

भारत सरकार ने राजनीतिक दलों, गैर सरकारी संगठनों, निगमों और सक्रिय लोगों की भागीदारी से स्वच्छ भारत अभियान को सन् २०१९ तक पूरा करने का लक्ष्य रखा है। महात्मा गांधी ने हमेशा स्वच्छता पर बहुत जोर दिया। उनका कहना था कि स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी है। वह भारत को स्वच्छ भारत के तौर पर देखना चाहते थे। वह ग्रामीण लोगों की दयनीय हालत से पूरी तरह वाकिफ थे। भारत की आजादी को ६७ साल हो गए पर अब भी देश की आधी से ज्यादा आबादी के पास उचित शौचालय नहीं है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर भारत सरकार महात्मा गांधी के इस सपने को पूरा करना चाहती है और देश को सन् २०१९ तक साफ करना चाहती है। सन् २०१९ में महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती है।

सरकार के प्रयास

स्वच्छ भारत अभियान को सही तरीके से लागू करने के लिए १९ सदस्यीय विशेषज्ञ समिति बनाई गई है। इस समिति के अध्यक्ष वैज्ञानिक रघुनाथ अनंत माशेलकर हैं। माशेलकर वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक हैं। समिति विभिन्न राज्यों में स्वच्छता

और पानी की सुविधा देने के सबसे श्रेष्ठ और आधुनिक तरीकों पर सुझाव देगी। यह सुझाव सस्ते, टिकाउ और उपयोगी होंगे। २ अक्टूबर २०१४ को जब पीएम ने यह अभियान शुरु किया तब उनके साथ पार्टी अधिकारी, बॉलीवुड कलाकार आमिर खान, हजारों सरकारी कर्मचारी, स्कूल और कॉलेज के छात्र थे। प्रधानमंत्री को उनके कैबिनेट मंत्रियों का भी भरपूर सहयोग मिला। इसे जनआंदोलन बनाने के लिए उन्होंने नौ लोगों को सफाई की चुनौती लेने के लिए नामांकित किया, जिनमें प्रियंका चोपड़ा, शशि थरुर, सचिन तेंदुलकर और अनिल अंबानी शामिल हैं। इन नौ लोगों को और नौ लोगों को यह चुनौती देनी होगी। इस प्रकार इससे लोग जुड़ते जाएंगे। इन लोगों ने इस चुनौती को स्वीकार किया है और अन्य लोगों से जुड़ने की अपील की है। इस मुहिम में कुछ राज्यों ने भी भाग लिया है और कई अन्य कार्यक्रम और योजनाएं इस अभियान को सफल बनाने के लिए तैयार की जा रही हैं।

परियोजना का क्रियान्वयन

स्वच्छ भारत अभियान के दो उप अभियान हैं:

- स्वच्छ भारत अभियान ग्रामीण
- स्वच्छ भारत अभियान शहरी

इन दो उप अभियानों के लिए पेयजल और स्वच्छता और ग्रामीण विकास के मंत्रालय ग्रामीण इलाकों में इसकी जिम्मेदारी लेंगे और शहरी विकास मंत्रालय शहरों में इस मिशन की देखभाल करेगा।

ग्रामीण क्षेत्रः स्वच्छ भारत अभियान के तहत ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण विकास मंत्रालय हर गांव को अगले पांच सालों तक हर साल २० लाख रुपये देगा। इस अभियान के तहत सरकार ने हर परिवार में व्यक्तिगत शौचालय की लागत १२,००० रुपये तय की है ताकि सफाई, नहाने और कपड़े धोने के लिए पर्याप्त पानी की आपूर्ति की जा सके। अनुमान के मुताबिक पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय द्वारा इस अभियान पर १,३४,००० करोड़ रुपये खर्च किये जाएंगे।

शहरी क्षेत्रः स्वच्छ भारत अभियान के लिए शहरी क्षेत्र में हर घर में शौचालय बनाने, सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाने, ठोस कचरे का उचित प्रबंधन करने और ४,०४१ वैधानिक कस्बों के १.०४ करोड़ घरों को इसमें शामिल करने का लक्ष्य है। इसमें सार्वजनिक शौचालय की दो लाख से ज्यादा सीट, सामुदायिक शौचालय की दो लाख से ज्यादा सीट मुहैया कराने और हर कस्बे में ठोस कचरे का उचित प्रबंधन करना शामिल है। वह कुछ क्षेत्र जिनमें घरेलू शौचालय बनाने में समस्या है वहां सामुदायिक शौचालय बनाए जाएंगे। आम स्थानों जैसे बाजार, बस अड्डे, रेलवे स्टेशन के पास, पर्यटक स्थलों पर और सार्वजनिक मनोरंजन स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय की सुविधा दी जाएगी। शहरी विकास मंत्रालय ने इस मिशन के लिए ६२,००० करोड़ रुपये आवंटित किये हैं।

लागतः पूरी परियोजना की अनुमानित लागत १,९६,००९ करोड़ रुपये है। इस राशि से देश में १२ करोड़ शौचालय बनाए जाएंगे। ग्रामीण और शहरी विकास मंत्रालयों ने धार्मिक गुरुओं और समूहों जैसे श्री श्री रविशंकर और गायत्री परिवार से स्वच्छ भारत अभियान में शामिल होने का अनुरोध किया है।

स्वच्छ भारत अभियान के प्रमुख मुद्दे

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार शहरी भारत में हर साल ४७ मिलियन टन ठोस कचरा उत्पन्न होता है। इसके अलावा यह भी बताया गया है कि ७५ प्रतिशत से ज्यादा सीवेज का निपटारा नहीं होता है। ठोस कचरे की रिसाइकलिंग भी एक बड़ी समस्या है। भविष्य में बड़ी समस्या से बचने के लिए इन मुद्दों का निपटारा आज किया जाना जरुरी है।

- ग्रामीण भारत में साफ सफाई की कमी एक बड़ी चुनौती है।
- एक अन्य बड़ी चुनौती लोगों की सोच बदलना है। हमारे देश के लोग सड़क पर कचरा ना फेंकना कब सीखेंगे? या लोग खुद को और अपने इलाके को साफ रखना कब सीखेंगे?
- स्वच्छता की कमी की समस्या इतनी विकराल है कि सन् २०१९ तक का प्रधानमंत्री का लक्ष्य पूरा हो पाएगा इसका आश्चर्य होता है?

स्वच्छ भारत अभियानः तथ्य और आंकड़े

- परियोजना की लागतः १,९६,००९ करोड़ रुपये
- परियोजना शुरु होने की तारीखः २ अक्टूबर २०१४
- परियोजना खत्म होने की तारीखः २ अक्टूबर २०१९
- परियोजना में शामिल मंत्रालयः शहरी विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, राज्य सरकार, गैर सरकारी संगठन, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, निगम आदि।
- परियोजना का लक्ष्यः भारत को पांच सालों में गंदगी से मुक्त देश बनाना। ग्रामीण और शहरी इलाकों में सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाना और पानी की आपूर्ति करना। सड़कें, फुटपाथ और बस्तियां साफ रखना और अपशिष्ट जल को स्वच्छ करना।

कितना काम पूरा हुआ?

अगस्त २०१५ में सरकार की तरफ से कहा गया कि पिछले वर्ष 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत के बाद से शौचालयों के निर्माण में ४४६ प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा ४६ प्रतिशत ग्रामीण घरों में अपने शौचालय हैं। पेयजल एवं स्वच्छता राज्यमंत्री रामकृपाल यादव ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में राज्यसभा को बताया कि छह अगस्त की स्थिति के अनुसार

मंत्रालय की ऑनलाइन निगरानी प्रणाली पर राज्यों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के हिसाब से ४६.०१ प्रतिशत ग्रामीण घरों में शौचालय हैं।

उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के तहत दो अक्तूबर २०१९ तक स्वच्छ भारत को हासिल करने का लक्ष्य है। एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि वर्ष २०१४-१५ में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत के बाद शौचालयों के निर्माण में ४४६ प्रतिशत की वृद्धि हुई है और जो नतीजे की उम्मीद की जा रही थी उसके मुकाबले हासिल परिणाम कहीं अधिक है।

❍

(इस लेख के तथ्यों और तमाम हिस्सों को http://hindi.mapsofindia.com/government-of-india/swachh-bharat-abhiyan.html वेबसाईट से लिया गया है)

Swachh Bharat Abhiyan in Railway

Aiming to eliminate direct discharge toilets from its entire fleet of passenger coaches by 2020-21, Railways has drawn up an action plan to replace them with environment-friendly bio-toilets. "While 17,338 existing toilets in trains have been replaced with bio-toilets till date, our aim is to equip the entire coaching fleet with bio-toilets," said a senior Railway Ministry official involved with the project. According to the action plan, all new coaches would be fitted with bio-toilets by 2016-17, while the retrofitting of existing coaches with bio-toilets will continue. For the 2015-16 fiscal, Railways has set the target to fit 17,000 bio-toilets in long-distance trains as part of its 'Swachh Rail – Swachh Bharat' programme. Direct discharge of human waste from the existing toilet system in trains causes corrosion of the tracks, costing the public transporter in crores to replace the rail tracks. The new-age green toilets have been designed by Railways along with Defence Research and Development Organisation (DRDO) keeping in mind the requirements of Indian trains. The bio-toilets are fitted underneath the lavatories and the human waste discharged into them is acted upon by a particular kind of bacteria that converts it into non-corrosive neutral water. While the process of fitting 10,500 bio-toilets in new coaches is in progress, the target for the 2015-16 fiscal is 17,000 bio-toilets. The Railways is also working towards improving the condition of toilet facilities at stations and in trains as it has been receiving several complaints from passengers regarding lack of cleanliness at these facilities. The official said the aim is to make Swachh Rail the driving force behind the governments flagship programme – Swachh Bharat Abhiyan. Railways, which have launched a cleanliness drive across the country, has collected a fine of Rs 4 crore in the last six months against spoiling and littering railways stations across the country. ❍

Article content Published in indian express

इन गांवों में पूरा हुआ गाँधी के सपनों का संकल्प

कबीरधाम जिले का ग्राम कनवाटोला हुआ खुले में शौच मुक्त ग्राम

कवर्धा, १६ जुलाई २०१५। कबीरधाम जिले के विकासखण्ड सहसपुर लोहारा के ग्राम पंचायत मोतिमपुर के आश्रित गांव कनवाटोला खुले में जिले का पहला शौचमुक्त(ओडीएफ) घोषित किया गया है। इस गांव के सभी ग्रामीणों के घरों में स्वच्छ भारत अभियान के तहत शौचालय का निर्माण किया गया है।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर श्री पी.दयानंद ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम पंचायत मोतिमपुर का आश्रित ग्राम कनवाटोला जो आदिवासी बाहुल्य है आज खुले में शौचमुक्त हो रहा है। यह ग्रामीणों के लिये बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने ग्रामीणों को बधाई दी और कहा कि देश के प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत अभियान चलाया जा रहा है। उसे ध्यान में रखकर जिले में भी खुले में शौचमुक्त का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शौचालय की व्यवस्था नहीं होने से घर की माताओं और बहनों को तमाम तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, उन्हें बरसात के समय कीड़े-मकोड़े, सांप आदि का डर रहता है, वहीं जंगली जानवारों का भी भय रहता है। माताओं, बहनों की सम्मान और स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए शौचालयों का निर्माण कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यहां शौचालय बन जाने से ग्रामीणों को काफी राहत मिलेगी। जिला कलेक्टर ने इन सभी निर्मित शौचालयों के उपयोग करने की सलाह दी। साथ ही उन्ह पानी की व्यवस्था बनाये रखने के लिये कहा। उन्होंने बच्चों और महिलाओं से विशेष आग्रह किया कि वे अपने घर के हर सदस्य को शौचालय उपयोग के लिये प्रेरित करें और उनके व्यवहार में परिवर्तन लायें। इस अवसर पर ग्रामीणों ने नहर लाईनिंग निर्माण, आंगनबाड़ी केन्द्र भवन निर्माण की मांग की, जिसके लिये जिला कलेक्टर ने तत्काल कार्यवाही हेतु जिला पंचायत सीईओ को निर्देश दिये। बताया गया कि गांव में नाडेप टैंक बना हुआ है। जिला कलेक्टर ने यह भी कहा स्वच्छता के इस मिशन के संदेश को सभी ग्रामीणजन और बच्चें अपने पड़ोसी के गांव में भी पहुंचाये और पूरे पंचायत को खुले में शौचमुक्त करने का संकल्प लें। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने ग्रामवासियों को साल और श्रीफल देकर सम्मानित किया साथ ही उन्होंने सभी ग्रामवासियों को स्वच्छता बनाये रखने और स्वच्छता का संदेश देने के संकल्प शपथ दिलायी। उन्होंने निर्मित शौचालयों का निरीक्षण भी किया। उल्लेखनीय है कि स्वच्छ भारत अभियान के तहत जिले के विभिन्न ग्रामों में मनरेगा की राशि से शौचालयों का निर्माण किया जा रहा है।

उत्तर बस्तरः कांकेर जिले का पहला खुले में शौचमुक्त गाँव बना गढ़पिछवाड़ी

उत्तर बस्तर (कांकेर) जून २०१५।। ग्राम पंचायत के सरपंच और ग्रामीणों की प्रतिबद्धता, दृढ़ निश्चय, अनवरत प्रयास और सहयोग से कांकेर जिले के विकास खंड कांकेर के ग्राम

गढ़पिछवाड़ी जिले का पहला खुले में शौच मुक्त गाँव बन गया है। खुले में शौच से शत्प्रतिशत मुक्ति के बाद आज एक कार्यक्रम आयोजित कर औपचारिक रूप से ग्राम गढ़पिछवाड़ी को खुले में शौच मुक्त ग्राम घोषित किया गया । इस कार्यक्रम में ग्रामीणों ने अपने ग्राम का ''क्लीन अप चकाचक गढ़पिछवाड़ी'' नामकरण किया। इस अवसर पर शाला में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का स्वागत किया गया और उन्हें निःशुल्क गणवेश, पाठ्यपुस्तक वितरित किया गया। इस अवसर पर जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा पौधारोपण किया गया। गढ़पिछवाड़ी के लोगों की जागरूकता सराहनीय- कलेक्टर- कलेक्टर श्रीमती शम्मी आबिदी ने गढ़पिछवाड़ी को जिले का पहला खुले में शौच मुक्त ग्राम घोषित होने पर ग्रामीणों की जागरूकता की प्रशंसा करते हुए सरपंच, पंचों और ग्रामीणों को बधाई दी। कलेक्टर ने कहा कि गढ़पिछवाड़ी के लोगों ने अनुकरणीय कार्य किया है। उन्होंने अन्य पंचायतों के प्रतिनिधियों का आव्हान कर कहा कि वे गढ़पिछवाड़ी को खुले में शौच मुक्त ग्राम बनाने के कार्यों का अनुसरण करें और अपने ग्राम को स्वच्छ, निरोग ग्राम बनाने दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करें। उन्होने कहा कि यह कार्यक्रम निरंतर जिले के सभी ग्रामों में आयोजित किये जायेंगे।

सम्पूर्ण देश सहित कांकेर जिले के सभी विकासखण्डों में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत विभिन्न जागरूकता अभियान चलाये जा रहे है। ग्राम गढ़पिछवाड़ी के सरपंच श्री तारेन्द्र भण्डारी और सभी ग्रामवासियों के लोगों में व्यक्तिगत स्वच्छता एवं स्वच्छ ग्राम बनाने की जागरूकता पैदा हुई है। ग्राम पंचायत गढ़पिछवाड़ी के सभी घरों में शौचालय निर्माण कर उसका उपयोग प्रारंभ किया जा चुका है। यहां खुले में शौच की कुप्रथा को समाप्त करने में सफलता हासिल हुई है। इस अवसर पर कांकेर के विधायक श्री शंकर ध्रुवा, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा देवी सलाम, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती धीरज नेताम, जनपद पंचायत कांकेर की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा सलाम, उपाध्यक्ष श्री विशेष कोर्राम, श्री राजेश भास्कर, सरपंच श्री तरेन्द्र भण्डारी, कलेक्टर श्रीमती शम्मी आबिदी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री चंदन कुमार, एस.डी.एम. सुश्री रेणुका श्रीवास्तव, स्वच्छ भारत मिशन के सहायक परियोजना अधिकारी श्री रमेश कुमार ठाकुर, कु. दिव्या वार्ल्यानी, बाल मुकुन्द देवांगन, पंचागण और बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित होकर खुले में शौच जैसे सामाजिक बुराई पर विजय पाने का जश्न मनाया ।

रायपुर : खुले में शौच की बुराई से मुक्त हुआ 'टीपाखोल'

रायपुर, २४ अप्रैल २०१५।। स्वच्छ भारत मिशन के तहत छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले का ग्राम टीपाखोल खुले में शौच की सामाजिक बुराई से पूरी तरह मुक्त हो गया है। वहां के लोगों ने अपने गांव को हमेशा साफ-सुथरा रखने का संकल्प लिया है। ज्ञातव्य है कि छत्तीसगढ़ में स्वच्छ भारत मिशन के तहत सभी २७ जिलों में क्रियाशील जिला जल एवं स्वच्छता समिति के जरिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी सिलसिले में रायगढ़ जिले में यह अभियान पूरे जोर-शोर से चलाया जा रहा है। चिन्हांकित गांवों में खुले में शौच की समस्या पर नियंत्रण पाने के लिए प्रयास शुरू कर दिया गया है। जिला प्रशासन की इस विशेष पहल से रायगढ़ जिला

मुख्यालय से सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्राम 'टीपाखोल' ग्रामीणों की भागीदारी से जिले का प्रथम 'खुले में शौचमुक्त ग्राम' बन गया है। जिले में संचालित अभियान से जहां व्यक्तिगत शौचालय निर्माण में वृद्धि हुई है, वहीं जनमानस में स्वच्छता संबंधी व्यवहार में भी परिवर्तन आया है। अब लोग घरों में शौचालय का निर्माण कर उसका सौ फीसदी उपयोग करने लगे हैं। १८ फरवरी २०१५ से शुरू इस अभियान से टीपाखोल के ग्रामीणों ने महज एक माह में ही प्रत्येक घरों में शौचालय बना लिया है। इस गांव के लोगों ने अपने घर और गावं हमेशा स्वच्छ रखने की ठानी है।

उत्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस २०१४ के अपने उद्‌बोधन में महात्मा गांधी को याद करते हुए कहा था कि गांधी जी को साफ-सफाई बहुत पसंद थी। गांव-गांव, शहर-शहर, गली, मुहल्ले, स्कूल, अस्पताल आदि सभी जगहों पर गंदगी को दूर करने के गांधी जी के सपने को वर्ष २०१९ तक पूरा किया जाना है। इसी उददेश्य को ध्यान में रखकर छत्तीसगढ़ में यह अभियान जोर-शोर से चलाया जा रहा है।

स्वच्छ भारत अभियान के राज्य समन्वयक ने बताया कि रायगढ़-खरसिया मुख्य मार्ग पर ब्रिटिशकालीन विशाल जलाशय के बीच बसे टीपाखोल गांव में मात्र ७७ परिवार निवास करते हैं। यहां की जनसंख्यां २५३ हैं। आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा की दृष्टि से यह गांव काफी पिछड़ा हुआ माना जाता था। ग्रामीण पहले खुले में ही शौच के लिए जाते थे। जिला प्रशासन द्वारा खुले में शौच मुक्त गांव बनाने के लिए क्षेत्रीय पंचायत एवं ग्रामीण विकास प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण दिया गया। जिला प्रशासन रायगढ़ के इस अभियान से प्रभावित होकर ग्रामीणों ने अपने घर में शौचालय बनाने की ठानी और खुले में शौच करने को बायकाट किया। ग्रामीणों का यह प्रयास प्रशासन के सहयोग से पूर्ण हो गया। आज रायगढ़ जिले में इस गांव की चर्चा स्वच्छता में महृडल ग्राम के रूप में होती है। अभियान को आगे बढ़ाते हुए अब ग्राम गढ़कुर्री, डीपापारा(कोतरलिया), कुशवाबहरी आदि गांवों को चिन्हाकिंत कर स्वच्छ व निर्मल गांव बनाने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब रायगढ़ के सभी चिन्हांकित गांव खुले में शौच मुक्त गांव बन जाएंगे। ❍

स्वच्छता को लेकर लोगों में आई है जागरूकता

● आदर्श तिवारी

जबसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सत्ता की कमान संभालें हैं, एक के बाद एक ऐसी योजनाओं का शुभारम्भ किया है, जो जनता से सीधे तौर पर सरोकार रखतीं हैं। उनमे से सबसे प्रमुख स्वच्छ भारत अभियान है। प्रधानमंत्री मोदी ने २ अक्टूबर २०१४ को गाँधी जयंती के अवसर पर इस योजना को आरंभ किया था। जाहिर है कि इस योजना को २०१९ तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। योजना को आरम्भ करने से पहले १५ अगस्त २०१४ को स्वतंत्रता दिवस के दिन जब प्रधानमंत्री ने स्वच्छता और शौचालय की बात कहीं थी तो आलोचकों ने उनपर जमकर निशाना साधा की लाल किले के प्राचीर से किसी प्रधानमंत्री को शौचालय का जिक्र करना शोभा नही देता, किंतु आलोचना से परे मोदी ने इस अभियान को एक मिशन बनाने का संकल्प लिया और इसमें काफी हद तक सफल भी हुए हैं। दरअसल स्वच्छ भारत अभियान एक ऐसी योजना है, जिसनें लोगो को सफाई संबंधी आदतों को बेहतर बनाना एवं लोगो को गंदगी से होने वाले दुष्प्रभावों के बारें में बताना है। प्रधानमंत्री इस बात को बखूबी जानतें है कि अगर भारत को स्वच्छ बनाना है तो इसके लिए सबसे जरूरी बात है यह है कि इस योजना को जन -जन तक पहुँचाया जाए बगैर जन-जागरूकता के इस मिशन को पूरा नही किया जा सकता। इसको ध्यान के रखतें हुए सरकार ने कई चर्चित हस्तियों को स्वच्छ भारत अभियान का ब्रांडअंबेसडर बनाया ताकि ये लोग जनता को स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूक कर सकें। समय-समय पर ये सेलिब्रेटी सोशल मीडिया के माध्यम से सफाई करते हुए तस्वीर साझा करते हुए लोगो को स्वच्छता के प्रति जागरूक करतें है। इन सब के बीच प्रधानमंत्री मोदी ने इस अभियान को लेकर जिसप्रकार की इच्छाशक्ति दिखाई है, वो वाकई काबिलेतारीफ है। कई बार प्रधानमंत्री सफाई के लिए खुद झाड़ू उठा लेतें है और इस बात पर विशेष जोर देतें है कि सफाई के लिए पद की गरिमा कोई मायने नही रखती। आप अपनी सफाई लिए लिए स्वयं प्रतिबद्ध हों। खैर जब इस योजना की शुरुआत हुई थी तो लोगों ने तमाम प्रकार के सवाल उठायें थे। उसमे प्रमुख सवाल स्वच्छ अभियान पर खर्च होने वाले बजट को लेकर था कि इतना पैसा कहाँ से आएगा? बता दें कि सरकार ने इस योजना के लिए ६२,००९ करोड़ का बजट रखा ग्या है, जिसमें केंद्र सरकार की तरफ से १४६२३ करोड़ रुपये उपलब्ध कराएँ जायेंगे जबकि ५,००० करोड़ रुपये का योगदान राज्यों को देना होगा। इसके बाद शेष राशि की व्यवस्था पीपीपी व स्वच्छ भारत कोष आदि से प्रबंध किया जायेगा। गौरतलब है कि इस अभियान की सफलता का मुख्य पहलु ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रो में सभी घरों में शौचालय उपलब्ध कराना है। भारत की ७५ करोड़ आबादी गावों में रहती है लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के छह दशक बाद भी इनमें से ५० करोड़ के पास आज भी शौचालय नही है। वर्तमान सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान के तहत सबको शौचालय बनवाने की बात कहीं है तथा इसको लेकर सरकार बेहद सक्रिय है। इसका अंदाजा इस बात से

लगाया जा सकता है कि पिछली सरकार द्वारा शौचालय के लिए मिलने वाले प्रोत्साहन राशि को भाजपा सरकार ने ९००० हजार रूपये से बढ़ाकर १२००० रूपये कर दिया ताकि लोगों पर शौचालय बनाने में पड़ने वाले आर्थिक बोझ से निजात मिल सके। इस प्रकार खुले में शौच से फैल रही गंदगी को रोकने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। जाहिर है कि स्वच्छता के अभाव में तमाम प्रकार की बीमारीयाँ जन्म ले रहीं है और इसकी जद में आकर लोग काल के गाल में समा जा रहें है। आम-जनमानस के लिए ये गौरव की बात है कि विगत साठ सालों से हम लगातार बीमारियों को जन्म दे रहें थे परंतु उसके सबसे प्रमुख और सबसे छोटे कारण की तरफ ध्यान नही दे पा रहें थे। अमूमन हम अपने घर के कचरे को कहीं दूर न ले जाकर कहीं आस-पास ही फेक देते है, जिससे उस क्षेत्र मे कचरा इकट्ठा होने के कारण मख्खियाँ तथा स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाने वालें विषैले कीटाणु जन्म लेतें है। जो स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है। किंतु, प्रधानमंत्री मोदी ने सबका ध्यान उस तरफ आकृष्ट किया और लोगो को बताया कि सबसे ज्यादा जरूरी अपने गली, गावं, घर तथा दफ्तर को साफ रखना है। इस योजना के आने के पश्चात् स्वच्छता को लेकर लोगों में भारी जागरूकता आई है। लोग और स्वच्छता को लेकर सजग है। उससे भी बड़ी बात ये निकल कर सामने आई है कि लोग दूसरों को भी इस विषय पर जागरूक कर रहें है। स्वच्छता के लाभ को अपने दोस्तों व मित्रों के साथ साझा कर रहें है। सार्वजनिक जगहों पर गंदगी फैलाने से बच रहें है। इन सब बातों से स्पष्ट होता है कि जिन उद्देश्यों के साथ सरकार ने इस योजना को शुरू किया था वो अभी तक सही दिशा की ओर बढ़ रहा है। बहरहाल इस योजना का राजनीतिकरण करनें से विपक्ष बाज नही आ रहा है। बार -बार इस योजना को लेकर तमाम प्रकार की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा हो रहीं हैं, जिसमें कुछ स्थानों पर गंदगी हैएउन तस्वीरों के जरिये विपक्ष द्वारा ये बताया जा रहा है कि स्वच्छ भारत अभियान महज एक दिखावा है। इसे विपक्ष की छुद्र मानसिकता ही कहेंगे क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार स्वच्छ भारत अभियान को राजनीति से या सरकार से नही जोड़ने की बात कही है। लेकिन सरकार की एक के बाद एक सफल होती योजनाओं से हताश विपक्ष इसमें सहभागिता के बजाय राजनीति करने पर तुला हुआ है। बहरहालएजबसे इस योजना की शुरुआत हुई है, स्वच्छता को लेकर व्यापक स्तर पर सुधार हुए है। मसलन आज रेलवे स्टेशनों पर साफ-सफाई का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है, ट्रेनों में शौचालय की सफाई नियमित रूप से होती है। अस्पतालोंएबस अड्डो शिक्षण संस्थानों समेत सभी क्षेत्रों में इस अभियान का व्यापक असर देखने को मिल रहा है। इस प्रकार सब जगह पर चर्चा के केंद्र में स्वच्छ भारत अभियान है। हर्ष की बात ये है कि यह योजना फाइलों तक सिमटने की बजाय धरातल पर दिख रही है। लेकिन २०१९ तक इस अभियान को पूरा तभी किया जा सकता है। जब स्वच्छता के प्रति लोगो को और जागरूक किया जा सके और केंद्र सरकार इस इस अभियान को लेकर काफी गंभीर है किंतु राज्य सरकारों और नगर निगमों की उदासीनता चिंतनीय है। ❍

कचरा सिर्फ सड़क पर नहीं होता

● न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

स्वच्छ भारत अभियान या सफाई के कार्यक्रम का स्वागत इसलिए करना चाहिए क्योंकि यह ''फैशनेबल इवेंट'' नहीं, बल्कि प्रायश्चित का कार्यक्रम है। 'झाडू' गांधी की सामाजिक विषमता तथा जात-पात पर आधारित ऊंच-नीच की भावना समाप्त करने वाली सामाजिक क्रांति का प्रतीक थी। वैसे भी क्रांति का अंकगणित नहीं होता, 'प्रतीक' होते हैं। झाडू या सफाई का कार्यक्रम जाति निवारण का वर्ग निराकरण का भी प्रतीक था।

उस क्रांति के पीछे भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व भावना निर्माण करना, जो धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव के परे हो, की भावना थी। असमानता में विश्वास रखने वालों के लिए स्वच्छता अभियान अखबार की खबर और हाथ में झाडू लेकर फोटो का पोज छपवा लेने का कार्यक्रम है। सफाई कामगार को तो आज पीने के लिए स्वच्छ पानी भी नसीब नहीं होता। जिनके मन 'स्वच्छ' नहीं होंगे, उनके लिए यह 'स्वच्छता अभियान' गांधी के क्रांति के प्रतीक झाडू की जगह नहीं ले पाएगा।

इससे उस अभियान के पीछे की भावना ही लुप्त हो जाएगी। शेष बचेगी सिर्फ शासकीय औपचारिकता। हमारे समाज में आज सफाई कामगार से गंदगी और कचरा करने वाले उच्चवर्णीय और उच्चवर्गीय लोगों की प्रतिष्ठा अधिक है।

विसंगति और विरोधाभासी जात-पात पर आधारित सामाजिक विषमता जब तक समाप्त नहीं होगी, तब तक यह अभियान 'प्राणदायी' नहीं बनेगा। इस अभियान की ''एकला चलो रे'' की घोषणा भी स्वागत योग्य है। गांधीजी भी व्यक्तिगत चारित्र्य और व्यवहार पर जोर देते थे।

सफाई में विश्वास रखने वालों को स्पष्ट करना होगा कि वे जातिभेद या वर्गभेद पर आधारित विषमता को अपने निजी जीवन में स्थान नहीं देंगे और न ही उसमें शामिल होंगे। साथ ही "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है", मानने वाले गांधीजी की विचारधारा और जीवनप्रणाली का निजी तथा सार्वजनिक जीवन में पालन करेंगे।

वे लोग उन मंदिरों में नहीं जाएंगे, जहां स्त्री और दलित को प्रवेश नहीं है। गांधीजी स्वयं उस विवाह समारोह में भी हाजिर नहीं रहते थे, जिसमें शादी का एक पक्ष हरिजन न हो। इसीलिए वे महादेव भाई देसाई के पुत्र नारायणभाई के विवाह में उपस्थित नहीं हुए। स्वच्छता अभियान जब मन की शुद्धि और हरिजन सेवा का कार्यक्रम बनेगा, तभी तो 'मन शुद्ध' होगा और स्वच्छ मन से स्वच्छता के अभियान में शरीक होने का अधिकार प्राप्त होगा।

वैसे भी सभी के पाप धोते-धोते आज गंगा भी मैली हो गई है। भारत में सार्वजनिक सड़कें'कचरा डालने के लिए और गंदगी करने के लिए तो अपने बाप की है, लेकिन साफ करने के लिए वह किसी के भी बाप की नहीं है।' यह है "मातृभूमि" या भारत की स्थिति।

'हरिजन' शब्द का उपयोग तो महात्मा गांधी के पूर्व संत नरसी मेहता ने भी किया है, जो नागर ब्राह्मण थे। उनकी भी निकटता हरिजनों से थी। झारखंड मुक्ति आंदोलन के नेता तथा सांसद शैलेन्द्र महतो के अनुसार हरिजन शब्द का सर्वप्रथम उपयोग महर्षि वाल्मीकि ने किया है, जो स्वयं अस्पृश्य थी।

गांधीजी ने 'हरिजन-सेवा' का कार्यक्रम स्थापित किया। वे जानते थे एक का उद्धार दूसरा नहीं कर सकता। गांधीजी जानते थे कि स्वयं मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता। हरिजन-सेवा का उनका कार्यक्रम सवर्णों के उद्धार के लिए था। झाड़ू के माध्यम से शौचालय-सफाई का कार्य प्रतिदिन वे स्वयं और आश्रमवासी करते थे। वे मानते थे कि पीढ़ियों से समाज के एक वर्ग को अस्पृश्य मानने वाले सवर्णों को प्रायश्चित के रूप में हरिजन सेवा करनी चाहिए। हरिजन वास्तव में हरिजन यानी भगवान के पुत्र हैं। उच्च वर्ग के लोगों का स्वच्छ और पवित्र जीवन अस्पृश्यों की ही देन है।

गांधीजी मानते थे कि जब सफाई कर्मचारियों के हाथ में भागवद् गीता और ब्राह्मणों के हाथ में झाड़ू आएगी, तब अस्पृश्यता मिटकर सामाजिक समता निर्मित होगी।

यह प्रश्न भी उठा कि यदि हरिजन भगवान के बालक हैं, तो क्या बाकी के सब दुर्जन या शैतान की औलाद हैं? गांधी का विचार था कि 'आजकल' की अस्पृश्यता से जब सवर्ण हिंदू आंतरिक निश्चय से तथा स्वेच्छा से मुक्त होंगे, तब हम सारे अस्पृश्यजन हरिजन के रूप में पहचाने जाएंगे, क्योंकि तभी हम पर ईश्वर की कृपा होगी। जबकि हम उन्हें दबाकर, कुचलकर आनंद मनाते आए हैं। अभी भी हमें हरिजन होने की छूट है।

आज हमें उनके प्रति किए गए पाप के बदले अंतःकरण पूर्वक पश्चाताप करना चाहिए। अस्पृश्यता समाप्त कर एकात्म और एकसमान समाज का निर्माण करना, गांधीजी का ध्येय था। गांधीजी अपने को भंगी, कातने वाला, बुनकर और मजदूर कहते थे। वे स्वेच्छा से भंगी बने थे। (मेहतर शब्द भी महत्तर शब्द का अपभ्रंश है।) अस्पृश्यता-निवारण का प्रयत्न उनके जीवन का अभिन्न अंग था। इस काम के लिए प्राण अर्पण करने तक वे तैयार थे। वे पुनर्जन्म नहीं चाहते थे, पर होना हो तो उनकी इच्छा थी कि अस्पृश्य का ही हो।

गांधीजी ने 'हरिजन-सेवा' का कार्यक्रम स्थापित किया। वे जानते थे एक का उद्धार दूसरा नहीं कर सकता। गांधीजी जानते थे कि स्वयं मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता। हरिजन-सेवा का उनका कार्यक्रम सवर्णों के उद्धार के लिए था। झाड़ू के माध्यम से शौचालय-सफाई का कार्य प्रतिदिन वे स्वयं और आश्रमवासी करते थे। वे मानते थे कि पीढ़ियों से समाज के एक वर्ग को अस्पृश्य मानने वाले सवर्णों को प्रायश्चित के रूप में हरिजन सेवा करनी चाहिए। हरिजन वास्तव में हरिजन यानी भगवान के पुत्र हैं। उच्च वर्ग के लोगों का स्वच्छ और पवित्र जीवन अस्पृश्यों की ही देन है। सन् १९१६ में अहमदाबाद की सभा में मस्तक आगे करके और गर्दन पर हाथ रखकर अत्यंत गंभीरता के साथ उन्होंने घोषणा की थी कि 'यह सिर अस्पृश्यता-निवारण के लिए अर्पित है।' इसलिए गांधीजी की दृष्टि में झाड़ू क्रांति की प्रतीक थी। उनका मानना था कि समता पर आधारित समाज द्वारा ही क्रांति लाई जा सकती है। वरना समाज किसी भी

परतंत्रता या गुलामी से लड़ नहीं सकता। दलितों में सबसे दलित, वाल्मीकि ही हैं। पुत्र के जीवन में मां का जो स्थान है, वही समाज के जीवन में सफाई करने वाले कामगार का है। वे कहते थे, 'मैं भंगी को अपनी बराबरी का मानता हूं और सवेरे उसका स्मरण करता हूं।

अस्पृश्यता निवारण करने का अर्थ है अखिल विश्व पर प्रेम करना और उसकी सेवा करना। यह अहिंसा का ही एक अंग है। अस्पृश्यता समाप्त करने का मतलब है मानव समाज की भेदभाव की दीवारों को ढहा देना, इतना ही नहीं, जीवनमात्र की ऊंच-नीच को समाप्त करना। अस्पृश्यता हिंदू धर्म का कलंक है। अस्पृश्यता मानना कथित स्पृश्य लोगों का महापातक है। अस्पृश्यता के खिलाफ मेरी लड़ाई (संघर्ष) अखिल मानवजाति की अशुद्धि से लड़ाई है। कोई भी भंगी जिस दिन राष्ट्रसभा का कारोबार संभालेगा, तब मुझे सच्चा आनंद होगा।'

'अंत्योदय से सर्वोदय' गांधीजी के आंदोलन की दिशा थी। उसमें दयाभाव के स्थान पर कर्त्तव्य भावना ही अधिक थी। इसी कारण तो उनके रचनात्मक कार्यक्रमों में 'हरिजन सेवा' और सफाई को महत्वपूर्ण स्थान मिला था। गांधीजी ने 'हरिजन सेवा' को सवर्णों का कर्तृतव्य माना था और नवीनतम स्वच्छ भारत अभियान की भी यही भूमिका होनी चाहिए।

गांधीजी की भगवान की प्रार्थना की भूमिका थी,

हे नम्रता के सागर!
दीन-दुखी की हीन कुटिया के निवासी।
गंगा, जमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित
इस सुंदर देश में
तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे,
तेरी अपनी नम्रता दे,
हिंदुस्तान की जनता से
एकरूप होने की शक्ति और उत्कंठा दे
हे भगवान!

नम्रता की यह भावना इस अभियान का अधिष्ठान होना चाहिए।

http://hindi.indiawaterportal.org/node/48394

स्वच्छ भारत अभियान

• शैलेन्द्र शुक्ल

करीब सौ साल पहले एक सपना गांधी जी ने देखा था, अस्पृष्यता आजादी और स्वतंत्रता की। उस स्वतंत्रता में बहुत सारी बातें थी जिसमें सबसे बड़ा स्वप्न स्वच्छता को लेकर था। देश आजाद हुआ सब लोग अपने स्वार्थ सिद्धी में इतने व्यस्त हो गए कि बापू के सपने अप्रासंगिक हो गए। लेकिन निराशा में तम में डूबे देश को आशा की किरण २ अक्टूबर २०१४ को दिखी। इंडिया गेट पर जब देश का प्रधानमंत्री यह शपथ लिया कि ना तो मैं गंदगी करूंगा और ना करने दूंगा। और निकल पड़ा हाथों में झाड़ू थामें अपने कर्म पथ पर गांधी के सपनों को साकार करने के लिए। हालॉकि सियासी गलियारों में प्रधानमंत्री मोदी के इस पहल को लेकर काफी आलोचना हुई व्यंग बाण छोड़े गए चुनावी स्टंट तक करार दिया गया, लेकिन अपने धुन का पक्का प्रधान सेवक बिना किसी का परवाह किए अपनी साधाना में लगा रहा, उसे गांधी के सपनों को अपने ऑखों से देखना प्रारंभ किया खुली ऑखों से। और इस तरह मोहन का सपना मोदी का मिशन बन गया एक ऐसा मिशन जो मॉ भारती को परम वैभव तक पहुंचाए।

स्वयं महांत्मा गांधी भी स्वच्छता के बहुत बड़े पैरोकार थे एक बार उनसे एक अंग्रेज ने पूछा कि आपको एक दिन के लिए देश का वायसराय बना दिया जाए तो क्या करोगे तो गांधी जी ने कहा था कि राज भवन के पीछे वाली बस्ती जो अत्यंत मलीन है उसकी सफाई करूंगा, अंग्रेज फिर बोला कि दूसरे दिन तो गांधी जी ने बोला कि दूसरे दिन भी वही करूंगा और तब तक करते रहूंगा जब तक देश के हर नागरिक के मन में स्वच्छता को लेकर जागरूकता न पैदा हो जाय। हांलॉकि पराधीन भारत में गांधी जी का यह सपना सपना ही रहा लेकिन उस सपने को सच करने का बीड़ा उठाया प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने। उनके पहल का देन है कि एक साथ देश भर के ३१ लाख केन्द्रीय कर्मचारी गंदगी नहीं करने का शपथ लिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त, २०१४ को दिए अपने भाषण में देश में स्वच्छता की स्थिति पर अप्रसन्नता व्यक्त की थी और वर्ष २०१९ में महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए खुले में शौच की प्रथा को समाप्त कर स्वच्छ भारत का लक्ष्य हासिल करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की थी। प्रधानमंत्री ने यह भी निर्देश दिया था कि १५ अगस्त, २०१५ तक देश की सभी स्कूलों में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग शौचालाय बनने चाहिए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से स्वच्छ भारत अभियान को रा'ट्र व्यापी आंदोलन बनाने का आह्वान किया था। इस अभियान को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने पर भी बल दिया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर नागरिक स्वच्छता के लिए एक साल में १०० घंटे का योगदान करने की शपथ लें। प्रधानमंत्री के आह्वान पर देश भर के सभी कर्मचारियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। सरकारी कार्यालय से लेकर पंचायत-स्तर के कर्मचारी पदाधिकारी इस

अभियान में शामिल हुए। प्रधानमंत्री की अपील को देखते हुए निजी क्षेत्र की कई कंपनियां अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के अंतर्गत स्वच्छ भारत अभियान में योगदान अपना योगदान दी और आगे बढ़कर लोगों को जागरूक करने का काम किया। स्वच्छ भारत अभियान के पीछे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सपना भारत में सन् २०१९ तक खुले में शौच की प्रथा को पूरी तरह समाप्त करना है। यह कार्य व्यक्तिगत, कल्सटर और सामुदायिक शौचालय बनाकर पूरा किया जा रहा है और बहुत हद तक इसमें सफलता भी मिल रही है । साथ ही ग्राम पंचायतों के जरिए ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन किया जा रहा है । सन् २०१९ तक सभी गांवों तक पानी की पाईप लाईनें बिछाई जाएंगी और मांग पर घरों में नल भी लगाए जाएंगे। यह लक्ष्य सभी मंत्रालयों के आपसी समन्वय एवं सहयोग से केंद्रीय तथा राज्य योजनाओं, सी.एस.आर. और द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग के साथ-साथ वित्तपोषण के नए अभिनव तरीकों के जरिए हासिल किया जाएगा।

शुन्य से शुरू हुआ अभियान शिखर की ओर अग्रसर है आज स्वच्छ भारत अभियान के इतिहास में हर दिन नया अध्याय जुड़ रहा है। इस अभियान में गॉव और शहर दोनो कदम ताल कर रहे हैं। शहरों के साथ साथ गॉव के लोग भी अपने आसपास की स्वच्छता को लेकर जागरुक हो रहे हैं। और इस कार्य में सरकार भी सहयोग दे रही है। ग्रामीणों के लिए स्वच्छ अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके तहत तमाम ऐसी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनके जरिए गांवों की तस्वीर बदलने लगी है। स्वच्छता अपनाने के लिए ग्राम पंचायतों को प्रोत्साहित किया जा रहा है तो व्यक्तिगत स्तर पर भी लोगों को जागरूक करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। विद्यालयों के बच्चों से लेकर आम आदमी अब मानने लगा है कि स्वच्छता अपनाए बिना स्वस्थ नहीं रहा जा सकता है। यही वजह है कि गांवों में लोग सरकारी योजनाओं के साथ ही अब व्यक्तिगत स्तर पर भी स्वच्छता अपनाने के लिए जागरूक हो गए हैं। ७३वें संविधान संशोधन अधिनियम, १९९२ के अनुसार, स्वच्छता को ११वीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इसके अनुसार संपूर्ण स्वच्छता अभियान के कार्यान्वयन में पंचायतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। शौचालयों के निर्माण एवं अपशिष्ट पदार्थों के सुरक्षित निपटान के माध्यम से वातावरण स्वच्छ रखने के संबंध में एकजुटता सुनिश्चित करने के लिए स्वैच्छिक संगठनों एवं गैर-सरकारी संगठनों का भी सहयोग लिया जा रहा है। इसके परिणाम भी सामने आए हैं।

स्वच्छता की ओर एक कदम : समृद्धि की ओर बढ़ते कदम

● शिशिर सिन्हा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झाड़ू क्या उठाया उसके तो दिन ही बहुर गए। साफ-सफाई के उत्पादों के सरोकार बदल गए। साफ-सफाई पहले भी होती रही, लेकिन अब सफाई सुर्खियों में हैं। जी हां, महात्मा गांधी के जन्म दिवस २ अक्टूबर को शुरु किए गए राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान ने स्वच्छता को नयी परिभाषा दे दी है। साफ-सफाई का काम गरीब-गुरबों तक सीमित नहीं रहा। नामी गिरामी हस्तियां सड़कों पर सफाई करती दिख रही हैं तो देसी ही नहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने बही खाते को और मजबूत करने का एक नया जरिया मिल गया है। साफ-सफाई का नया अर्थशास्त्र अब आपके सामने हैं।

हाथ अच्छे से धोकर खाना खाने की बात हमारे मां-पिता अरसे से बताते रहे, लेकिन ये बात घर की चारदिवारी तक ही सीमित रही और हमने कभी इसके आर्थिक मायने को समझने को कोशिश नहीं की। साफ-सफाई को हमने कभी गांधी के उस चश्मे से नहीं देखा जैसा प्रधानमंत्री ने समझाने की कोशिश की। २ अक्टूबर को उन्होंने कहा, "इस चश्में से गांधी देख रहे हैं - क्या किया? क्या कर रहे हो, कैसे कर रहे हो, कब तक करोगे, इसलिए जब गांधी के चश्में का स्वरूप हम देखते हैं, जो चश्में खुद हमें कहते हैं, स्वच्छ भारत का संदेश देते हैं।"

लगता है कि इसी चश्मे से कारोबार जगत ने भी सफाई को देखा तभी तो उन्हे लगा कि ये कारोबार बढ़ाने का पहले से भी बड़ा जरिया है। एक प्रसिद्ध अंग्रेजी कारोबारी दैनिक ने बहुराष्ट्रीय कम्पनी रैकिट बेंकाइजर के प्रबंध निदेशक नीतिश कपूर को उद्धृत करते हुए लिखा कि लम्बे समय में जब ज्यादा से ज्यादा लोग स्वस्थ्य स्वच्छ आचरण को अपनाएंगे तो वहां पर डेटॉल और हारपिक जैसे उनकी कम्पनी के प्रोडक्ट लोगों के लिए ज्यादा प्रासंगिक बन जाएंगे।

देश की स्वच्छता जरूरत को ध्यान में रखते हुए इस कम्पनी ने १०० करोड़ रुपये के एक अभियान शुरूआत की है जिसके जरिए साल भर में २००० गांवों तक पहुंचे का लक्ष्य है। अमिताभ बच्चन इसके ब्रांड एम्बेसडर हैं। अभियान के जरिए शुरुआती तौर पर हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के ४०० गांवों में वीडियो, पर्चे, पोस्टर, हाथ धोने के सत्र और नुक्कड़ नाटकों के जरिए साफ-सफाई का संदेश देने का लक्ष्य है। घनी आबादी वाले राज्यों में १०० करोड़ रुपये का यह निवेश कारोबार फैलाएगा, ये तो तय है, लेकिन कितना फैलाएगा, इसका आकलन नहीं किया गया है।

वैसे रैकिट की प्रतिद्वंदी हिंदुस्तान यूनिलीवर वर्ष २०१० से शहरी और ग्रामीण इलाकों में अपने जाने माने साबुन ब्रांड लाइफबॉय को जोड़कर हाथ धोने का अभियान चला रही है।

कम्पनी का दावा है कि अब तक ये पौने छह करोड़ से भी ज्यादा लोगों तक पहुंच चुका है। अब कम्पनी ने शौचालय के लिए एक खास अभियान शुरु किया है जिसके तहत अगले वर्ष तक २४,००० शौचालय बनाने का लक्ष्य तय किया है।

स्वच्छता के ब्रांडेड उत्पादों के बाजार की अग्रणी इन दो कम्पनियों के मुकाबले में देसी कम्पनियां जैसे डाबर और यूचर ग्रुप पीछे नहीं रहना चाहती। घर साफ करने में इस्तेमाल होने वाले अपने सनीफ्रेश ब्रांड के प्रोडक्ट के साथ डाबर सार्वजनिक शौचालय बनाने की योजना शुरु कर कर रही है। इस योजना में बालिकाओं के लिए शौचालय पर बनाने खासा जोर होगा। वहीं बिग बाजार नाम से सुपर स्टोर चलाने वाले यूचर ग्रुप की योजना स्वच्छता से जुड़े अपने खुद के ब्रांड को प्रचलित करने की है।

इन सभी कम्पनियों का जोर मौजूदा ग्राहकों में खपत बढाना तो है ही, साथ ही ज्यादा से ज्यादा नए ग्राहकों को लुभाने की है। रणनीति है कि लोग साफ-सफाई के उत्पादों को महज उच्च जीवन शैली के साथ जोड़ कर नहीं देखे, बल्कि ये समझे कि जीवन को बेहतर बनाने के लिए ये उत्पाद कितने जरूरी हैं। मिट्टी या राख से हाथ धोने से कीटाणु जाते नहीं, बल्कि साबुन या लिक्विड शोप से धोने पर जोर देना कम्पनियों की सोच का हिस्सा लगता है। यही नहीं महज स्वाइन लू का खतरा मंडराने पर ही हैंड सेनेटाइजर का इस्तेमाल हो, ये उचित नहीं होगा और कम्पनियां इस बात पर को प्रचारित करना चाहेंगी।

आखिरकार, ज्यादा लोग साफ-सफाई के लिए ऐसे उत्पादों को क्यों नहीं अपनाते? इसकी एक वजह ऊंची कीमत हो सकती है। फिलहाल, कम्पनियों के पास इसका भी जवाब है। याद कीजिए एक जानी मानी कम्पनी के लिक्विड शोप का विज्ञापन। विकल्प दिया गया कि बड़ा पैक नहीं ले सकते, कोई बात नहीं, छोटा पैक ले लीजिए। जेब के हिसाब से फिट बैठेगा। यानी शैंपू के सैसे और साबुन के छोटे आकार के साथ लिक्विड शोप और हैंड सेनेटाइजर छोटे छोटे पैक में उपलब्ध हैं जिस पर खर्च करने में ज्यादा परेशानी नहीं हो।

इन कम्पनियों की आशावादिता की एक वजह और भी है। देश की ६५ प्रतिशत आबादी ३५ वर्ष से कम आयु की है। यहां दो बातें ध्यान देने की है। एक, स्वच्छता का नारा जिस प्रधानमंत्री मोदी ने दिया, उन्हे युवाओं का एक बड़ा तबका आदर्श के रूप में देखता है। दो, युवा वर्ग ब्रांडेड उत्पादों को लेकर ज्यादा उत्साहित होता है। ऐसे में कम्पनियों के लिए स्वच्छता अभियान में बड़ा बाजार देखना कहीं से असामान्य नहीं लगता।

यह तो बात हुई संगठित बाजार की। तरल साबुन, ठोस साबुन और यहां तक की घर में झाड़ु पोछे में इस्तेमाल होने वाले उत्पादों का एक बड़ा हिस्सा स्थानीय और असंगठित क्षेत्र से आता है। स्थानीय भाषा में ब्रांड, पड़ोस के किरयाने की दुकान मे उपलब्धता और कम कीमत के ये उत्पाद अलग-अलग जगहों पर अपना दबदबा रखते हैं। भले ही इनका विज्ञापन भव्य नहीं हो, ये बड़े बड़े मेले या अभियान आयोजित नहीं करती, लेकिन इनका अपना एक अलग स्थान है और स्वच्छता अभियान से इन्हे बड़ा फायदा मिलने वाला है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।

कुछ ऐसी ही स्थिति फूल झाड़ु, तिनके वाले झाड़ू और फिनाइल जैसे उत्पादों की है। झाड़ू का उत्पादन बड़े पैमाने पर छोटे-छोटे व्यवसायी करते है। दुकानों पर हम अमूक ब्रांड का झाड़ू नहीं मांगते, बस जो ज्यादा मजबूत दिखे, ज्यादा बड़ा दिखे और जिसपर ज्यादा से ज्यादा मोलभाव हो सके, उसे खरीद लेते हैं। वर्षों से इनका इस्तेमाल हर तबके के घर में होता रहा, लेकिन इनके अर्थशास्त्र पर चर्चा नहीं हुई। हां, विभिन्न वेबसाइट खंगालने पर ये बात जरूर सामने आयी कि फूल झाड़ू के जरिए पूर्वोत्तर के कुछ हिस्सों में आर्थिक स्थिति बेहतर हुई है, क्योंकि वहां इस तरह से झाड़ू के लिए जरूरी घास की पैदावार के लिए माहौल अनुकूल है। इसी तरह से पत्तों से बने झाड़ू जानजातियों के लिए रोजी रोटी का एक अहम जरिया है।

वैसे कुछ कम्पनियों ने प्लास्टिक के झाड़ू के जरिए बांस या घास के जरिए बने झाड़ुओं की जगह लेने की कोशिश की। लेकिन प्लास्टिक के ये झाड़ू शौचालयों तक ही सीमित होकर रह गए। क्योंकि वैक्यूम क्लिनर के इस दौर में भी धूल हटाने में फूल झाड़ू का कोई सानी नहीं। तो जरूरत इस बात की है कि हर तरह के झाड़ू के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए। वैसे राहत की बात ये है कि भारत सरकार ने अपने तमाम मंत्रालयों और विभागों के लिए झाड़ू की खरीद सुक्ष्म व लघु उद्योग से आवश्यक तौर पर खरीदे जाने वाले ३५० सामान में शामिल कर रखा है।

हाथ सही तरीके से धो लिया, घर और उसके आसपास तमाम किस्म के झाड़ू का इस्तेमाल कर लिया। लेकिन घर के सतह पर खुली आंखों से नहीं दिखने वाले अत्यंत छोटे कीटाणु या रोगाणु रह गए। इनसे निपटने के लिए तरह-तरह के तरल का इस्तेमाल होते है जिसमें सबसे आगे फिनाइल है। अलग-अलग स्रोतों से जुटाए आंकड़ों के मुताबिक, हर वर्ष देश भर में करीब ९-१० हजार टन सतह साफ करने वाले तरल का इस्तेमाल होता है और इसमें अकेले फिनाइल की हिस्सेदारी आधे से भी ज्यादा है। ९५ प्रतिशत से ज्यादा इन तरल का इस्तेमाल शहरी इलाकों में होता है।

रैकिट बेंकाइजर, हिंदुस्तान यूनिलीवर और बलसारा जैसी कई कम्पनियां रोगाणु मुक्त सतह और शौचालयों के लिए ब्रांडेड तरल बाजार में उपलब्ध कराती हैं। वहीं फिनाइल की बात करें तो गिनती की कुछ संगठित क्षेत्र की कम्पनियों को छोड़ बड़े पैमाने पर उत्पादन छोटे उद्योग ही करते हैं। बाजार में फिनाइल की बिक्री भी ब्रांड के आधार पर नहीं, बल्कि झाड़ू की तरह सस्ते और ज्यादा मोलभाव के आधार पर होती है। उम्मीद की जानी चाहिए कि नए अभियान के बाद फिनाइल की मार्केटिंग पर जोर होगा, जिससे छोटे उद्योगों का फायदा हो सकेगा।

स्वच्छता का बाजार

यह बाजार महज उपरलिखित उत्पादो तक सीमित नहीं, बल्कि कई और को अपने में समेटे है। मसलन शौचालय की बात आएगी, तो ईंट, रेत, सीमेंट, लोहे, लकड़ी के साथ-साथ संडास पौट, पाइप, नल और पानी की टंकी का कारोबार भी बढ़ेगा। कुल मिलाकर बाजार को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है, एक बुनियादी सुविधाओं का बाजार और दूसरा सुविधाओं के इस्तेमाल के लिए जरूरी उत्पाद व सेवाओं का बाजार।

विश्व बैंक के जरिए प्रशासित और विभिन्न देशों व संस्थाओं की वित्तीय मदद से चलने वाले Water and Sanitation Program (WSP) की एक रिपोर्ट ने भारत में स्वच्छता के बाजार की संभावनाओं का आंकलन किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, स्वच्छता की प्राथमिकताओं से निपटने के लिए सरकारी निवेश (इसमें शौचालय बनाना, कचरे के निपटारे की व्यवस्था तैयार करने, लोगों को स्वच्छता के व्यवहार को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना जैसे मुद्दे शामिल है) के साथ लोगों का खुद ही शौचालय बनाना या मौजूदा शौचालयों को और बेहतर बनाने जैसे उपायों से देश में स्वच्छता के उत्पाद और सेवाओं का एक बहुत ही बड़ा बाजार बन सकेगा।

रिपोर्ट में कहा गया कि २००७ से २०२० के बीच स्वच्छता के बाजार का संभावित आकार ६.८७ खरब (ट्रिलियन) रुपये का हो सकता है। यहां बाजार से आशय स्वच्छता के प्रयासों की उपज संभावित आर्थिक गतिविधियों से है। इसमें बुनियादी सुविधाओं की हिस्सेदारी करीब ६४ प्रतिशत की हो सकती है, जबकि बाकी रकम उन सुविधाओं के रखरखाव व संचालन पर खर्च किए जाने का अनुमान है। रिपोर्ट में स्वच्छता का सालना बाजार २००७ के ३०० अरब रुपये से २०२० में ६८३ अरब रुपये तक पहुंचने का अनुमान लगाया गया।

स्वच्छता और उत्पादकता

स्वच्छता के अर्थशास्त्र की चर्चा व्यक्तिगत उत्पादकता और पूरे देश के आर्थिक असर के बगैर अधूरी रहेगी। इस उत्पादकता का आशय, स्वच्छ व्यवहार के नहीं अपनाने से होने वाले नुकसान को लेकर है। याद कीजिए प्रधानमंत्री मोदी के २ अक्टूबर के भाषण की। उन्होंने कहा, W.H.O. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) का कहना है कि गंदगी के कारण हर वर्ष भारत के प्रत्येक नागरिक को करीब ६५०० रूपयों का अतिरिक्त नुकसान झेलना पड़ता। बीमारी के कारण, बीमारी के कारण ऑटों रिक्शा नहीं चला पाता है। बीमारी के कारण टैक्सी नहीं चला पाता है। बीमारी के कारण अखबार बांटने के लिए नहीं जा पाता है। बीमारी के कारण दूध बेचने के लिए नहीं जा पाता है। यह भारत की कुल संख्या का average निकाला है, लेकिन सुखी घर के लोगों को ये नहीं भुगतना पड़ता है। अगर उनको निकाल दिया जाए तो average ६५०० से बढ़कर के गरीब आदमी के सर पर बोझ की average १२-१५ हजार रूपये हो सकती है।''

गंदगी क्यों फैली? बस इसीलिए कि नहीं कि उसकी रिहाइश के आसपास की जगह गंदी थी, चारो तरफ कचरा फैला था। ये इसीलिए भी हो सकता है कि व्यक्ति विशेष को शौच की पर्याप्त सुविधा नहीं मिली हुई थी, उसी की तरह कई और लोग खुले में शौच करते थे और पीने के लिए साफ पानी नहीं मिला। यही नहीं काम में इसीलिए भी नुकसान हुआ कि व्यक्ति विशेष को हर रोज अपने काम काज के लिए उपलब्ध समय का एक भाग शौच व पीने के पानी तक पहुंचने के लिए खर्च करना पड़ता है।

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (National Sample Survey) के ६९ वें दौर के नतीजे बताते हैं कि देश की बड़ी आबादी के लिए पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध तो है, लेकिन ग्रामीण

इलाके में आधे से भी ज्यादा और शहरी इलाके में करीब २३ फीसदी आबादी के लिए यह आवासीय परिसर में उपलब्ध नहीं। इस आबादी के एक बड़े हिस्से को आधे किलोमीटर तक की दूरी तय कर पानी लाना पड़ता है। पानी लाने के लिए ग्रामीण इलाकों में औसतन २० मिनट और शहरी इलाको में औसतन १५ मिनट समय जाया होता है। इसके अलावा ग्रामीण इलाकों में पानी के स्रोत की जगह पर अपनी बारी आने में औसतन १५ मिनट और शहरी इलाकों में १६ मिनट का समय लगना आम बात है।

सर्वेक्षण ये भी बताता है कि ६२ प्रतिशत से ज्यादा ग्रामीण घरों और १६ प्रतिशत से ज्यादा शहरी घरों में बाथरूम तक नहीं। इसी तरह शौचालय की बात करें तो ग्रामीण इलाकों में करीब ६० प्रतिशत और शहरी इलाको में करीब ९ प्रतिशत घरों में शौचालय की सुविधा उपलब्ध नहीं। ये वो लोग है जो खूले में शौच के लिए मजबूर है। ये सभी तथ्य व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, पूरे देश की आर्थिक स्तर पर असर डालते हैं।

Water and Sanitation Program की रिपोर्ट में अपर्याप्त स्वच्छता की वजह से वर्ष २००६ में २.४४ खरब रुपये या प्रति व्यक्ति २ए१८० रुपये का नुकसान होने का अनुमान लगाया गया। ये सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी के ६.४ प्रतिशन के बराबर है। इसमें स्वास्थ्य पर होने वाला असर अकेले १.७५ खरब रुपये (कुल असर का ७२ प्रतिशत) की हिस्सेदारी रखता है। कुल नुकसान में चिकित्सा पर होने वाले खर्च का अनुमान २१२ अरब रुपये और बीमार होने से उत्पादकता के नुकसान का अनुमान २१७ अरब रुपये लगाया गया। जीडीपी में पांच प्रतिशत औसत सालाना बढ़ोतरी भी रखे तो आकलन किया जा सकता है कि आज की तारीख में ये नुकसान कितना ज्यादा हो जाएगा।

अभियान के लिए वित्त

लक्ष्य बड़ा है, जाहिर है कि काफी ज्यादा आर्थिक संसाधनों की जरूरत होगी। खुद सरकार ने ४००० हजार से भी ज्यादा शहरों में स्वच्छता अभियान पर ६२ हजार करोड़ रुपये के करीब की पांच सालों की योजना बनायी है। इसमें केंद्र सरकार १४,६०० करोड़ रुपये से ज्यादा की सहायता देगी। ग्रामीण इलाकों के लिए पेय जल व स्वच्छता मंत्रालय अपने बजटीय अनुदान से पैसा मुहैया कराएगा।

अब अकेले सरकार से ये सब कुछ संभव नहीं, इसीलिए कॉरपोरेट सेक्टर से भी सहयोग की अपेक्षा है। इसी को ध्यान में रखते हुए कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी यानी सीएसआर के तहत कुछ नयी बातें जोड़ी गयी हैं। एक, कम्पनियां सीएसआर के तहत तय राशि स्वच्छ भारत कोष में जमा करा सकती है। दो, सीएसआर के तहत स्वीकृति गतिविधियों में स्वच्छता को बढ़ावा देने को शामिल किया गया है। और तीन, सरकारी कम्पनियों को खास तौर पर कहा गया है कि उन्हे अपनी सीएसआर गतिविधियों में सभी के लिए साफ पीने का पानी, शौचालयों (विशेष तौर पर बालिकाओं के लिए), स्वास्थ्य और स्वच्छता जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देनी चाहिए। नए कम्पनी कानून के तहत कम्पनियों के लिए तुरंत के विगत तीन वर्षों में कमाए विशुद्ध लाभ का कम से कम दो प्रतिशत हर वर्ष सीएसआर पर खर्च करने का प्रावधान रखा

गया है। आम आदमी भी स्वच्छता कोष में अपना योगदान दे सकता है। सरकार ने संकेत दिए हैं कि स्वच्छता कोष में योगदान पर वह कर में छूट की सुविधा दे सकती है।

वैसे तो स्वच्छता को लेकर बातें पहले भी कही जाती रही, लेकिन ये पहला मौका है जब खुद प्रधानमंत्री अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं। माहौल भी तैयार है। ये मत सोचिए कि आपका एक कदम स्वच्छता की ओर बढ़ाया गया ना केवल आसपास के माहौल को साफ बनाएगा, बल्कि हम-आप को और पूरे देश को आर्थिक तौर पर भी सबल बनाएगा और विश्व अर्थव्यवस्था में खास जगह दिलाएगा। बस जरूरत है सोच बदलने की और सोच को व्यापक बनाने की। अंत में अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर स्थित मेडिसन स्क्वायर गार्डेन में भारतीय समुदाय को दिए प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का एक अंश : ''गांधीजी ने हमें आजादी दिलाई थी। भारत मां को गुलामी की जंजीरों से मुक्त किया। क्या भारत मां को गंदगी से मुक्त करना, यह हमारी जिम्मेवारी है या नहीं है। क्या हम २०१९ में जब गांधीजी की १५० वीं जयंती आए, तब महात्मा गांधी के चरणों में स्वच्छ-साफ हिंदुस्तान उनके चरणों में दे सकते हैं कि नहीं दे सकते हैं? जिस महापुरुष ने हमें आजादी दी, उस महापुरुष को हम ये दे सकते हैं कि नहीं दे सकते हैं? देना चाहिए कि नहीं देना चाहिए? ये जिम्मेदारी उठानी चाहिए कि नहीं उठानी चाहिए? अगर एक बार सवा सौ करोड़ देशवासी तय कर लें कि मैं गंदगी नहीं करुंगा, तो दुनिया की कोई ताकत नहीं है जो हिंदुस्तान को गंदा कर सकती है।''

संदर्भ स्रोत

- पत्र सूचना कार्यालय
- राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (National Sample Survey)-६९ वें दौर के नतीजे
- Water and Sanitation Program : Economic Impact of Inadequate Sanitation in India

सशक्त अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी स्वच्छता

● ऋषभ कृष्ण सक्सेना

प्रधानमंत्री ने जबसे स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की है, तब से देश भर में इस पर सक्रियता बढ़ती दिख रही है। विभिन्न सरकारी विभाग स्वच्छता पर जोर दे रहे हैं, गैर सरकारी संगठन भी इसमें हाथ बंटा रहे हैं और स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ आम जनता का सहयोग भी इसे मिल रहा है। वास्तव में स्वच्छता केवल स्वास्थ्य से जुड़ा मसला नहीं है, इसके वित्तीय प्रभाव भी बहुत अधिक हैं। श्रमिकों की उत्पादकता अक्सर स्वच्छता और उसके अभाव में होने वाले रोगों से जुड़ी रहती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) समेत विभिन्न संस्थाएं इस मोर्चे पर अधिक से अधिक मानव एवं वित्तीय संसाधन लगाए जाने की वकालत करती रही हैं। विकास के जिस एजेंडा पर हम चल रहे हैं, उसमें गरीबी उन्मूलन पर ही ज्यादा जोर दिया जा रहा है, लेकिन हकीकत यही है कि स्वच्छ जल और स्वच्छता के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा खड़ा करने से आय में भी इजाफा होगा और उत्पादकता में भी।

स्वच्छता के यूं तो कई आयाम और माध्यम हो सकते हैं, लेकिन इनमें सबसे अहम हैं जल शोधन और शौचालय। भारत सरकार का ध्यान इन पर ही सबसे ज्यादा होना चाहिए क्योंकि विश्व बैंक की २०१२ में पेश रिपोर्ट के अनुसार स्वच्छता के अभाव के कारण भारत हर साल तकरीबन ५३.८ अरब डॉलर गंवा देता है, जो २००६ के उसके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के ६.४ प्रतिशत के बराबर हैं। हैरत की बात है कि इस पैमाने पर भारत इंडोनेशिया और फिलीपींस जैसे देशों से बहुत पीछे है, जहां जीडीपी का क्रमशः २.३ प्रतिशत और १.५ प्रतिशत इसकी भेंट चढ़ता है। मॉनिटर डेलॉयट नाम की संस्था ने भारत में स्वच्छता पर इसी वर्ष जारी अपने श्वेत-पत्र में बताया कि यहां के गांवों में ही स्वच्छता का तकरीबन २,५०० करोड़ डॉलर सालाना का बाजार है। इनमें ६०० से ९०० करोड़ डॉलर का तो शौचालयों का ही बाजार है। ऐसा भी नही है कि भारतीय ग्रामीण शौचालयों की इच्छा नहीं रखते। इस संस्था ने पिछले वर्ष बिहार में सर्वेक्षण किया तो गांवों में ८४ प्रतिशत परिवारों ने शौचालय बनवाने की इच्छा जताई, लेकिन वे बुनियादी ढांचे और सुविधाओं के मोहताज थे। कई परिवारों में शौचालय बनवाने की आर्थिक क्षमता तक नहीं थी। ऐसे में विश्व बैंक की यह बात सही लगती है कि शौचालय से ही छोटे उद्यमियों के लिए बड़ा बाजार खड़ा हो रहा है। वास्तव में स्वच्छता का बाजार छोटा नहीं है और निजी क्षेत्र को साथ लेने पर इस बाजार का पूरा फायदा उठाया जा सकता है।

स्वच्छता अभियानः रोजगार व कारोबार

यदि निजी क्षेत्र के साथ हाथ मिलाया जाता है तो सरकार मांग की ओर ध्यान दे सकती है, बाजार तैयार कर सकती है और निजी क्षेत्र को आपूर्ति के लिए उपयुक्त माहौल दे सकता है। यहां निजी क्षेत्र से आशय केवल संगठित क्षेत्र की बड़ी कंपनियों से नहीं है बल्कि असंगठित क्षेत्र में शौचालय के लिए टाइल्स बनाने वाले उद्यमी से लेकर उपकरण फिट करने वाले प्लंबर और दीवार खड़ी करने वाले राज-मिस्त्री तक सभी इसी में आते हैं, जिन पर हमारा ध्यान नहीं

जाता। वर्तमान सरकार की स्वच्छ भारत अभियान की पहल से पूर्व संभवतः किसी का ध्यान इस ओर गया ही नहीं होगा कि प्रत्येक घर में एक शौचालय बनाने भर से रोजगार के कितने प्रचुर अवसर उपलब्ध हो जाएंगे।

प्रधानमंत्री की अपील के जवाब में अब उद्योग जगत से कई बड़े नाम स्वच्छता के अभियान में हिस्सा ले रहे हैं। सरकारी क्षेत्र की कंपनी कोल इंडिया ने हाल ही में कहा है कि वह स्कूलों और वंचित तबके के घरों में शौचालय बनाने एवं सफाई की स्थिति बेहतर करने पर २३५ करोड़ रुपये खर्च करेगी। इसके तहत वह स्कूलों में अगले साल मार्च तक ६,००० शौचालय बनाएगी और सफाई अभियान से करीब १००,००० घरों को फायदा पहुंचाएगी। इससे पहले बुनियादी ढांचा क्षेत्र की बड़ी कंपनी लार्सन एंड टुब्रो ने भी ५००० शौचालय बनवाने का ऐलान किया है। भारती एंटरप्राइजेज की भारती फाउंडेशन भी १०० करोड़ रुपये के खर्च से पंजाब के लुधियाना में शौचालय बनवाने जा रही है। दूरसंचार क्षेत्र की नामी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने भी स्वच्छ भारत अभियान में हिस्सा लेते हुए शौचालय बनवाने पर १०० करोड़ रुपये खर्च करने की बात कही है। वेदांता समूह राजस्थान सरकार के सहयोग से पहले ही ३०००० शौचालय बना चुकी है। कंपनी ने १०००० शौचालय और बनाने की बात कही है। जाहिर सी बात है कि एक बड़ा बाजार तैयार होने जा रहा है।

विस्तृत संभावनाएं

वित्त मंत्रालय ने भी बजट में इसके लिए अच्छा खासा प्रावधान किया है। खुले में शौच की व्यवस्था को २०१९ तक खत्म कर देने का बीड़ा उठाया गया है। यह बेहतरीन कारोबारी अवसर है। भारत में करीब १३ करोड़ घरों में शौचालय ही नहीं हैं। यहां करीब ७२ प्रतिशत ग्रामीण अभी तक खुले में शौच करते हैं और ६३ करोड़ लोगों के पास शौचालय की समुचित सुविधा नहीं है। यदि इन लोगों के लिए शौचालय उपलब्ध कराने का अभियान चला दिया जाए तो राज मिस्त्री से लेकर, निर्माण क्षेत्र के मजदूरों, रंग रोगन करने वालों, टाइल्स बनाने वालों और उपकरण लगाने वालों को असीमिति रोजगार मिल सकता है। रोजगार के मौके शौचालय बनाने पर ही खत्म नहीं हो जाते। हमारे देश में कई सदियों से मल-मूत्र से बनने वाली कंपोस्ट का इस्तेमाल खाद के रूप में किया जाता है। यदि इसी को व्यावसायिक स्तर पर किया जाए तो बायोगैस जैसे प्रत्येक संयंत्र में रोजगार की संभावना बनती है और ईंधन की किल्लत भी कम हो सकती है।

शौचालयों के मामले में नीतिगत स्तर पर भी और व्यक्तिगत स्तर पर भी हम भूल कर जाते हैं। हम त्रुटिपूर्ण योजना के साथ शौचालय बनाते हैं और मान लेते हैं कि स्वच्छता सुविधाओं के लिए गरीब खर्च करना नहीं चाहते। इस क्षेत्र में काम करने वाले भी कहते हैं कि सरकार गरीबों के लिए ऐसे शौचालय बनाती है, जिसमें पानी की बहुत जरूरत होती है और अक्सर उनके पास इतना पानी उपलब्ध नहीं होता। पानी की किल्लत वाले क्षेत्रों में भी ऐसे शौचालय बनाने की कोई तुक नहीं दिखती। उसके बजाय शुष्क शौचालयों पर जोर दिया जा सकता है। इसके लिए अफ्रीकी देश हैती का उदाहरण हमारे सामने है। राजनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय मुश्किलों से जूझ रहे हैती में ८० प्रतिशत से भी अधिक लोग गरीबी में डूबे हैं, जिनके पास पीने के लिए भी पानी नहीं है।

शौचालय बनाने या स्वच्छता की बेहतर सुविधाएं देने से स्वास्थ्य ही ठीक नहीं होता बल्कि सामाजिक स्तर भी बेहतर होता है। झुग्गी बस्तियों के निकट सुलभ के सार्वजनिक शौचालय इसके अच्छे उदाहरण हैं और हैती में शुष्क शौचालयों से किसानों के सामाजिक तथा आर्थिक स्तर में विकास भी देखा गया है। इसके कई उदाहरण भारत में भी हैं। एक अनुकरणीय उदाहरण पुणे में दिखता है, जहां कचरा बीनने वाली महिलाओं का जीवन एक छोटी सी सहकारी पहल से बिल्कुल बदल चुका है। पुणे तेजी से विकास करता शहर है और यह कचरे की समस्या से जूझता रहता था। भारत में कचरे की समस्या तो बहुत गंभीर है और शहरों में रोजाना करीब १.८८ लाख टन कचरा तैयार होता है। नई दिल्ली के दि एनर्जी ऐंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) का अनुमान है कि भारत के शहरों में कचरा उत्पादन की समस्या बेहद तेजी से है। उसने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि २०४७ तक इन शहरों में आज के मुकाबले पांच गुना अधिक कचरा तैयार होगा, जिसकी मात्रा २६ करोड़ टन सालाना तक पहुंच जाएगी।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

२००८-०९ में अमेरिकी मंदी के कारण हैती को बाहर से आर्थिक मदद मिलनी भी बंद हो गई थी और स्वास्थ्य तथा शिक्षा के कई कार्यक्रम बंद करने पड़े। ऐसे में दो अमेरिकी नागरिकों ने वहां सॉयल नाम की परियोजना शुरू की, जिसका उद्देश्य बंजर जमीन को उपजाऊ बनाना और पानी से प्रदूषण खत्म करना था। इसके लिए उन्होंने कंपोस्टिंग शौचालय या शुष्क शौचालय को हथियार बनाया। हैती में सीवेज प्रणाली न के बराबर है, वहां की जमीन बंजर है और किसानों के पास रासायनिक उर्वरक खरीदने के लिए रकम नहीं है। सॉयल के तहत हैती में शुष्क शौचालय बनाए गए, जिनमें अपशिष्ट आसानी से इकट्ठा किया जाता है और उसी से खाद बना ली जाती है। स्थानीय सामग्री से ही बने इन शौचालयों से वहां जल की गुणवत्ता में इजाफा हुआ है और किसानों को खाद भी आसानी से मिलने लगी है। इस मॉडल को भारत में भी आसानी से अपनाया जा सकता है। राजस्थान जैसे पानी की किल्लत वाले इलाकों में और प्राकृतिक आपदाओं के बाद राहत कार्यो के दौरान ऐसे शौचालयों का प्रयोग किया जा सकता है।

कम खर्च में शौचालय बनाने और उनसे रोजगार कमाने का उदाहरण बांग्लादेश में भी नजर आया है। यूनिसेफ और बांग्लादेश सरकार की मदद से वहां के ग्रामीण इलाकों में शौचालय बनाए जा रहे हैं और इसमें निजी क्षेत्र की अच्छी भागीदारी है। वहां अभी ६००० से भी ज्यादा छोटे उद्यमी हर साल लगभग १२ लाख शौचालय इकाइयां तैयार कर रहे हैं। इनमें से ज्यादातर कारखाने ३-४ डॉलर से भी कम की कार्यशील पूंजी के साथ काम करते हैं। यूनिसेफ के आंकड़ों के मुताबिक इनमें से ज्यादातर को किसी तरह का ऋण नहीं लेना पड़ता। इन कारखानों से इतने लोग जुड़े हैं कि बांग्लादेश में यह ग्रामीण कुटीर उद्योग जैसे बन चुके हैं। भारत के लिहाज से भी यह अच्छा मॉडल हो सकता है, जहां कुटीर उद्योग पहले ही काफी व्यापक हैं और जहां की आधी से ज्यादा ग्रामीण आबादी आज भी शौचालयों से वंचित है।

सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी)

एक धारणा यह भी है कि स्वच्छता की सुविधाओं पर गरीब खर्च करना नहीं चाहते लेकिन हमारे ही देश में सुलभ इंटरनेशनल इसे गलत साबित कर चुकी है। १९७० से अभी तक यह गैर सरकारी संगठन १२-१३ लाख से अधिक शौचालय बना चुका है और ६५०० से अभी

अधिक सामुदायिक शौचालय यह चला रहा है। आपको कमोबेश हर बड़े शहर में सुलभ के सार्वजनिक शौचालय मिल सकते हैं। भारती एंटरप्राइजेज ने भी हाल में शौचालय बनाने का ठेका इसी को दिया है। सुलभ के शौचालयों की खासियत यही है कि इन्हें ७०,००० के करीब कर्मचारी चलाते हैं, जिन्हें वेतन भी दिया जाता है। उनके वेतन की चिंता भी सुलभ को नहीं करनी पड़ती क्योंकि उसके शौचालयों का प्रयोग प्रतिदिन लगभग १४-१५ लाख लोग करते हैं, जिनसे एक अथवा दो रुपये का मामूली शुल्क वसूला जाता है। इससे शौचालयों के रखरखाव का खर्च भी पूरा हो जाता है और गरीब तबके के लोगों को स्वच्छता की बेहतर सुविधा भी मिल जाती है। इनमें से ज्यादातर शौचालय ऐसे स्थानों पर बने हैं, जहां झुग्गी बस्तियां हैं, लेकिन उनका समुचित उपयोग होता है क्योंकि खुले में शौच की शर्मिंदगी से बचने के लिए वहां के निवासी शुल्क देकर भी इनका ही उपयोग करते हैं। सुलभ की सफलता दो बातें हमारे सामने प्रमाणित करती है - पहली, सामुदायिक स्वच्छता सेवा का प्रयोग सफल हो सकता है और दूसरी, यदि स्वच्छ और बेहतर सुविधाएं मिलें तो गरीब तबके के लोग उनके लिए शुल्क देने को भी तैयार रहते हैं। भारत सरकार इसे ध्यान में रखते हुए शौचालय बनाने का काम तेज कर सकती है और इनका वित्तीय लाभ भी उठा सकती है।

बांग्लादेश के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए सरकार सीमेंट कंपनियों से इस काम में मदद करने के लिए कह सकती है। देखा गया है कि छोटे से छोटा शुष्क शौचालय बनाने में भी कम से कम १ कट्टा सीमेंट का प्रयोग होता है। बांग्लादेश में यूनिसेफ के प्रयोग के दौरान प्रतिवर्ष लगभग ५०००० टन सीमेंट का प्रयोग शौचालय बनाने में ही हो रहा था। भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए यहां स्वाभाविक तौर पर अधिक सीमेंट की खपत होगी। ऐसे में सीमेंट उद्योग इस अभियान में सहायता कर सकता है और शौचालय बनाने के लिए बेहतर प्रौद्योगिकी, विपणन और ब्रांड विकास की सुविधाएं उपलब्ध करा सकता है। सरकार कुछ ऐसा ही सहयोग सिरेमिक, सैनिटरीवेयर आदि बनाने वाले उद्योगों से भी ले सकती है।

देश में अभिनव प्रयोग

आर्थिक विकास के साथ कचरा तो बढ़ना ही है, लेकिन यदि इसका निस्तारण सही तरीके से हो सके तो समस्या पर काबू भी पाया जा सकता है और कचरा बीनने वालों के जीवन स्तर को बेहतर भी बनाया जा सकता है। पुणे इस मामले में विलक्षण है क्योंकि देश के बाकी प्रमुख शहरों की तरह यह कचरा निस्तारण के लिए नगर पालिका अथवा निजी क्षेत्र पर निर्भर नहीं है। पुणे में यह काम एक ही समुदाय को दे दिया गया। पुणे में कचरा बीनने वालों में ९० प्रतिशत महिलाएं हैं। कचरा बीनने वालों का नया संगठन 'कागद कच पत्र कघटाकारी पंचायत' १९९३ में गठित हुआ, जिसने उन्हें पुलिस, नगर निगम के अधिकारियों से और गंदगी के बीच काम करने से छुटकारा दिलाने की योजना बनाई। संगठन ने स्वच्छ (सॉलिड वेस्ट कलेक्शन ऐंड हैंडलिंग) नाम से परियोजना शुरू की, जिससे आज ९००० कचरा बीनने वाले जुड़े हैं। देश में कचरा बीनने वालों का यह इकलौता सहकारी संगठन है। पुणे नगर निगम के साथ करार करने के बाद अब यह शहर में तकरीबन ४ लाख घरों से रोजाना कचरा उठाता है और हरेक घर से १० से ३० रुपये मासिक लेता है। हरी साड़ी में दस्ताने और बूट पहनी महिलाओं में संक्रमण का डर भी नहीं रह गया। अब वे औसतन चार घंटे रोज काम करती हैं और अधिक

धन कमाती हैं। इसके अलावा उन्हें गंदगी में भी नहीं जाना पड़ता। कम देर तक काम करने के कारण इन महिलाओं को परिवार के साथ अधिक समय बिताने को मिल रहा है और वे बाकी समय में दूसरा रोजगार भी अपना पा रही हैं। इसके अलावा स्वच्छ इन्हें बेहतर रोजगार के लिए कंपोस्ट खाद बनाने और बायो-मीथेन संयंत्र चलाने का प्रशिक्षण भी दे रहा है।

पूर्वोत्तर भारत में भी वहां के निवासियों ने अपने दम पर ही स्वच्छता के अभाव से निजात पाई है। उदाहरण के लिए मेघालय में २००९ तक असुरक्षित शौचालय की समस्या बहुत ज्यादा थी, जिसकी वजह से वहां गंदगी पसरी रहती थी और वहां के निवासी बहुत जल्दी रोगों की चपेट में आ जाते थे लेकिन २००९ के बाद से ही मेघालय सरकार ने वाटर ऐंड सैनिटेशन प्रोग्राम (डब्ल्यूएसपी) के साथ मिलकर सामुदायिक और मांग आधारित परियोजना चलाई, जिसके तहत सामुदायिक सभाओं में स्वच्छता के महत्व को समझाया गया और इसे रोजमर्रा की आदतों में शामिल करने का प्रयास किया गया। इसके चकित करने वाले परिणाम सामने आए। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक २००४-०६ के बीच मेघालय में शौचालय नहीं के बराबर थे, लेकिन दिसंबर २०१३ तक इनका आंकड़ा ७१ प्रतिशत तक पहुंच गया, जिसमें स्थानीय निवासियों की जागरूकता और समर्पण का खासा योगदान रहा। शौचालयों पर जोर दिया गया। २०१२-१३ में मेघालय के १२३१ गांवों में से ७६८ पूरी तरह स्वच्छ या निर्मल घोषित कर दिए गए थे और इस मामले में यह राज्य देश में पहले स्थान पर रहा था।

बात आधी आबादी की

विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संगठनों की रिपोर्ट बताती हैं कि महिलाओं की गरिमा के लिहाज से शौचालय बेहद महत्वपूर्ण हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के साथ अपराधों की आधी से अधिक घटनाएं उसी समय होती हैं, जब वे नित्यकर्म से निवृत्त होने के लिए घर से दूर निकलती हैं। जनगणना के हालिया आंकड़ों के मुताबिक ६३ करोड़ से अधिक भारतीय खुले में शौच जाते हैं क्योंकि उन्हें व्यावहारिक शौचालय नहीं मिलते। रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ कंपेशनेट इकनॉमिक्स (राइस) के इसी वर्ष जून में आए सर्वेक्षण के मुताबिक जिन भारतीय घरों में शौचालय की सुविधा है, उनमें भी ४० प्रतिशत घरों का कम से कम एक सदस्य खुले में शौच जाता है। इसके पीछे समस्या यह है कि आदतें बदलने का प्रयास नहीं किया गया। बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की रिपोर्ट भी कहती है कि स्वच्छता की आदत विकसित करना महत्वपूर्ण है, जिसकी ओर सरकार समुचित ध्यान नहीं देती। लेकिन यदि बेहद किफायती स्तर पर स्वच्छता की सभी सुविधाएं सामुदायिक सहयोग के साथ उपलब्ध कराई जाएंगी तो इस प्रकार की आदतें बदलना और सामाजिक-आर्थिक स्तर बेहतर करना मुश्किल नहीं होगा। ❍

संदर्भः

विश्व बैंक की वाटर ऐंड सैनिटेशन रिपोर्ट २०१२
यूनिसेफ की वेबसाइट
दि टेलीग्राफ - ८ फरवरी, २०१४
वॉश प्लस की वेबसाइट
बिल ऐंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की वेबसाइट
केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की वेबसाइट
स्क्वाट सर्वे - रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर कंपेशनेट इकनॉमिक्स

महात्मा का सपना, मोदी का मिशन – आइए, हम सभी स्वच्छ भारत बनाएं

● अरुण तिवारी

एक थाने के बाहर झाड़ू लगाता देश के प्रधानमंत्री, रेलवे स्टेशन की सफाई करता रेलमंत्री, सफाई के लिए अपने पैतृक गांव को गोद लेती जलसंसाधन मंत्रीय नाला साफ करता विपक्षी पार्टी का एक प्रमुख, सड़कों पर झाड़ू उठाए खड़े मुंबइया सितारे और 'न गंदगी करुंगा और न करने दूंगा' कहकर शपथ लेते ३१ लाख केन्द्रीय कर्मचारी। दिखावटी हों, तो भी कितने दुर्लभ दृश्य थे ये! 'नायक' एक फिल्म ही तो थी, किंतु एक दिन के मुख्यमंत्री ने खलनायक को छोड़कर, किस देशभक्त के दिल पर छाप न छोड़ी होगी।

सफाई की छूत-अछूत

दुर्भाग्यपूर्ण है कि 'स्वच्छ भारत' का आगाज करने के उपक्रम में हमने भाजपा नेता, अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी कर्मचारियों व आम आदमी के अलावा सिर्फ आम आदमी पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं को ही शामिल देखा। दूसरी पार्टियों के लोगों को अपने से यह सवाल अवश्य पूछना चाहिए कि यह राजनीति हो, तो भी क्या यह नई तरह की राजनीति नहीं है? महात्मा गांधी ने भी तो शक्ति और सत्ता की जगह स्वराज और सत्याग्रह जैसे नए शब्द देकर नए तरह की राजनीति पैदा करने की कोशिश की थी।

क्या इस राजनीति से गुरेज किए जाने की जरूरत है? राजीव शुक्ला ने इस अभियान को अच्छी पहल कहा। किंतु क्या गांधी को अपना बताने वाली कांग्रेस पार्टी को गांधी के सपने के लिए हाथ में झाड़ू थामने से गुरेज करने की जरूरत थी? मोदी की छूत से महात्मा के सपने को अछूत माना लेना, क्या स्वयं महात्मा गांधी को अच्छा लगता? आइये, अपने दिमाग के जालों को साफ करें, जवाब मिल जाएगा।

मोहन का सपना, मोदी का मिशन

१२ वर्षीय मोहनदास सोचता था कि उनका पाखाना साफ करने ऊका क्यों आता है? वह और घर वाले खुद अपना पाखाना साफ क्यों नहीं करते? किंतु क्या आज १३३ बरस बाद भी हम यह सोच पाए? जातीय भेदभाव और छुआछूत के उस युग में भी मोहनदास, ऊका के साथ खेलकर खुश होता था। हमारी अन्य जातियां, आज भी वाल्मीकि समाज के बच्चों के साथ अपने बच्चों को खेलता देखकर खुश नहीं होती।

विदेश से लौटने के बाद बैरिस्टर गांधी ने भारत में अपना पहला सार्वजनिक भाषण बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में दिया था। मौका था, दीक्षांत समारोह काय बोलना था शिक्षा पर, गांधी को बाबा विश्वनाथ मंदिर और गलियों की गंदगी ने इतना व्यथित किया कि वह बोले गंदगी पर। उन्होंने कहा कि यदि अभी कोई अजनबी आ जाए, तो वह हिंदुओं के बारे में क्या सोचेगा?

यह बात १०० बरस पुरानी है। आज १०० बरस बाद भी हिंदू समाज अपनी तीर्थनगरियों के बारे में वैसा नहीं सोच पाए। कितने ही गांधीवादी व दलित नेता, गर्वनर से लेकर मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री तक हुए, स्वच्छता को प्रतिष्ठित करने का ऐसा व्यापक हौसला क्या किसी ने दिखाया? मायावती ने सफाई कर्मी की नौकरी को बाकि दूसरी जातियों के लिए खोलकर छुआछूत की खाई को पाटने का एक प्रयोग किया था। वह आगे न बढ़ सका। ऐसे में यदि आज उसी बाबा विश्वनाथ की नगरी से चुने एक जनप्रतिनिधि ने बतौर प्रधानमंत्री वैसा सोचने का हौसला दिखाया है, तो क्या बुरा किया?

बापू को राष्ट्रपिता मानने वाले भारतीय जन-जन को यदि मोदी यह बता सकें कि राष्ट्रपिता की जन्मतिथि, सिर्फ छुट्टी मनाने, भाषण सुनने या सुनाने के लिए नहीं होतीय यह अपने निजी-सार्वजनिक जीवन में शुचिता का आत्मप्रयोग करने के लिए भी होती हैय तो क्या यह आह्वान नकार देने लायक है? भारत की सड़कों, शौचालयों व अन्य सार्वजनिक स्थानों में कायम गंदगी और गंदी बातें, राष्ट्रीय शर्म का विषय हैं। इस बाबत् की किसी भी सकारात्मक पहल का स्वागत होना चाहिए।

प्रतीकों से आगे जाएगी पहल

यह पहल संकेतों व प्रतीकों तक सीमित नहीं रहेगी, कई घोषणाओं ने इसका भी इजहार कर दिया है। सफाई के लिए ६२,००० करोड़ रुपए का बजटय बजट जुटाने के लिए स्वच्छ भारत कोष की स्थापना, कारपोरेट जगत से सामाजिक जिम्मेदारी के तहत् धन देने की अपील और गंदगी फैलाने वालों के लिए जुर्माना। २०१९ तक ११ करोड़, ११ लाख शौचालय का लक्ष्य और २,४७,००० ग्राम पंचायतों में प्रत्येक को सालाना २० लाख रुपए की राशि।

शहरी विकास मंत्रालय ने एक लाख शौचालयों की घोषणा की है। मंत्रालय ने निजी शौचालय निर्माण में चार हजार, सामुदायिक में ४० प्रतिशत और ठोस कचरा प्रबंधन में २० प्रतिशत अंशदान का ऐलान किया है। कोयला एवं बिजली मंत्रालय ने एक लाख शौचालय निर्माण की जिम्मेदारी ली है। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों में ओएनजीसी ने २५०० सरकारी स्कूल, गेल ने १०२१, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम ने ९०० शौचालय निर्माण का वायदा किया है।

शौचालय, स्वच्छता और सावधानी

हालांकि, यदि यह कार्यक्रम सिर्फ शौचालयों तक सीमित रहा, तो 'स्वच्छ भारत' की सफलता भी सीमित ही रह जाएगी। संप्रग सरकार की 'निर्मल ग्राम योजना' भी शौचालयों तक सिमटकर रह गई थी। ऐसा न हो। शौचालय, निस्संदेह हमारी सांस्थानिक, सार्वजनिक, शहरी और शहरीकृत ग्रामीण आबादी की एक जरूरी जरूरत हैं।

इस जरूरत की पूर्ति भी निस्संदेह, एक बड़ी चुनौती है। पैसा जुटाकर हम इस चुनौती से तो निबट सकते हैं। किंतु सिर्फ पैसे और मशीनों के बूते सभी शौचालयों से निकलने वाले मल को निपटा नहीं सकते। इसी बिना पर ग्रामीण इलाकों में घर-घर शौचालयों के सपने पर सवाल खड़े किए जाते रहे हैं। गांधी जी ने गांवों में गंदगी का निपटारा करने के लिए कभी शौचालयों

की मांग की होय मेरे संज्ञान में नहीं है। वह खुले शौच को मिट्टी डालकर ढक देने के पक्ष में थे।

भारत में हर रोज १.६० लाख मीट्रिक टन कचरा हर रोज पैदा होता है। यदि हम इसका ठीक से निष्पादन करें, तो इतने कचरे से २७ हजार करोड़ रुपये की खाद पैदा की जा सकती है ४५ लाख एकड़ बंजर को उपजाऊ खेतों में बदला जा सकता है। ५० लाख टन अतिरिक्त अनाज पैदा करने की क्षमता हासिल की जा सकती है और दो लाख सिलेंडरों हेतु अतिरिक्त गैस हासिल की जा सकती है। उचित नियोजन और सभी के संकल्प से यह किया जा सकता है। सरकार ने स्वच्छता को मिशन बनाया है, हम इसे आदत बनाएं। 'स्वच्छ भारत' का यह मिशन यदि यह संभव कर सका, तो सफाई की सौगात दूर तक जाएगी। वाल्मीकि बस्ती के परिसर में प्रधानमंत्री जी ने जिस शौचालय का फीता काटकर लोकार्पण किया था, वह भारतीय रक्षा अनुसंधान संगठन द्वारा ईजाद खास जैविक तकनीक पर आधारित है। ऐसी कई तकनीकें साधक हो सकती हैं। यदि हमने भिन्न भू-सांस्कृतिक विविधता की अनुकूल तकनीकों को नहीं अपनाया अथवा हर शौचालय को सीवेज पाइपलाइन आधारित बनाने की गलती की, तो सवाल फिर उठेंगे। न निपट पाने वाला मल, हमारे भूजल और नदियों को और मलीन करेगा, साथ ही हमें भी।

ठोस कचरे की चुनौती

इस चुनौती में हमें औद्योगिक कचरे के अलावा अन्य ठोस कचरा निपटान को भी शामिल कर लेना चाहिए। इलेक्ट्रॉनिक्स कचरा निपटान में बदहाली को लेकर राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने अभी हाल ही में मंत्रालय को नोटिस भेजा है। यदि हम चाहते हैं कि कचरा न्यूनतम उत्पन्न हो, तो हम 'यूज एण्ड थ्रो' प्रवृति को हतोत्साहित करने वाले टिकाऊ उत्पाद नियोजित करें। कचरे का निष्पादन उसके स्रोत पर ही करने की पहल जरूरी है। कचरे का सर्वश्रेष्ठ निष्पादन विशेषज्ञता, सुनियोजन, कड़े कानून, क्रियान्वयन में बेहद सख्त अनुशासन तथा प्रेरणा की भी मांग करता है। यह किए बगैर 'स्वच्छ भारत' की कल्पना मुश्किल है।

रोजी छूटे न

पश्चिम के देशों से शहरों की सफाई का शास्त्र सीखने की बात गांधी जी ने भी की थी। किंतु यदि स्वच्छ भारत का यह मिशन, अमेरिका के साथ मिलकर भारत के ५०० शहरों में संयुक्त रूप से 'वाश' कार्यक्रम के वादे में सिर्फ निजी कपंनियों के फायदे की पूर्ति के लिए शुरू किया गया साबित हुआ, तो तारीफ करने से पहले बकौल गांधी, जांच साध्य के साधन की शुचिता की करनी जरूरी होगी। सफाई कर्मचारियों की रोजी पहले ही ठेके के ठेले पर लुढ़क रही है। विदेशी कंपनियां और मशीनें आईं तो उनकी रोजी को ठेंगा देखने की नौबत न आए, यह सुनिश्चित करना होगा।

आज भारत, दुनिया से बेहद खतरनाक किस्म का बेशुमार कचरा खरीदने वाला देश है। भारत, दुनिया के कचरा फेंकने वाले उद्योगों को अपने यहां न्योता देकर बुलाकर खुश होने वाला देश है। भारत अब एक ऐसा देश भी हो गया है, जो पहले अपनी हवा, पानी और भूमि

को मलीन करने में यकीन रखता है और फिर मलीनता को साफ करने के लिए कर्जदार होने में। आइये, हम इस ककहरा को उलट दें। हम यह सुनिश्चित करें कि 'स्वच्छ भारत' का यह मिशन भारत के २० करोड़ बेरोजगारों को रोजगार व स्वरोजगार देने वाला साबित हो।

सफाई बने सौगात

एक आकलन के मुताबिक, भारत में हर रोज १.६० लाख मीट्रिक टन कचरा हर रोज पैदा होता है। यदि हम इसका ठीक से निष्पादन करें, तो इतने कचरे से २७ हजार करोड़ रुपये की खाद पैदा की जा सकती है ४५ लाख एकड़ बंजर को उपजाऊ खेतों में बदला जा सकता है। ५० लाख टन अतिरिक्त अनाज पैदा करने की क्षमता हासिल की जा सकती है और दो लाख सिलेंडरों हेतु अतिरिक्त गैस हासिल की जा सकती है।

उचित नियोजन और सभी के संकल्प से यह किया जा सकता है। सरकार ने स्वच्छता को मिशन बनाया है, हम इसे आदत बनाएं। 'स्वच्छ भारत' का यह मिशन यदि यह संभव कर सका, तो सफाई की सौगात दूर तक जाएगी। भारत की कृषि, आर्थिकी, रोजगार और सामाजिक दर्शन में कई स्वावलंबी परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

स्वच्छ भारत अभियान व्यापक मलीनता को व्यापक शुचिता की दरकार

हालांकि यदि हम सफाई, स्वच्छता, शुचिता जैसे आग्रहों को सामने रख गांधी द्वारा किए आत्मप्रयोग और संपूर्ण सपने को सामने रखेंगे, तो हमें बात मलीन राजनीति, मलीन अर्थव्यवस्था, मलीन तंत्र, मलीन नदियां, हवाए भूमि, भ्रष्टाचार, बीमार अस्पताल, बलात्कार, पोर्न और नशे से लेकर हमारी मलीन मानसिकता के कई पहलुओं की करनी होगी, किंतु गांधी ने सफाई करने वालों के बारे में हमारे समाज की जिस मलीनता को दूर करने का संदेशा दिया था, उसका उल्लेख किए बगैर यह लेख अधूरा ही रहेगा।

'स्वच्छ भारत' हमें मानसिक रूप से इतना स्वच्छ बना सके कि हम निजी और सार्वजनिक ही नहीं, बल्कि धर्म और जाति की मलीन खाइयों को पाट सकें। इससे महात्मा जी का सपना भी पूरा हो जाएगा और मोदी का मिशन भी।

http://hindi-indiawaterportal-org/node/48200

स्वच्छ भारत अभियान की प्रासंगिकता

• सुशील कुमार सिंह

जिस प्रकार इतिहास में कई प्रकार के विलक्षण कार्यों को जनसमर्थन के चलते प्राप्त किया गया, उसी प्रकार स्वच्छ भारत अभियान में जनमानस के जुड़ने से सफलता की गारंटी संभव है। इतिहास के पन्नों में स्वच्छता को लेकर कितनी गहराई है, इसको गांधी युग में देखा जा सकता है। शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि शासकों ने स्वच्छता की इतनी गंभीर चिंता की हो। ब्रिटिश काल में बेहतरीन भारत के निर्माण का दौर कुछ कालों में देखा जा सकता है। जब १९२८ में राजा राम मोहन राय ने ब्रह्मसमाज को स्थापित किया तो भारतीय समाज में फैली कुरीतियों को स्वच्छ करने का बीड़ा उठाया। सती प्रथा का अंत, ठगी प्रथा का अंत और बाल विवाह पर रोक इनके मुख्य मिशन थे। साथ ही इसाईयत का जो प्रभाव भारत को चपेट में ले रहा था उसकी रोकथाम भी शामिल थी। दरअसल ब्रिटिश काल का भारत अंग्रेजों की गिरत में था। शायद यही कारण था कि अनेक भारतीय संगठनों ने सामाजिक बुराई हेतु जो चिंता दिखाई, वह कहीं न कहीं स्वच्छता के इतिहास को गहरा कर रही थी। बीसवीं शताब्दी में जब गांधी का आगमन हुआ तो स्वच्छता कोई साधारण कार्य नहीं रहा। गांधी जी क्रांति और आंदोलन के अगुवा थे। सत्य और अहिंसा के हथियार से समाज में फैली छल-कपट, झूठ-फरेब तथा समाज को हिंसा से स्वच्छ बनाने का प्रयास किया। इतना ही नहीं गांधी ने मन के मैल को भी धोने की विचारधारा दी। एक अच्छे विचार और एक बुरे विचार का भी अंतर बताया। मन पर काबू रखनाए मन का रख-रखाव करना और कुरीतियों के प्रति मनः स्थिति बनाना यह गांधी विचारधारा से निकले अचूक दर्शन हैं।

जब १९२२ के दौर में असहयोग आंदोलन खत्म हो गया था, गांधी को जेल हो गयी हालांकि १९२४ में जब बीमारी के चलते उनकी रिहाई हुई तो एक नए गांधी का भी अवतार हुआ था। इस काल में गांधी अतिरिक्त स्वच्छता, भेद-भाव को समाप्त करना और समस्त भारतवासियों में एकता हेतु सारे कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया। गौरतलब यह भी है कि गांधी ने क्रमिक तौर से जहां एक ओर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ाया वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीयता से भी लोगों को ओत-प्रोत किया। जिसमें ऊंच-नीच के अंतर को समाप्त करने को लेकर स्वच्छता अभियान एक अहम हिस्सा था। दरअसल गांधी स्वच्छता को बड़ी गंभीर नजरों से देखते थे। इसका असल भाव यह भी था कि स्वच्छ भारत, स्वच्छ लोग और स्वच्छ मन न केवल आंदोलन में सहायक होंगे, बल्कि भारत की स्वतंत्रता हेतु यह एक सफल हथियार भी होगा। यह कहना सही है कि गांधी का स्वच्छता अभियान राष्ट्रीय एकाकीपन के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।

स्वतंत्रता के पश्चात देश काल और परिस्थितियों के चलते अलग-अलग अभियानों को

समटते हुए चलता रहा। इसी क्रम में ग्रामीण और नगरी स्वच्छता का संदर्भ भी भारत में देखा जा सकता है। मोदी सरकार से पहले यूपीए सरकार ने निर्मल योजना के तहत स्वच्छता अभियान को मूर्तरूप देने का प्रयास किया था। नरेंद्र मोदी के चार माह के कार्यकाल में कई चमकती हुई चीजें सामने देखने को मिलती हैं। गंगा स्वच्छता अभियान गंगा स्वच्छता को लेकर उनकी चिंता पहले ही देखी जा चुकी है।

२ अक्टूबर को गांधी जयंती के दिन प्रधानमंत्री ने पूरे देश में स्वच्छता हेतु एक झाड़ू अभियान चलाया साथ ही पूरा एक सप्ताह स्वच्छता अभियान के नाम सर्मिपत रहा। मोदी का स्वच्छ भारत अभियान राजपथ से शुरू हुआ और पांच वर्ष तक चलेगा। उन्होंने प्रतिकात्मक तौर पर स्वयं झाड़ू लगाया और महात्मा गांधी को एक बड़ी श्रद्धांजलि अर्पित की। इतना ही नहीं स्वच्छता को लेकर लोगों को शपथ दिलाई। सप्ताह में दो घंटे और वर्ष में सौ घंटे सफाई हेतु श्रम देने का आह्वान किया। इसके अलावा यह कहा जाना कि मैं न गंदगी करूंगा और न किसी को करने दूंगा। यह कथन मोदी के स्वच्छ भारत के प्रति गंभीर चिंता का प्रकटीकरण करता है।

गांधी के स्वच्छता अभियान में मन की स्वच्छता एक प्रमुख हिस्सा था। क्या मोदी सरकार के स्वच्छ भारत अभियान में जनमानस के अंदर सफाई को लेकर सकारात्मक भाव पनप पायेंगे। सच यह भी है कि भारतीयों को साफ-सफाई एवं स्वच्छता जैसे विचार थोड़े बौने प्रतीत होते हैं, यह किसी और का काम समझते हैं जबकि गांधी ने कहा है कि हर प्रत्येक व्यक्ति में धोबी, साफ-सफाई करने वाला, भोजन पकाने वाला आदि निहित होते हैं। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद कई विषयगत चर्चायें हुई हैं, परंतु स्वच्छ भारत अभियान जनमानस का अभियान है। जिसको लेकर १९३० के दशक में गांधी ने लोगों को जोड़ने का काम किया था। स्वच्छ भारत के उस समय के अभियान ने भारतीय एकजुटता प्रदान करके देश को स्वतंत्रता दिला दी थी। जबकि इस काल का भारत बहुत कुछ अलग-थलग रूप लिए हुए है। अब के स्वच्छ भारत अभियान का आशय का पहलू भिन्न है। इससे ताजगी मिलेगी, स्वास्थ्य मिलेगा, पर्यटन विकास होगा, आर्थिक मुनाफा होंगे। इतना ही नहीं मेडिकल खर्च में कमी आएगी परंतु यह अभियान बिना पूरी जागरूकता के संभव नहीं है। सौ टके का सवाल यह भी है कि स्वच्छ भारत अभियान के चलते जो कचरे जमा होंगे उनका निस्तारण कहां होगा, इस अभियान की पूरी सफलता तभी संभव हो सकती है जब निस्तारण केंद्र भी बढ़ाये जायें।

सरकार की नीतियों में निस्तारण को लेकर अभी खास स्थान नहीं बनता दिखता। इसके अलावा स्वच्छता को लेकर जो अतिरिक्त पूंजी खर्च होगी उसके बंदोबस्त पर भी अभी पूरी बात सामने नहीं आई। बड़ा सवाल यह भी है कि जो मानव संसाधन की कमी है अभी उसको लेकर कोई आंकड़ा भी प्रदर्शित नहीं हो पाया।

अब मुद्दा यह है कि क्या स्वच्छ भारत अभियान केवल सरकार की जिम्मेदारी हैघ् इस यक्ष प्रश्न का उत्तर किसी के मन में क्यों पनपेगाघ् अब फिर गांधी विचारधारा की चर्चा करनी पड़ेगी।

गांधी के स्वच्छता अभियान में मन की स्वच्छता एक प्रमुख हिस्सा था। क्या मोदी सरकार के स्वच्छ भारत अभियान में जनमानस के अंदर सफाई को लेकर सकारात्मक भाव पनप पायेंगे। सच यह भी है कि भारतीयों को साफ-सफाई एवं स्वच्छता जैसे विचार थोड़े बौने प्रतीत होते हैं, यह किसी और का काम समझते हैं जबकि गांधी ने कहा है कि हर प्रत्येक व्यक्ति में धोबी, साफ-सफाई करने वालाए भोजन पकाने वाला आदि निहित होते हैं। क्या आज का जनमानस इस अवधारणा को और गांधी द्वारा सुझायी गयी बातों को अमल में ला पायेगा यदि ऐसा हुआ तो स्वच्छ भारत अभियान अतिरिक्त ताकत के साथ सफल होगा अन्यथा मोदी सरकार की यह एक मात्र पहल ही बनकर रह जाएगी। जिस प्रकार इतिहास में कई प्रकार के विलक्षण कार्यों को जनसमर्थन के चलते प्राप्त किया गया, उसी प्रकार स्वच्छ भारत अभियान में जनमानस के जुड़ने से सफलता की गारंटी संभव है। इसके लिए जरूरी उपाय जैसे जागरूकता अभियान, सफाई से होने वाले लाभों, इसके आर्थिक पहलू आदि को आम जन तक पहुंचाना होगा। इसे केवल गांधी जयंती का एक महोत्सव न समझा जाए बल्कि प्रत्येक दिन का एक काज बनाया जाये। पूरे दिनचर्या में कुछ समय गैर-उत्पादक भी हो सकते हैंए उस समय को साफ-सफाई से जोड़ा जा सकता है।

इसके अलावा छुट्टी के दिन या दिन के किसी हिस्से को स्वच्छता से जोड़कर इस अभियान को जीवित रखा जा सकता है। इन्हीं सब प्रयासों से स्वच्छ भारत अभियान निरंतरता को प्राप्त कर सकेगा और प्रासंगिक भी बना रहेगा।

०५ अक्तूबर २०१४

http://hindi-indiawaterportal-org/node/48183

A Note by the Mother, Sri Aurobindo Ashram, Puducherry

Village Improvement Programme

1. Hygiene, sanitation, cleanliness.
2. Health, physical education, games.
3. Technical training for all local works (farming, crafts, etc)

- Choose a man in each village who can teach privately the children of the village reading, writing, writing, easy calculation.
- For grown-ups easy teaching-each one must give some of his time for collective work.

(Source: SAICE-Bulletin-Nov, 2002 p.37 (SAICE-Sri Aurobindo International Centre of Education)

स्वच्छ भारत अभियान की चुनौती

● डॉ. उदित राज

स्वच्छ भारत अभियान न केवल भौतिक गंदगी की सफाई करेगा, बल्कि लोगों की मानसिकता पर भी इसका असर पड़ेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २०१९ तक भारत को स्वच्छ बनाने का लक्ष्य रखा है। यह एक कठिन लक्ष्य है, लेकिन असंभव नहीं। हमें भौतिक संसाधन जुटाने के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर भी प्रयास करने होंगे। तभी जाकर स्वच्छ भारत का लक्ष्य पूरा हो सकेगा। दुनिया के दूसरे देशों में जब कभी हम जाते हैं तो इतनी ग्लानि होती है कि काश हमारा भी देश ऐसा ही साफ-सुथरा होता। इस लक्ष्य के मद्देनजर सरकार द्वारा अपनाये गये तौर-तरीके भी बहुत प्रभावशाली हैं, जैसे कि सभी प्रमुख लोगों अथवा हस्तियों को नौ प्रभावशाली लोगों की टीम में खड़ा करने के लिये प्रोत्साहित करने की योजना। ये वे लोग हैं जो स्वच्छ भारत देखने की लालसा रखते हैं, लेकिन इसके लिये शायद ही कभी ठोस पहल करते हैं। अब इन लोगों का भी इस काम में शामिल होना एक बड़ी पहल है जिससे वास्तविक धरातल पर बड़ा असर पड़ेगा।

स्वच्छ भारत अभियान को लेकर तमाम तरह की बातें की जा रही हैं और इस पर भी बात हो रही है कि इसे वास्तव में किसने शुरू किया और कब शुरू हुआ। मेरे विचार से इन बातों पर चर्चा करना बुद्धिमानी नहीं होगी, लेकिन सच्चाई यही है कि इस कार्य को एक विशेष जाति के लोग पुश्तैनी कार्य के रूप में कर रहे ह। अन्य जातियों ने सोचा कि गंदगी करना उनका कार्य है, क्योंकि साफ करने वाली जाति समाज में आज भी मौजूद है अथवा बनी हुई है। यह प्रवृत्ति शहरों में ज्यादा देखने को मिलती है। यह सही है कि गांवों में गंदगी को साफ कराने का बहुत इंतजार नहीं होता और प्रायरू लोग यह काम खुद करना पसंद करते हैं, बावजूद इसके स्वच्छता वहां भी नहीं है। मोदी सरकार की घोषणा से देश की कोई भी गली नहीं बची होगी जहां इसकी चर्चा नहीं हो रही हो। यह बात अलग है कि वहां सफाई अभियान को लेकर अभी भी कोई विशेष प्रयास नजर नहीं आ रहा है। फिर भी एक बात तो साफ है कि इससे निश्चित तौर पर लोगों के मन-मस्तिष्क में बदलाव आ रहा है और इसी के साथ यह नारा देना भी सर्वथा उचित होगा कि क्लीन मेंटेलिटी एंड क्लीन लोकेलिटी। इसका आशय यह है कि मानसिकता में परिवर्तन लाओ और गंदगी को दूर भगाओ इससे जो सांस्कृतिक परिवर्तन अथवा बदलाव होगा वह चिरस्थायी होगा और धीरे-धीरे हमारी जीवनशैली का अभिन्न अंग बन जायेगा। जिस तरह से हम अपने शरीर और घर की साफ-सफाई करते हैं उसी तरह से अन्य जगहों की सफाई रखना भी हमारी मानसिकता बन जायेगी।

इस अभियान को सफल बनाने के लिये जागरूकता फैलाने का कार्य करना होगा। इस संबंध में देश के विभिन्न शहरों और स्थानों पर चर्चाओं का भी आयोजन किया जाना चाहिये। अधिकारी, नेता, व्यक्ति, व्यावसायिक प्रतिष्ठान अथवा बाकी अन्य लोगों और संस्थाओं को भी

स्वच्छता के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। कर्मचारियों-अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिये उनके सीआर अथवा कांफिडेंशियल रिपोर्ट में इसके लिये अलग से अंक देने का प्रावधान होना चाहिये। किसी भी चुनाव में भाग लेने वाले जनप्रतिनिधि के लिये यह अनिवार्य होना चाहिये कि उसने इस क्षेत्र में कार्य किया हो और उसके आस-पास का वातावरण स्वच्छ हो। इसके अलावा सरकार द्वारा जो भी सहायता दी जाये चाहे कोटा परमिट हो अथवा राशन कार्ड आदि के लिये स्वच्छता की शर्त को अनिवार्य रूप से जोड़ा जाना चाहिये। यह भी देखें कि हम जिस तरह से अपने सगे-संबंधियों के तमाम हितों की देखभाल करना अपना कर्तव्य समझते हैं, उसी तरह यह भी देखें कि वे लोग स्वच्छता पर ध्यान दे रहे हैं अथवा नहीं। यदि ऐसा कुछ नहीं हो रहा है तो हम इसके लिये उन्हें प्रोत्साहित करें और इसके महत्व के बारे में बतायें।

भारत को स्वच्छता से इतने लाभ होंगे कि इनकी गिनती करना मुश्किल होगा। इस समय भारत के आर्थिक विकास के लिये जो बात सबसे अधिक जरूरी है, वह यह कि विदेशी निवेश को आकर्षित किया जाये, लेकिन इसके लिये स्वच्छता जरूरी है। विदेशी भारत की गंदगी से बहुत ही कतराते हैं और भले ही मुंह पर न बोलें, लेकिन पीठ पीछे इसकी चर्चा अवश्य करते हैं। प्रधानमंत्री ने २ अक्टूबर को कहा कि यदि भारत स्वच्छ होता है तो डब्ल्यूएचओ के अनुसार प्रति व्यक्ति वर्ष में साढ़े छह हजार रुपये की बचत कर सकेगा, क्योंकि स्वच्छता के कारण बीमारियों पर होने वाला खर्च कम हो जायेगा। सभी को वित्तीय रूप से इसका कुछ न कुछ लाभ अवश्य मिलेगा। भारत का गौरवपूर्ण इतिहास है और इसकी संस्कृति काफी पुरानी है। इसे देखने-समझने के लिये बड़ी तादाद में विदेशी पर्यटक भारत आना चाहते हैं, यहां लेकिन गंदगी की वजह से वे यहां आने से कतराते हैं। सिंगापुर, थाइलैंड जैसे देशों की अर्थव्यवस्था उनके पर्यटन की वजह से चल रही हैं, लेकिन हमारे यहां दिन-प्रतिदिन पर्यटक कम होते जा रहे हैं। प्रधानमंत्री इस कार्यक्रम से श्रम की महत्ता पर भी जोर दे रहे हैं और जो जबानखर्ची लंबे अर्से से बनी हुई थी, उसे वह धरातल पर उतारने का काम कर रहे हैं।

सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों द्वारा लोगों में यह भावना जरूर पैदा की जानी चाहिये और जागरूकता लाई जानी चाहिये कि सफाई बेहद महत्वपूर्ण काम है। अभी तक लोगों की अवधारणा यही थी कि सफाई न करना सम्मान का प्रतीक है, लेकिन अब विचार का यह पहिया उल्टा घूम जाना चाहिये। कोई भी व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो अगर वह किसी तरह की गंदगी करता है तो उसको समाज में नीचा दर्जा मिलना चाहिये। इसके लिये प्रोत्साहन के साथ सामाजिक प्रताड़ना भी जरूरी है। जहां पर साफ-सफाई नहीं है, वहां विकास इत्यादि से भी हाथ खींचने जैसे प्रावधान हों ताकि लोग स्वच्छता की दिशा में सक्रिय रहें। इसके लिये प्रोत्साहन एवं प्रताड़ना के अनगिनत तरीके हैं। हमें संकल्प लेना चाहिये कि हर हाल में इस अभियान को कामयाब बनाकर ही दम लेंगे।

Extracts from Mahatma Gandhi's Speeches & Articles on Cleanliness

Banaras Hindu University Speech February 4, 1916

I want to think audibly this evening. I do not want to make a speech and if you find me this evening speaking without reserve, pray, consider that you are only sharing the thoughts of a man who allows himself to think audibly, and if you think that I seem to transgress the limits that courtesy imposes upon me, pardon me for the liberty I may be taking. I visited the Vishwanath temple last evening, and ad I was walking through those lanes, these were the thoughts that touched me. If a stranger dropped from above on to this great temple, and he had to consider what we as Hindus were, would he not be justified in condemning us? Is not this great temple a reflection of our own character? I speak feelingly, as a Hindu. Is it right that the lanes of our sacred temple should be as dirty as they are? The houses round about are built anyhow. The lanes are tortuous and narrow. If even our temples are not models of roominess and cleanliness, what can our self-government be? Shall our temples be abodes of holiness, cleanliness and peace as soon as the English have retired from India, either of their own pleasure or by compulsion, bag and baggage?

I entirely agree with the President of the Congress that before we think of self-government, we shall have to do the necessary plodding. In every city there are two divisions, the cantonment and the city proper. The city mostly is a stinking den. But we are a people unused to city life. But if we want city life, we cannot reproduce the easy-going hamlet life. It is not comforting to think that people walk about the streets of Indian Bombay under the perpetual fear of dwellers in the storeyed building spitting upon them. I do a great deal of railway traveling. I observe the difficulty of third-class passengers. But the railway administration is by no means to blame for all their hard lot. We do not know the elementary laws of cleanliness. We spit anywhere on the carriage floor, irrespective of the thoughts that it is often used as sleeping space. We do not trouble ourselves as to how we use it; the result is indescribable filth in the compartment. The so-called better class passengers over we their less fortunate brethern. Among them I have seen the student world also; sometimes they behave no better. They can speak English and they have worn Norfolk jackets and, therefore, claim the right to force their way in and command seating accommodation.

Mahatma, pp. 179-84, Edn. 1960.

This speech is from selected works of Mahatma Gandhi Volume-Six

The Voice of Truth Part-I some Famous Speech page 3 to 13

Mere Sapno ka Bharat

VILLAGE SANITATION

Divorce between intelligence and labour has resulted in criminal negligence of the villages. And so, instead of having graceful hamlets dotting the land, we have dungheaps. The approach to many villages is not a refreshing experience. Often on would like to shut one's eyes and stuff one's nose; such is the surrounding dirt and offending smell. A sense of national or social sanitation is not a virtue among us. We may take a kind of a bath, but we do not mind dirtying the well or the tank or the river by whose side or in which we perform ablutions. I regard this defect as a great vice which is resp onsible for the disgraceful state of our village and the sacred banks of the sacred rivers and for the diseases that spring from insanitation. The things to attend to in the villages are cleaning tanks and wells and keeping them clean, getting rid of dung-heaps. If the workers will begin the work themselves, **working like paid bhangis from day to day** and always letting the villagers know that they are expected to join them so as ultimately to do the whole work themselves, they may be sure that they will find that the villagers will sooner or later be co-operative. Lanes and streets have to be cleansed of all the rubbish, which should be classified. There are portions which can be turned into manure, portions which have simply to be buried and portions which can be directly turned into wealth

Village tanks are promiscuously used for bathing, washing clothes, and drinking and cooking purposes. Many village tanks are also used by cattle. Buffaloes are often to be seen wallowing in them. The wonder is that, in spite of this sinful misuse of village tanks, villages have not been destroyed by epidemics. It is the universal medical evidence that this neglect to ensure purity of the water supply of villagers is responsible for many of the diseases suffered by the villagers

Harijan, 8-2-1935

An ideal Indian village will be so constructed as to lend itself to perfect sanitation. It will have cottages with sufficient light and ventilation built of a material obtainable within a radius of five miles of it. The cottages will have courtyards enabling householders to plant vegetables for domestic use and to

house their cattle. The village lanes and streets will be free of all avoidable dust it will have wells according to its needs and accessible to all. It will have houses of worship for all, also a common meeting place, a village common for grazing its cattle, a co-operative dairy, primary and secondary schools in which industrial education will be the central fact, and it will have Panchayats for settling disputes. It will produce its own grains, vegetables and fruits, and it's owre Khadi. This is roughly my idea of a model village. In the The very first problem the village workers will solve is its sanitation. It is the most neglected of all the problems that baffle workers and that undermine physical wellbeing and breed disease.

Harijan, 9-1-1937

VILLAGE HEALTH

I hold that where the rules of personal, domestic and public sanitation are strictly observed and due care is taken in the matter of diet and exercise, there should be no occasion for illness or disease. Where there is absolute purity, inner and outer, illness becomes impossible. If the village people could but understand this, they would not need doctors, hakims or vaidyas.

Harijan, 26-5-1946

We are said to be a nation of daily bathers. That we are, to be sure, but we are none the better for it. For we bathe with unclean water, we foul our tanks and rivers with filth and use that water for drinking and bath…and We will not learn the elementary principles of sanitation and hygiene. We have not yet devised the most economical method of disposal of our evacuations and we turn our open healthy spaces into breeding grounds of disease. I implore you t throw off your inertia, to bestir yourselves to study these elementary facts and live more rational lives and learn how to turn waste into wealth. I have told you simple truths which we would soon realize and act up to if we threw off the inertia of ages. But we have shunned body-labour to the detriment of our brains, and thus rest content with the irrational ways of diet and living. Let us pull ourselves together and resolve to make our bodies and brains more active. (From a summary of Gandhiji's address at a public gathering at Indore.)

Harijan, 11-5-1935

Put all your knowledge, learning and scholarship in one scale and truth and purity in the other and the latter will be far outweigh to other. The miasma of moral impurity has today spread among our school-going children and like a hidden epidemic is working havoc among them. I therefore appeal to you, boys and girls, to keep your mind and bodies pure. All your scholarship, all your study of the scriptures will be in vain if you fail to translate their teachings into your daily life. I know that some of the teachers too do not lead pure and clean lives. To them I say that even if they impart all the knowledge in the world to their students but inculcate not truth and purity among them, they will have betrayed them and instead of raising them set them on the downward road to perdition. Knowledge with-out character is a power for evil only, as seen in the instances of so many 'talented thieves' and 'gentlemen rascals' in the world. Young

India, 21-2-1929

THE NATIONS HEALTH, HYGIENE AND DIET

It is established beyond doubt that ignorance and neglect of the laws of health and hygiene are responsible for the majority of disease to which mankind is heir. The very high death rate among us is no doubt due largely to our gnawing poverty, but it could be mitigated if the people were properly educated about their health and hygiene. Mens sana in corpore sano is perhaps the first law for humanity. A healthy mind in a healthy body is a self-evident truth. There is an inevitable connection between mind and body. If we were in possession of healthy minds, we would shed all violence and, naturally obeying the laws of health, we would have healthy bodies without an effort. The fundamental laws of health and hygiene are simple and easily learnt. The difficulty is about their observance. Here are some: Think the purest thoughts and banish all idle and impure thoughts. Breathe the freshest air day and night. Establish a balance between bodily labour and mental work. Stand erect, sit erect, and be neat and clean in every one of your acts, and let these be an expression of your inner condition. Eat to live for service of fellow-men. Do not live for indulging yourselves. Hence your food must be just enough to keep your mind and body in good order. Man becomes what he eats. Your water, food and air must be clean, and you will not be satisfied with mere personal cleanliness, but you will infect your surroundings with the same three-fold cleanliness that you will desire for yourselves.

Constructive Programme, pp.18-9

URBAN SANITATION

The one thing which we can and must learn from the West is the science of municipal sanitation. The peoples of the West have evolved a science of corporate sanitation and hygiene from which we have much to learn. We must modify western methods of sanitation to suit our requirements.

Young India, 26-12-'24

Cleanliness is next to godliness.' We can no more gain God's blessing with an unclean body than with an unclean mind. A clean body cannot reside in an unclean city.

Young India, 19-11-'25

No municipality can cope with insanitation and congestion by the simple process of taxation and paid services. This vital reform is possible only by wholesale and voluntary co-operation of the people both rich and poor.

Young India, 26-11-'25

I consider myself a lover of municipal life. I think that it is a rare privilege for a person to find himself in the position of a municipal councilor but let me not down for you as a man with some experience in public life that one indispensable condition of that privilege is that the municipal councilors dare not approach their office from interested or selfish motives. They must approach their sacred task in a spirit of service. There is a significant expression for municipal corporation in my mother tongue – Kachrapatti, which means literally scavenging department, and a municipality is nothing if it is not a premier scavenging department embracing all spheres of public and social life of a city and if it is not saturated with the spirit scavenging, scavenging not merely by way of looking after the physical sanitation of a city, but also the internal sanitation of its citizens.

Young India, 28-3-'29

Those who enter local boards and municipalities as representatives go there not to seek honour or to indulge in mutual rivalries, but to render a service of love and that does not depend upon money. Ours is pauper country. If our municipal councilors are imbued with a real spirit of service, they will convert

themselves into unpaid sweepers, and road-makers, and take pride a in doing so. They will invite their fellow-councilor, who may not have come on the Congress ticket, to join them and if they have faith in themselves and their mission, their example will not fail to evoke response. This means that a municipal councilor has to be a whole timer. He should have no axe of his own to grind. The next step would be asked to make their contribution to municipal activities. A regular register should be maintained. Those who are too poor to make any money contribution but are able-bodied and physically fit can be asked to give their free labour.

Harijan, 18-2-'39

पौराणिक संदर्भः-

वेद और पुराणों की भारतीय जीवन और दर्शन में गहरी पैठ है। यह भारतीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता है। शिक्षा स्वास्थ्य और आहार से संबंधित बेहतर निर्देश पुराणों और वेदों में ही मिलता है। यह भले ही कथा के माध्यम से कही गयी हो लेकिन इसका वैज्ञानिक प्रमाण भी समय-समय पर सिद्ध भी होता रहा है। वैसे ही अथर्ववेद में और ब्रम्हवैर्तपुराण में स्वच्छता से संबंधित कुछ निर्देश निम्नलिखित है।

अथर्ववेद

सुरभिमय जीवन

कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानः प्रतरं नवीयः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेनाध स्याम सुरभयो गृहेशु।।

(अ.१८।३।१७)

भावार्थ- मनुष्य वही सुखी रह सकता है जिसका गृहस्थ जीवन सुखी हो, और सुखी जीवन के लिए स्वास्थ्य और ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान के माध्यम से ही मनुष्य अपनी आत्मा को शुद्ध करता है और आत्मा की शुद्धि में ही मनुष्य और संसार की समृद्धि निहित है।

१. प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान के द्वारा अपनी आत्मा को शुद्ध करना चाहिए।

२. उत्तम और दीर्घ जीवन प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

३. जीवन के पाप-ताप, दोष और मलों को धो डालना चाहिए।

४. सुसन्तान का निर्माण करना चाहिए।

५. धनैश्वर्यों का उपार्जन करना चाहिए।

६. प्रशंसनीय गुणों से युक्त होकर घर में अपने सदाचार की दिव्य-गन्ध फैलानी चाहिए।

Here are the highlights of Shri Narendra Modi's speech: On Clean India

1. We gained freedom under leadership of Gandhi ji but his dream of clean India is still unfulfilled.
2. Swachh Bharat Campaign logo is not just a logo, through it Gandhi ji is watching us, asking as when will we clean India.
3. Be it Mandir, Masjid, Gurudwara or any place, we must take efforts to clean our surroundings, we must change.
4. If Indian's can reach Mars at a cheap cost can we not clean our neighbourhoods? I know people will criticize me in the next few days, if it leads to a clean India, then prepared for it.
5. I also thank the media for supporting this campaign, we all need to come together for it.
6. This campaign is above politics, this is purely due to our love for the nation.
7. This campaign is for 1.2 billion people, I will say this 1.2 billion times. Govt and ministers can't do it alone.
8. Have started a Social Media campaign, I have invited 9 people to post pics of them cleaning, who will invite a further 9 people and so on.
9. Is cleaning only responsibility of the Karamcharis? Do citizens have no role in this? We have to change this mindset.
10. I have invited Baba Ramdev, Salman Khan, Shashi Tharoor, Priyanka Chopra, Bharat Ratna Sachin Tendulkar, Kamal Hassan.
11. The enthusiasm I am seeing on my social media pages for this campaign

is heartening. I have also invited Anil Ambani, the entire cast of Tarak Mehta ka Ooltah Chashmah and also Goa Governor Mridula Sinha.

12. Constructing more toilets is extremely important, feel pained when our women go in the open to relieve themselves. OneIndia News

Economic Times Global Business Summit

imilarly, when we do Swachh Bharat, it has multiple impacts. It is not just a fad or a slogan. It changes people's mindsets. It changes our lifestyle. Swachhata becomes a habit. Waste management generates economic activity. It can create lakhs of Swachhata entrepreneurs. The nation gets identified with cleanliness. And of course, it has a huge impact on health. After all, diarrhoea and other diseases cannot be defeated without Swachhata!

The mantra of independence was सत्याग्रह (Satyagraha). महात्मा गांधी ने..... पूरी आजादी में केंद्र बिंदु शब्द रहा था, सत्याग्रह And the warriors were सत्या–ग्रही (Satyagrahis). The mantra of New Age India must be स्वच्छ–ग्रह (Swachhagraha). Like Satyagraha, Swachhagraha; And the warriors will be स्वच्छता–ग्रही (Swachhagrahis). Like Satyagrahis, Swachhagrahis.

Sectoral

The mantra of independence was Satyagraha. And the warriors were Satyagrahis. The mantra of New Age India must be Swachhagrah. And the warriors will beSwachhagrahis.People must understand the Clean Ganga program, as an economic activity also. The Gangetic plains account for 40% of our population. They have over one hundred towns, and thousands of villages.I intend to launch a massive National Program for PDS Computerisation.Railway stations can become growth points for the nearby villages.We will link farmers to global markets. We will give the world the Taste of India.

Source:- PMO

Annual Target Under Swachh Bharat mission

RFD For the Swachh Bharat Mission

Annual Targets under Swachh Bharat Mission

S. No	Components	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	Overall Target
a)	**Individual Household Toilets**	25,00,000	35,00,000	35,00,000	**9,00,000**	1.04 crore units
b)	**Community and Public Toilets**	1,00,000	2,04,000	2,04,000	-	5.08 lakh units
c)	**Solid Waste Management** i) Achievement of 100% collection & transportation (No. of Cities)	1,000	1,500	1,500	41	To achieve Scientific Solid Waste Management in 4041 cities/ towns for 30.6 crore persons
	ii) Achievement of 100% processing & disposal (No. of Cities)	100	1,000	1,000	1,941	

Swachchha Bharat Mission: Public Service Level Status Report

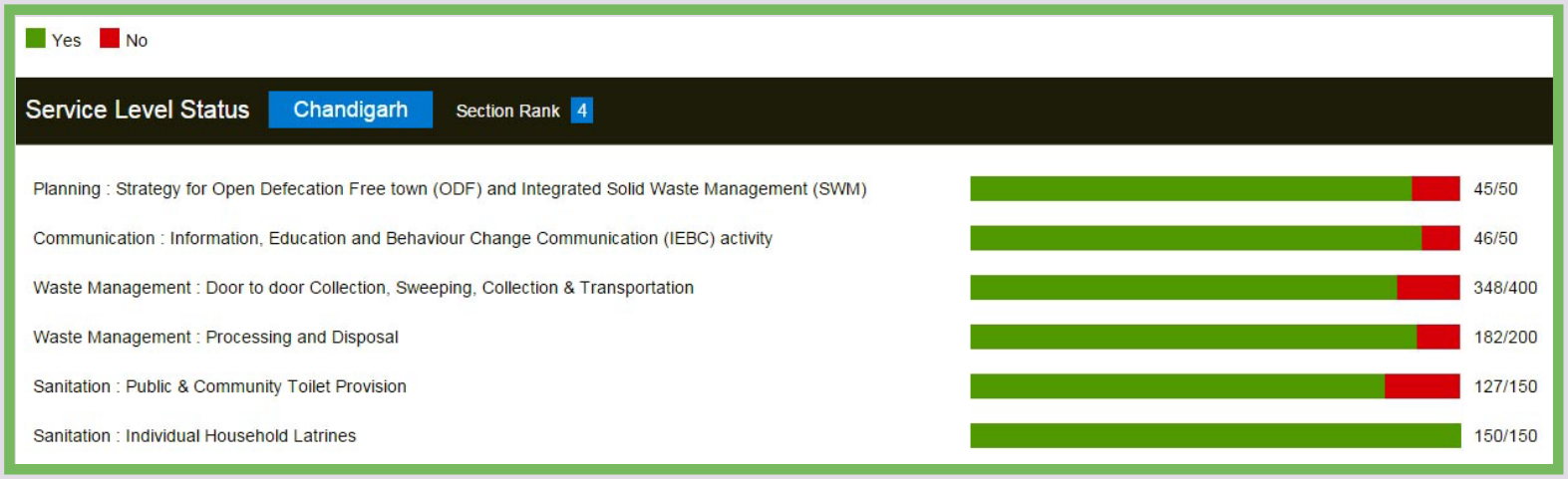

State-wise Budget Allotment

2015-2016 (*Amount in Rupees Crore)

S.No	State Name	Installment	SWM Amount	IHHL & CTBs	IEC Amount	CB & A&OE	Supplementary	Total
1	Andaman & Nicobar Islands	1st	0.0648	0.0551	0.0144	0.0036		0.1379
2	Andhra Pradesh	1st		30.0000				30
3	Arunachal Pradesh	1st		1.2104				1.2104
4	Chandigarh	1st	0.9800	0.5000	0.1800	0.0400		1.7
5	Chhattisgarh	1st		16.8974				16.8974
6	Dadra & Nagar Haveli	1st				0.0300		0.03
7	Delhi	1st	58.7300	27.9700	10.3600	0.1600		97.22
8	Goa	1st		0.6440				0.644
9	Gujarat	1st		81.2726	19.5000	5.0000		105.7726
10	Haryana	1st		11.6476				11.6476
11	Himachal Pradesh	1st			0.7200	0.1800		0.9
12	Jharkhand	1st		15.1700				15.17
13	Karnataka	1st	29.1600	30.8600				60.02
14	Kerala	1st		14.9900				14.99
15	Madhya Pradesh	1st	52.9300	74.0542	7.0600	1.7600		135.8042
16	Maharashtra	1st		44.6000				44.6
17	Manipur	1st		1.6450				1.645
18	Mizoram	1st		1.0000				1
19	Mizoram	1st				0.0700		0.07
20	Nagaland	1st		1.3430				1.343
21	Orissa	1st		21.9400				21.94

2014-2015 (*Amount in Rupees Crore)

S.No	State Name	Installment	SWM Amount	IHHL & CTBs	IEC Amount	CB & A&OE	Supplementary	Total
1	Andhra Pradesh	Ist	21.02	13.76	4.17	1.05		40
2	Arunachal Pradesh	Ist	6.84	1.20	0.98	0.24		9.36
3	Assam	Ist		0.20	0.02	0.01		0.23
4	Bihar	Ist	24.66	8.14	3.94	0.98		37.72
5	Chattisgarh	Ist		26.79	3.21	0.80		30.79
6	delhi	Ist	4.38	2.26	0.84	0.05		7.53
7	Goa	Ist	1.70	1.06	0.33	0.08		3.17
8	Gujarat	Ist		35.61	4.27	1.07	16.34	57.29
9	Haryana	Ist	12.57	3.01	1.87	0.47		17.92
10	Himachal Pradesh	Ist	3.00	3.02				6.02
11	Jammu & Kashmir	Ist	10.90	1.93	1.54	0.38		14.75
12	Jharkhand	Ist	9.33	3.95	1.59	0.40		15.27
13	Karnataka	Ist		69.57	8.35	2.09		80.01
14	Kerala	Ist		16.68	2.00	0.50		19.18
15	Madhya Pradesh	Ist		16.36	1.96	0.49	2.2158	21.0258
16	Maharashtra	Ist		117.39	14.09	3.52		135
17	Manipur	Ist	9.61	0.14	1.17	0.29		11.21
18	Meghalaya	Ist	2.98	0.54	0.42	0.11		4.05
19	Mizoram	Ist	8.21	1.02	0.30	0.26		9.79
20	Nagaland	Ist	6.68	2.47	1.1	0.27		10.52
21	Odisha	Ist		1.23	0.16	0.04		1.43

State-wise status implementation of various component under Swachh Bharat Mission upto Feb-2016

State-wise Status of Implementation of Various Components under SBM upto February, 2016

S. No.	State & Cities/towns	Individual Household Toilets, Nos.			Community toilets (No. of seats)		Public toilets (No. of seats)		Total Community and Public toilets (No. of seats)		
		Application received	Work commenced	Completed	Work Commenced	Completed	Work Commenced	Completed	Work Commenced	Completed	War coll
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	
1	Andhra Pradesh	3,33,000	1,74,475	90,051	6,360	1,268	987	987	7,347	2,255	
2	Andman & Nicobar Islands	115	40	0	64	0	5	0	69	0	
3	Arunachal Pradesh	31,007	2,585	0	3,229	0	586	0	3,815	0	
4	Assam	63,100	200	0	2,000	10	2,800	28	4,800	38	
5	Bihar	92,179	80,000	5,624	240	57	32	0	272	57	
6	Chandigarh UT	13,830	13,830	13,830	2,016	642	7,036	671	9,052	1,313	
7	Chhattisgarh	2,46,000	2,28,518	85,952	7,479	1,481	2,370	2,090	9,849	3,571	
8	Daman & Diu	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
9	Dadra & Nagar Haveli	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
10	NCT of Delhi	11,117	0	0	16,901	4,656	3,008	1,120	19,909	5,776	
11	Goa	5,800	2,053	110	70	20	100	20	170	40	
12	Gujarat	4,05,212	4,05,212	4,46,319	1,930	30	4,334	1,070	6,264	1,100	
13	Haryana	90,573	37,348	7,188	2,351	961	176	90	2,527	1,051	
14	Himachal Pradesh	2,820	416	112	0	0	0	0	0	0	
15	Jammu & Kashmir	34,933	4,282	0	125	6	0	0	125	6	
16	Jharkhand	88,760	50,108	2,767	415	231	950	0	1,365	231	
17	Karnataka	3,00,061	1,45,577	8,669	7,000	340	2,160	237	9,160	577	
18	Kerala	1,000	0	0	0	0	0	0	0	0	
19	Madhya Pradesh	3,93,930	4,01,975	1,58,272	14,280	6,960	0	0	14,280	6,960	
20	Maharashtra	2,66,536	1,04,274	1,25,355	2,472	1,236	2,864	1,453	5,336	2,689	
21	Manipur	19,682	2,579	126	30	0	140	140	170	140	
22	Meghalaya	5,066	0	0	23	0	170	0	193	0	
23	Mizoram	2,000	550	300	35	18	30	18	65	36	
24	Nagaland	9,330	8,948	3,330	226	68	0	0	226	68	
25	Odisha	1,70,000	1,03,000	2,000	2,230	570	1,810	150	4,040	720	
26	Puduchery UT	6,590	6,590	2,114	100	60	100	0	200	60	
27	Punjab	1,10,125	78,855	17,480	3,000	0	2,500	20	5,500	20	
28	Rajasthan	2,43,319	1,00,430	10,990	4,615	1,290	3,475	590	8,090	1,880	
29	Sikkim	1,290	40	0	8	8	0	0	8	8	
30	Tamil Nadu	1,85,436	1,43,126	2,797	16,656	16,656	500	0	17,156	16,656	
31	Telangana	1,14,603	85,483	16,283	103	5	414	139	517	144	
32	Tripura	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
33	Uttar Pradesh	16,58,142	1,51,083	1,54,541	5,495	1,490	2,151	807	7,646	2,297	
34	Uttarakhand	25,953	21,350	1,166	1,250	153	110	10	1,360	163	
35	West Bengal	26,014	12,220	12,220	0	0	0	0	0	0	
	Total/ Average	**49,57,523**	**23,65,147**	**11,67,596**	**1,00,703**	**38,216**	**38,808**	**9,640**	**1,39,511**	**47,856**	

I Did Not Think a Swachh Bharat Was Possible. Some Tweets Changed My Mind

• Jayant Niranjan Mundhra

Several Governments came and went. They all spent loads of money on cleaning India. But, sadly, nothing positive happened. So I decided that I would not believe any of these governments or their policy announcements unless there was actual change, and I was able to witness it.

And then came in our new Minister of Railways, Mr. Suresh Prabhu. He took the task of cleaning the Indian Railways really very seriously. Here are some images of trains and railway stations posted on Twitter by people like me, who were delighted by how clean they were.

1. Chandigarh railway station:

2. Hubli railway station:

3. Mysore railway station:

(Some of the text and images are taken from http://www.thebetterindia.com/40403/indian-railways-clean-swachh-bharat/)

Shri Narendra Modi On Twitter

Narendra Modi ✔ @narendramodi
Follow

Met @sachin_rt. He talked about his contribution towards Swachh Bharat Abhiyaan. His efforts towards a Clean India are phenomenal!

2:46 PM - 16 Oct 2014

Narendra Modi ✔ @narendramodi
Follow

Gandhi ji's thoughts & beliefs remain a great inspiration for us. Let us dedicate ourselves to building the India of Gandhi ji's dreams.

Narendra Modi @narendramodi · Oct 26

I feel this video will surely inspire my young friends to join Swachh Bharat Mission

Narendra Modi @narendramodi · Oct 28

Read several thoughts on Swachh Bharat Mission, agriculture, irrigation issues, empowerment of women, Skilled India among other topics.

Narendra Modi @narendramodi · Oct 28

सूर्य को अर्घ्य देते समय जीवन में स्वच्छता, पवित्रता और प्रकृति में आस्था अपनाने के साथ-साथ हम ''स्वच्छ भारत'' का भी आज संकल्प लें।

Narendra Modi @narendramodi · Nov 2

A superb effort! Swachh Bharat Mission will receive a great impetus due to this determined effort by

Narendra Modi @narendramodi · Nov 3

I appreciate the work of @vivek_oberoi towards creating a Swachh Bharat.

S P M R F

पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका

Wisdom with valour brings glory to the nation

Dr. Syama Prasad Mookerjee Research Foundation

https://web.facebook.com/spmrfoundation

https://twitter.com/spmrfoundation